

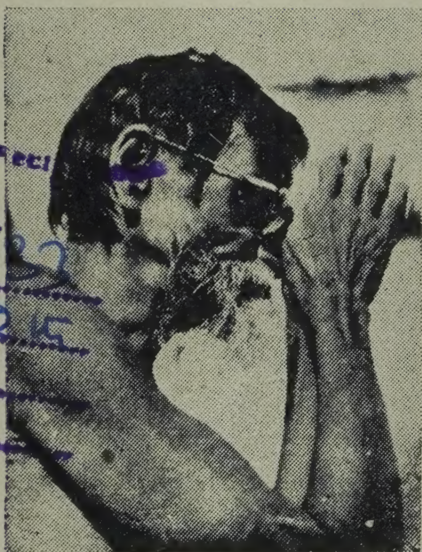
विनोबा चित्रावली

लेखक, संपादक और प्रकाशक
जीतमल लूणिया

हिन्दी साहित्य मन्दिर, अजमेर

विनोबा-चित्रावली

(संत विनोबा के जीवन संबंधी तथा भूदान-यात्रा के चित्र, उनकी संक्षिप्त जीवनी, भूदान, संपत्तिदान, शांति सेना, सर्वोदयपात्र आदि प्रवृत्तियों का विवरण, उनकी दिव्य वाणी, व अनेक उपदेश पूर्ण बातों का संग्रह)



अहिंसक क्रांति के पथ पर

●

लेखक, सम्पादक तथा प्रकाशक

जीतमल लूणिया, संचालक

हिन्दी साहित्य मंदिर, अजमेर

●

सातवीं बार
सन् १९६४

इस पुस्तक के पढ़ने से आपका जीवन उन्नत और सदाचारी बनेगा

मूल्य प्रचारार्थ १)

अपने साथियों से कहिये कि वे भी एक प्रति खरीदें

नम्र निवेदन

विनोबा युग पुरुष हैं। उनकी साधना महान् है। वे गांधीजी के निष्ठावान् अनुयायी रहे हैं। उन्हें गांधीजी का आध्यात्मिक उत्तराधिकारी कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। दीर्घकाल से वे एकान्त साधना में लीन थे। अब कुछ वर्षों से वे प्रत्यक्ष रूप से सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र में आ गये हैं और इस अल्पकाल में ही उन्होंने भारत के नगरों और गांवों में एक नवीन चेतना, एक नवीन जाग्रति उत्पन्न करदी है। सारा भारत आज उनकी ओर आशा भरी दृष्टि से देख रहा है। मेरा विचार था कि "गांधी-चित्रावली" की भांति इस पुस्तक में विनोबाजी के बाल्यकाल से अब तक के चित्र यथाक्रम दिये जाते लेकिन विनोबाजी प्रारम्भ से ही इतने एकान्तवासी रहे कि उनकी विभिन्न अवस्थाओं और कार्यों के चित्र बहुत खोजने पर भी नहीं मिलते अत: भूदानयज्ञ की यात्रा में भिन्न-भिन्न प्रसंगों पर उनके जो अनेक चित्र लिये गये हैं उन्हीं में से सर्वोत्तम चित्र इस पुस्तक में एकत्रित किये गये हैं।

चित्रों के अलावा अंत में विनोबाजी की संक्षिप्त जीवनी, भूदान, संपत्तिदान, शांतिसेना, सर्वोदय पात्र आदि उनकी अनेक प्रवृत्तियों का विवरण तथा उनके उपदेशपूर्ण बातों का संग्रह भी इस पुस्तक में दे दिया गया है। एक तरह से गागर में सागर भर दिया है। इस एक ही पुस्तक को पढ़ लेने से आपको विनोबाजी तथा उनकी समस्त प्रवृत्तियों का संक्षेप में दर्शन हो जायगा। आगे दी हुई विषय सूची को देख लें।

यह पुस्तक लोगों को इतनी पसन्द आई है कि पांच पांच हजार के अब तक इसके छः संस्करण निकल चुके हैं। यह सातवां संस्करण है।

विनोबाजी का बाल्यकाल तथा विद्यार्थी जीवन बड़ा ही आदर्शमय, चरित्रवान तथा प्रेरणादायक रहा है। अतएव यह पुस्तक प्रत्येक विद्यार्थी के पढ़ने योग्य है। राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार तथा पंजाब की सरकारों के शिक्षा विभागों ने तथा पंचायतों ने अपनी स्वीकृत पुस्तकों की सूची में इस पुस्तक को मान्यता दी है। मेरी हार्दिक इच्छा है कि भारत के प्रत्येक परिवार में, प्रत्येक स्कूल, पुस्तकालय तथा पंचायत घरों में यह पुस्तक पहुँच जाय पर यह बात आप सबके सहयोग पर निर्भर है। प्रचार के लिए पुस्तक का मूल्य भी काफ़ी कम रखा गया है। इस पुस्तक के चित्रों में श्री गोतमजी बजाज ने अपने संग्रह में से लगभग दस बारह चित्र तथा अन्य सज्जनों ने एक एक दो दो चित्र देकर इसके संकलन में मेरी सहायता की है इसके लिए मैं उनका बड़ा आभारी हूं।

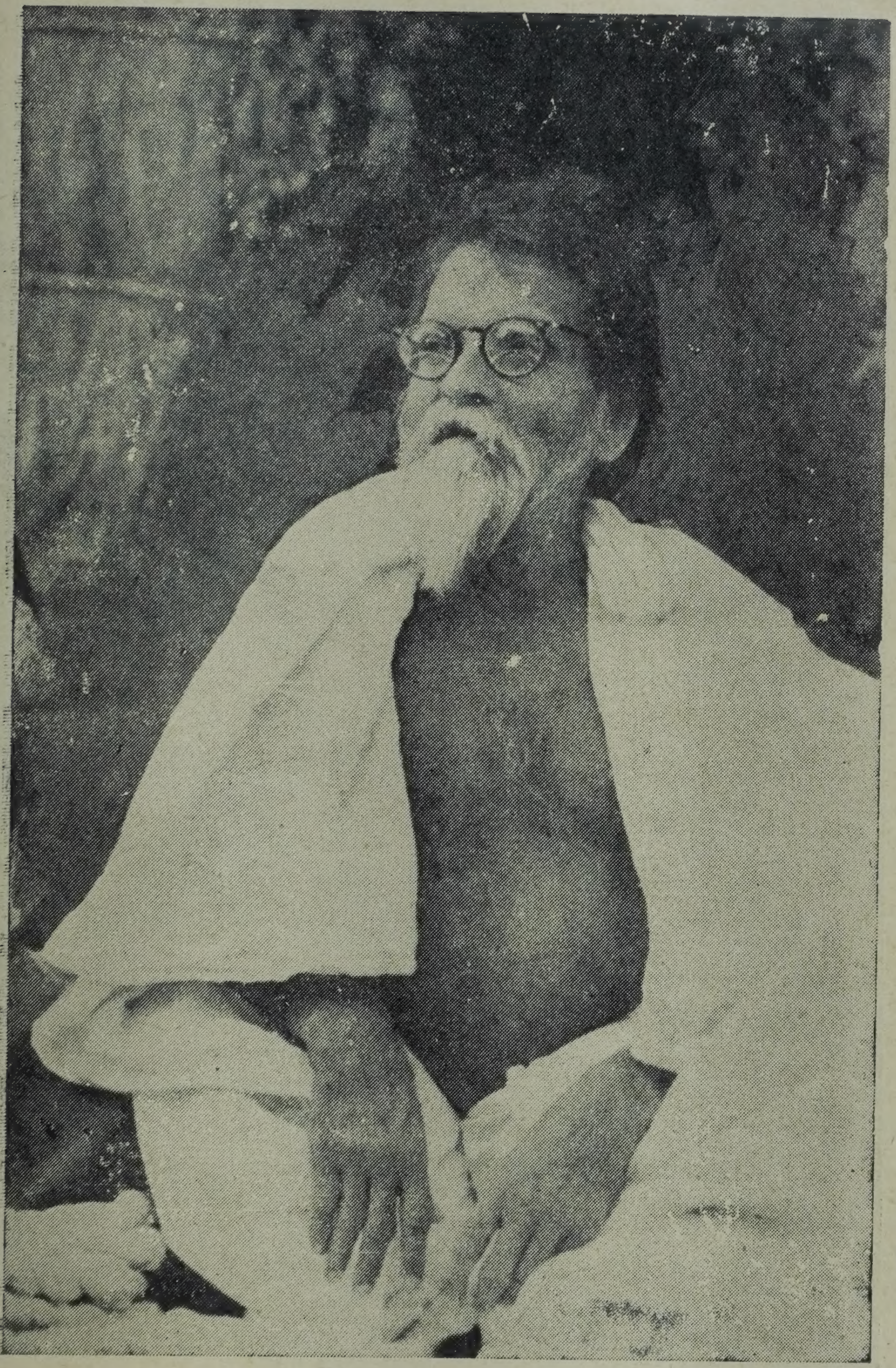
निवेदक—जीतमल लूणिया



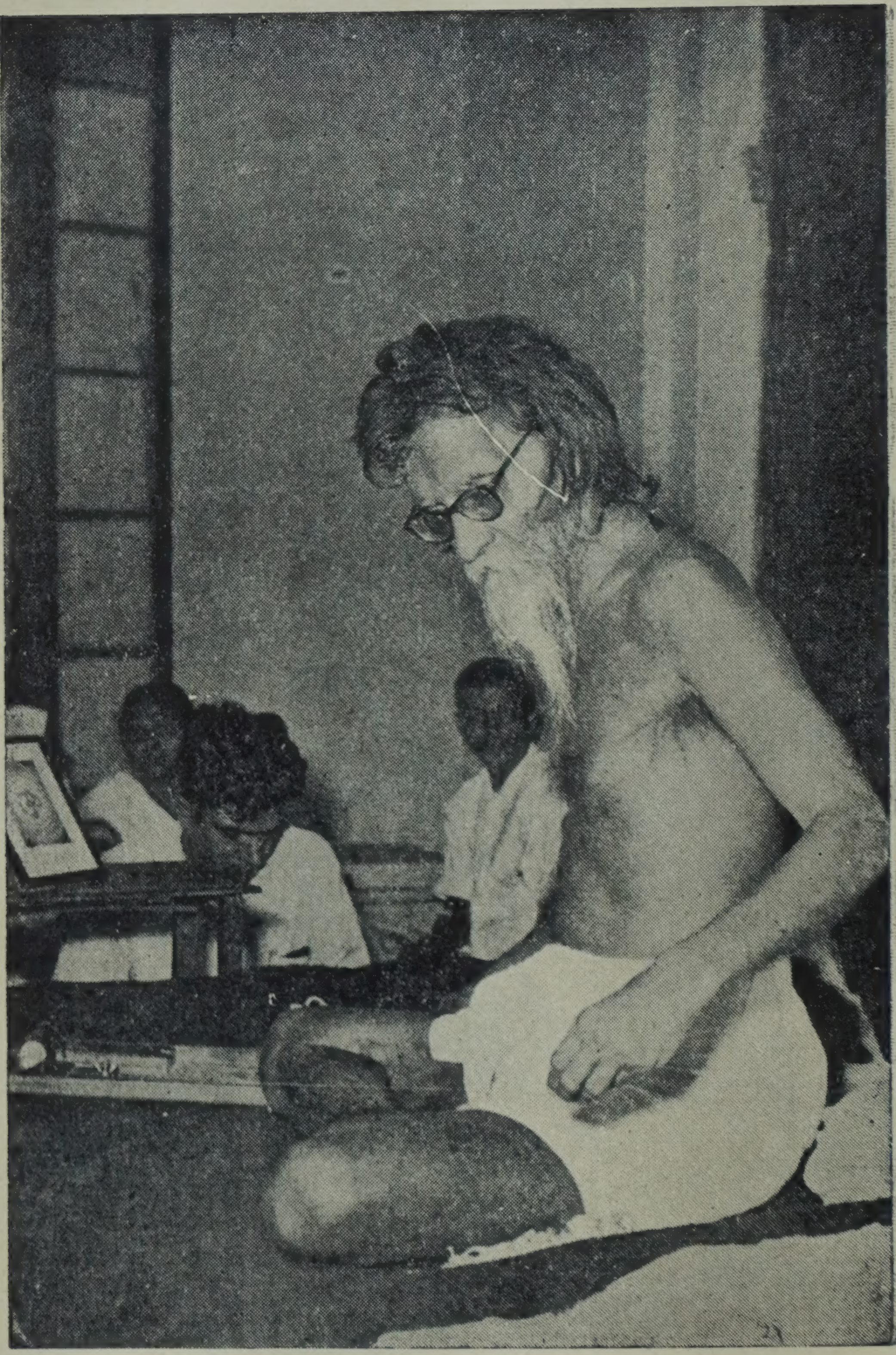
सर्वोदय का स्वरूप

सबै भूमि गोपाल की, घर घर चर्खा चले ।
सारा गांव साफ़ सुथरा, झगड़ा नहीं, व्यसन नहीं ।।
सब मिलकर एक परिवार, मुख में प्रभु का नाम, हाथ में काम

विषय सूची



[३] गांधीजी के सच्चे अनुयायी तथा आध्यात्मिक उत्तराधिकारी
ग़रीबों के अनन्य सेवक तथा भूदानयज्ञ के प्रवर्तक
संत विनोबा
(६९वें वर्ष में पदार्पण : ११ सितम्बर १९६३)



[४] कर्मयोगी

"गरीब और अमीर में एकता लाने का सामर्थ्य जितना चर्खे में है उतना और किसी में नहीं है" —विनोबा



[५] कर्मयोगी

जब भी समय मिल जाता है, तकली पर भी सूत कातते रहते हैं



[६] **विचार मग्न**

मेरा प्रयत्न है कानून की जगह पर करुणा, कर्जा की जगह पर दान, कर की जगह पर सर्वोदयपात्र और शस्त्र सेना की जगह पर शांति सेना स्थापित करना ।



[७] तेलंगाना प्रदेश की यात्रा—भूदान यज्ञ का प्रारम्भ
ता० १८-४-१९५१ को तेलंगाना प्रान्त के पोचमपल्ली ग्राम में हुआ था।



[८] तेलंगाना के पहाड़ी इलाकों में कार्यकर्ताओं के बीच में

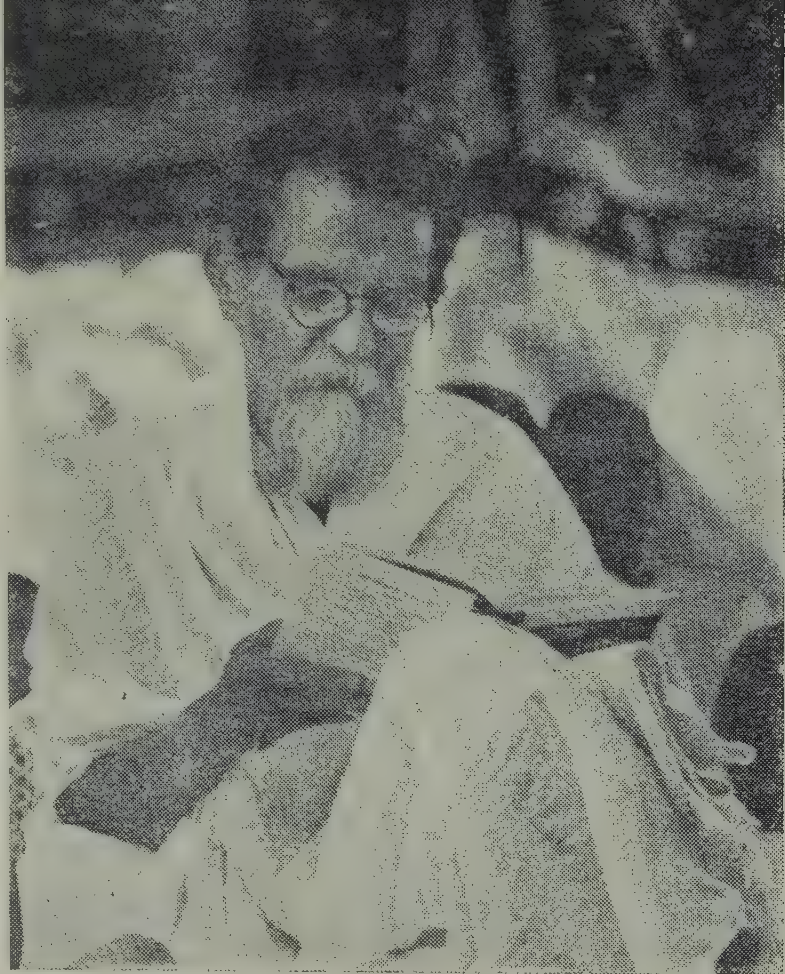


[९] अपना बोझा अपने सिर—स्वावलम्बन और शरीर-श्रम का आदर्श



[१०] दरिद्रनारायण के घर में

विनोबाजी गरीबों के घरों में जाकर उनके सुख-दुखः की बातें सुन रहे हैं





[११-१२] विनोबाजी प्रातःकाल ३ बजे उठ जाते हैं शौचादि से निवृत्त होकर लेख लिखते हैं, या कोई उत्तम पुस्तक पढ़ते हैं । कभी-कभी बाहर से आये हुए लोगों से बातचीत के लिए भी यह समय देते हैं ।



[१३] प्रात:काल ठीक चार बजे यात्रा का प्रारम्भ
सुबह की प्रार्थना चलते हुए करते जाते हैं



[१४] रास्ते में नाश्ता (जलपान)



[१५] पैर में चोट, फिर भी रुकना कैसा



[१६] चोट लग जाने से कुर्सी पर यात्रा



[१७] **फिर भी पैदल अखंड यात्रा—चलना, चलना और चलते ही जाना**
सूर्य भगवान की उपस्थिति में मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि जब तक भारत में ग्रामराज्य की स्थापना नहीं होगी तब तक मैं उसी के लिए घूमते हुए प्रयत्न जारी रखूंगा। —**विनोबा**



[१८] **बालकों के बीच में बालक**
गांव के बच्चों ने, विनोबाजी को घेर लिया है।
वे भी पैदल यात्रा में साथ दे रहे हैं



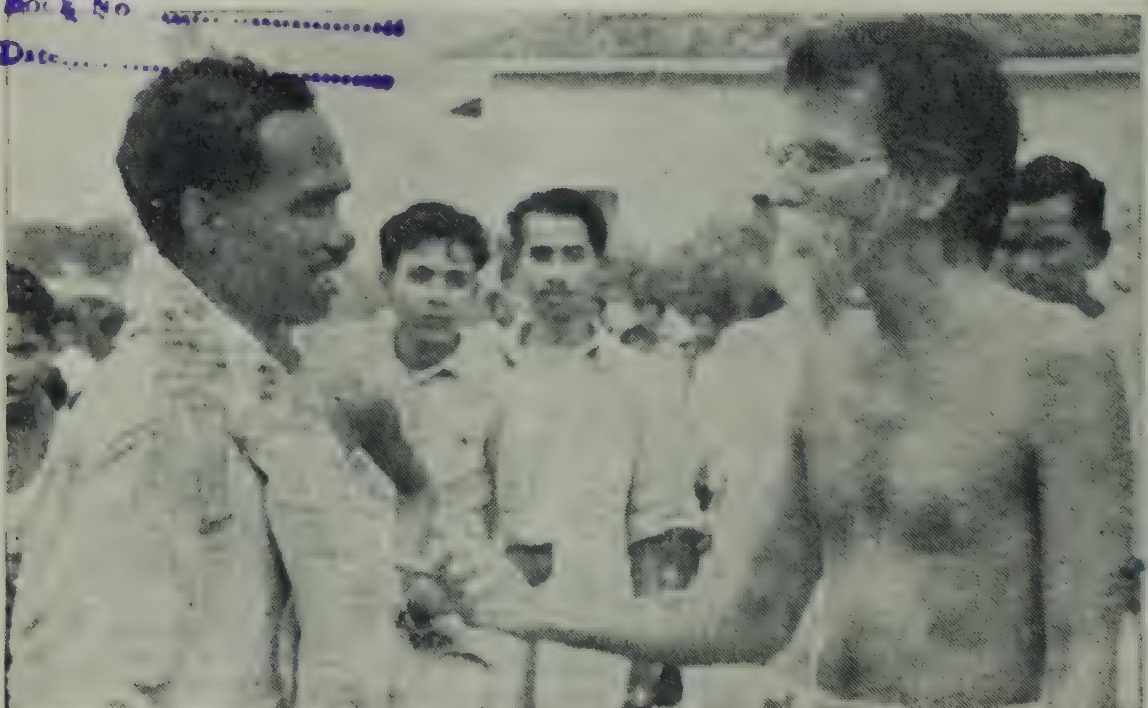
[१६]

गांव में प्रवेश

हाथ जोड़े हुए गांव के लोग विनोबाजी का स्वागत कर रहे हैं, स्त्रियां मंगल गान कर रही हैं।



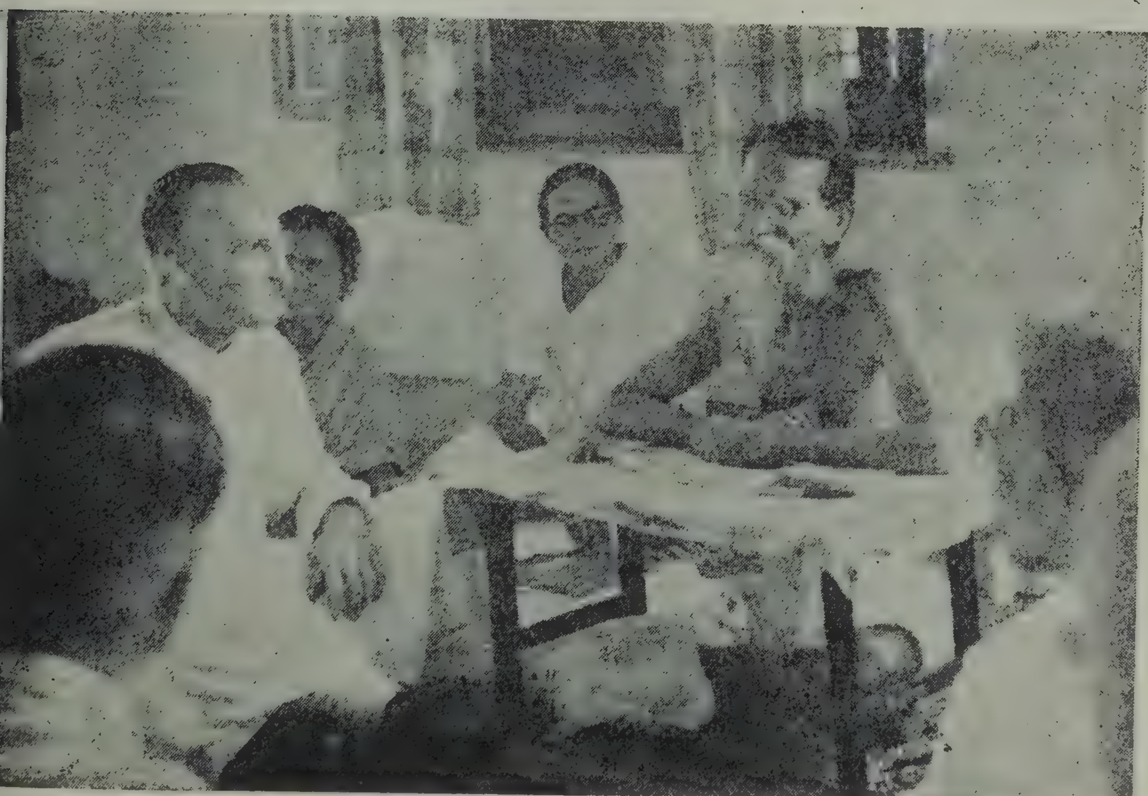
[२०] गांव में पहुंचते ही विनोबाजी का प्रवचन शुरू हो जाता है जैसे हवा, पानी और सूरज की रोशनी सबके लिए है वैसे ही भूमि भी भगवान ने सबके लिए निर्माण की है। गांव के लोग बड़ी शांति से विनोबाजी की बातें सुन रहे हैं।



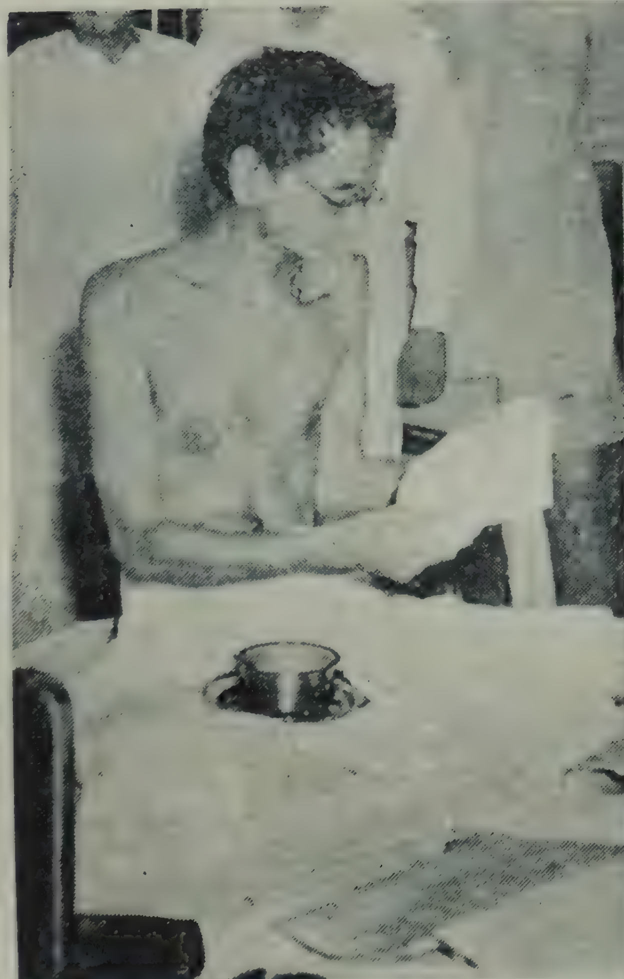
[२१] "लाओ मेरा हिस्सा—ग़रीबों के लिए भूमिदान करो" एक ज़मींदार भाई से विनोबाजी का प्रेमपूर्ण अनुरोध



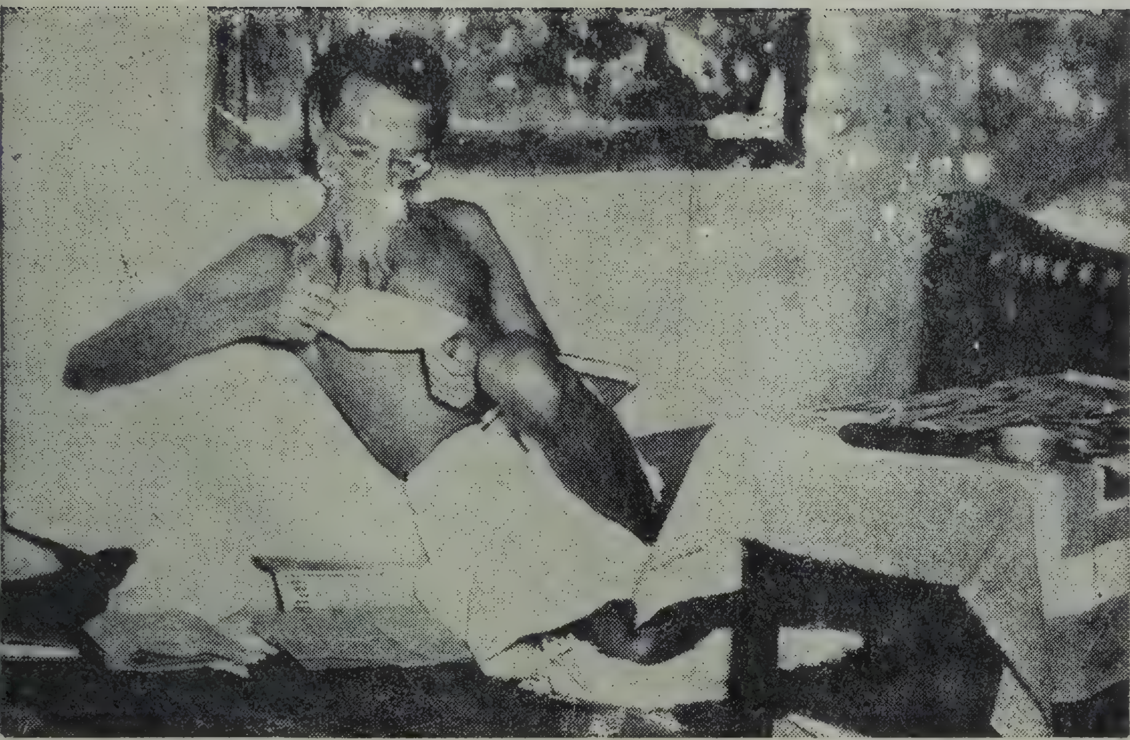
[२२] कार्यकर्त्ताओं से बातचीत



२३] पत्र प्रतिनिधियों से बातचीत करते हुए




भोजन के समय भी बीच बीच में पठन जारी है—स्वाध्याय में लीन



[२६] **दोपहर के बाद थोड़ा विश्राम**
इस समय में भी आई हुई डाक देख रहे हैं



[२७] तीसरे पहर चर्खा-यज्ञ, दैनिक कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण अंग



[२८] शरीरश्रम के प्रतिष्ठापक पृथ्वीपुत्र विनोबा
शरीरश्रम के पवित्र कार्य में सब लोगों के साथ विनोबाजी भी
गांव की बीहड़ ज़मीन को ठीक कर रहे हैं।



[२९] खोदी हुई मिट्टी टोकरी में भर कर गडढे भरने को ले जा रहे हैं।



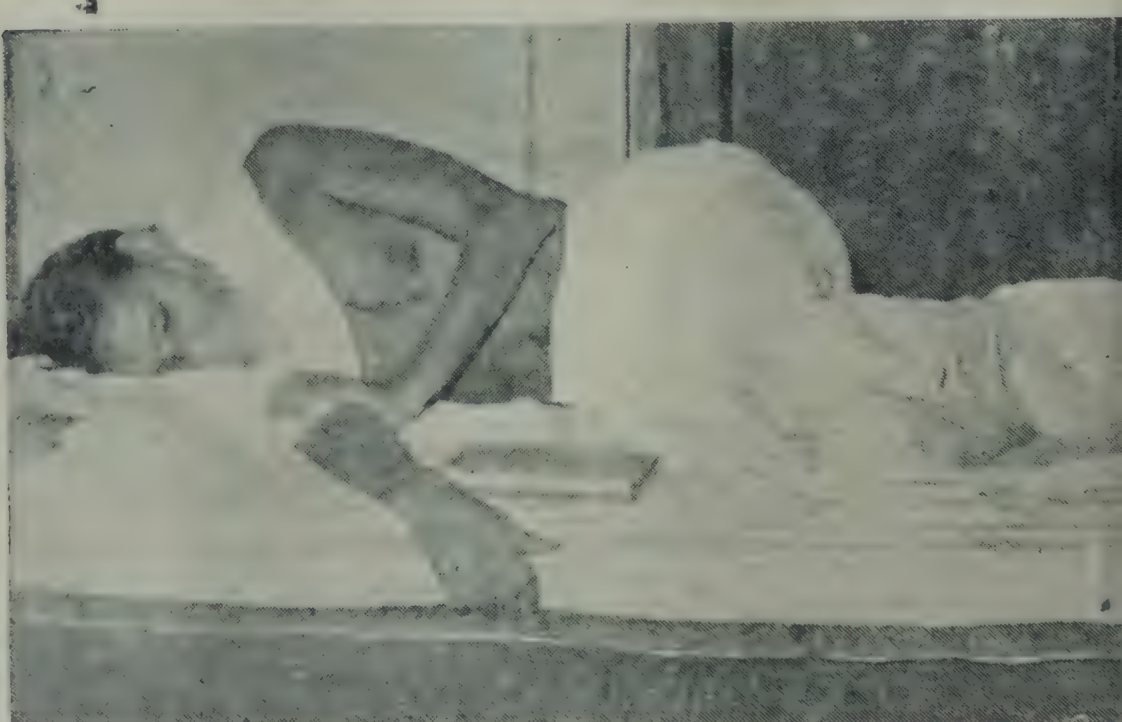
[३०] विनोबाजी रसोई घर में सब्ज़ी काटते हुए



[३१] विनोबाजी अजमेर की दरगाह शरीफ़ में हिन्दू-मुस्लिम एकता पर प्रवचन कर रहे हैं



[३१] सोने से पहले आये हुए लोगों से बातचीत तथा उनके प्रश्नों का उत्तर दे रहे है

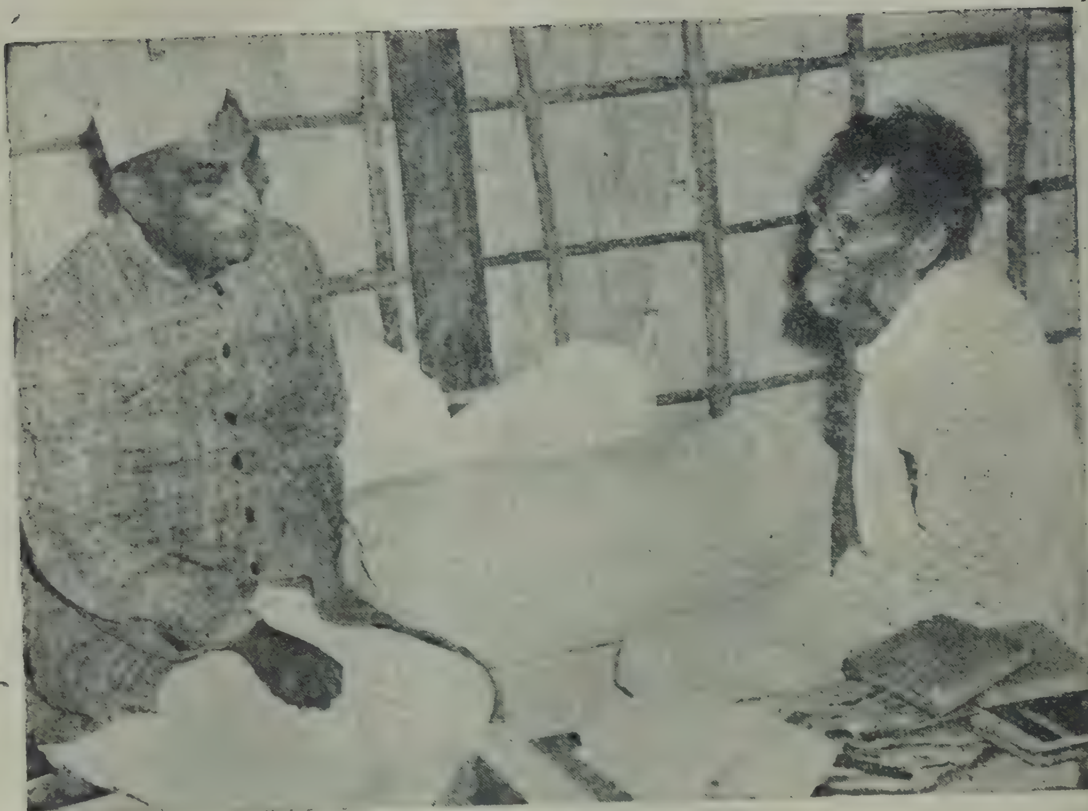


[३२] रात को प्राय: ठीक ६ बजे सोजाते हैं

पास में 'गीता' रखी हुई है, यह तो इनकी जीवन संगिनी है।



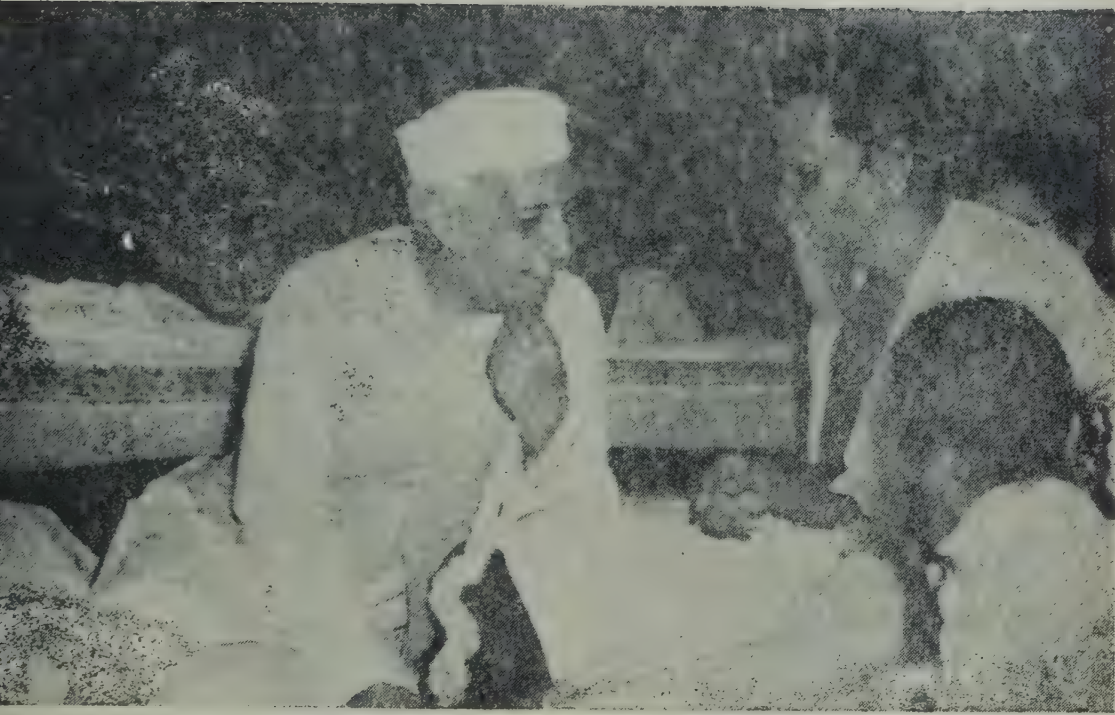
[३३] राष्ट्रपिता म० गांधी और उनके आध्यात्मिक उत्तराधिकारी विनोबा
"चि० विनोबा, तुम्हारी भक्ति और श्रद्धा आंखों में हर्ष के आंसू लाता है। तुम बड़ी सेवा के निमित्त बनोगे।" —बापू के आशीर्वाद
"इस छोटी सी उम्र में विनोबा ने जो तेजस्विता और वैराग्य प्राप्त कर लिया है उसे प्राप्त करने में मुझे कितने ही वर्ष लग गये थे।" —गांधीजी
अपने दुर्बल पात्रों से लेकिन बापू के ही मार्ग पर चलने की मेरी कोशिश है।
—विनोबा



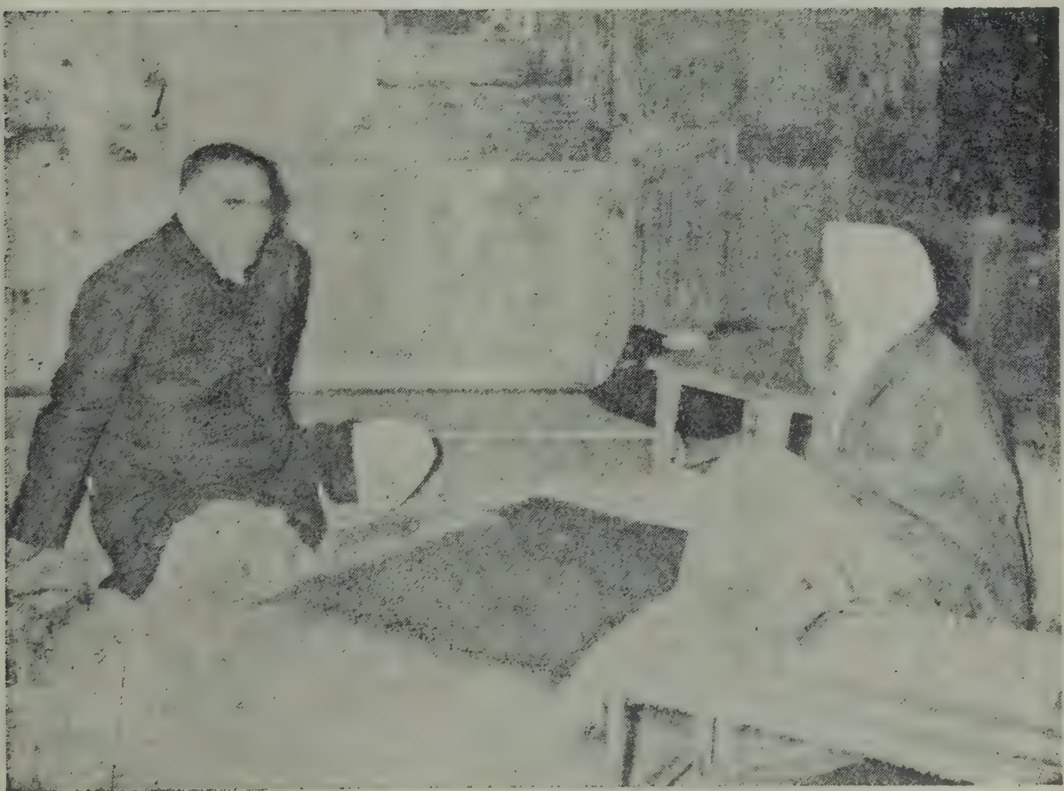
[३४] दो महापुरुषों की बातचीत
राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबू और संत विनोबा



[३५] बापू के दो रूप जिनकी आत्मा एक है।



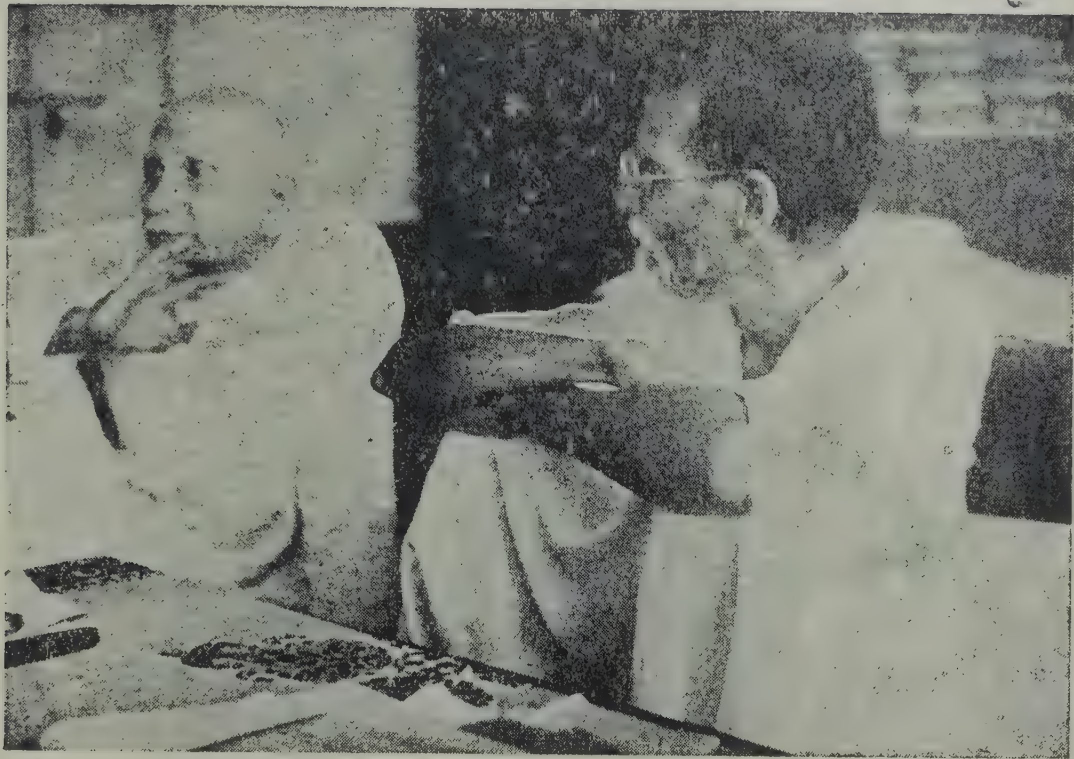
[३६] सर्वोदय सम्मेलन बोधगया में
पं० नेहरू विनोबाजी से देश की समस्याओं पर चर्चा कर रहे हैं।



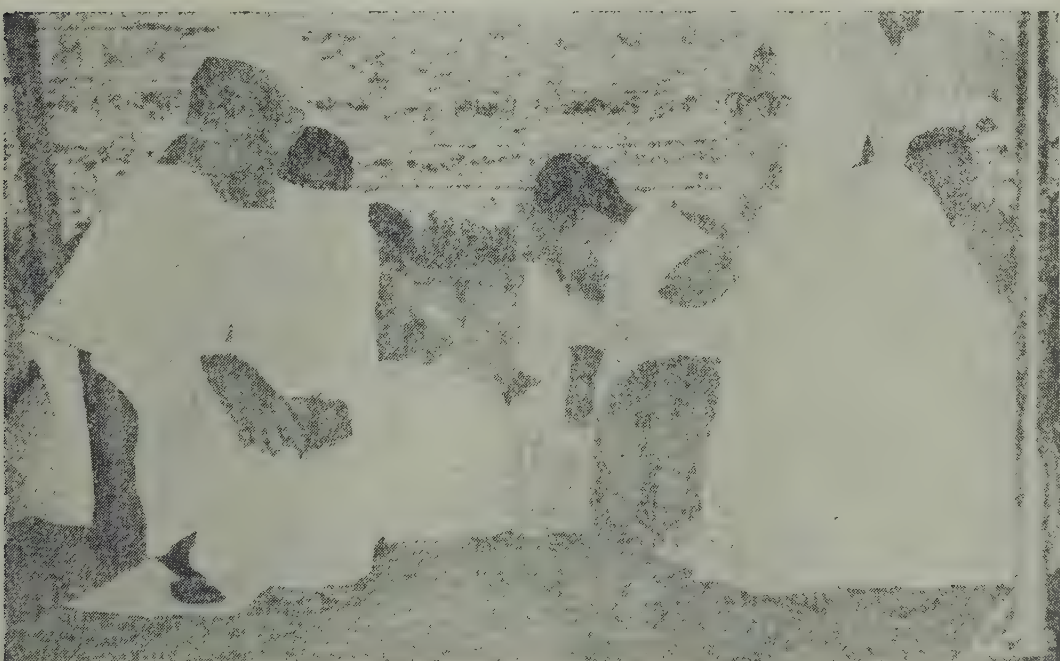
[३७] विनोबाजी और काश्मीर के भू. पू. प्रधान मंत्री बख्शी गुलाम मोहम्मद



 • बोधगया सर्वोदय सम्मेलन में जयप्रकाशबाबू लोगों से 'जीवनदान' देने की प्रेरणा कर रहे हैं



[३६] विनोबाजी और श्री कृष्णदासजी जाजू



[४०] विनोबाजी और गुजरात के रविशंकर महाराज



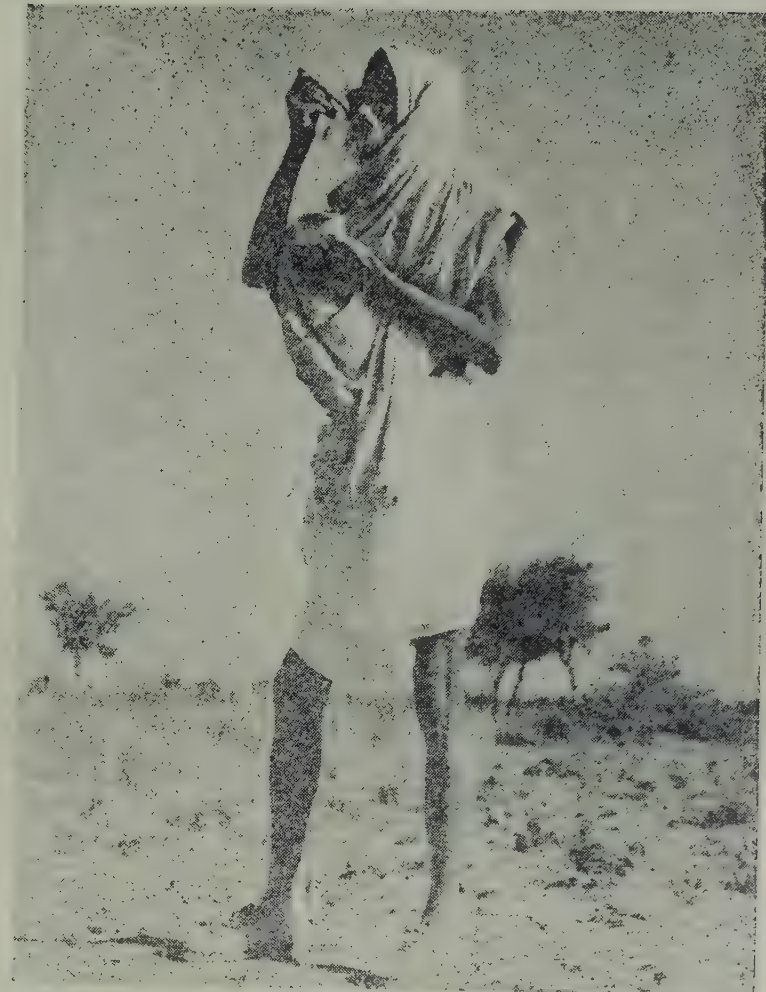
[४१] विनोबाजी और श्री ढेबर भाई



[४२] इस पुस्तक के लेखक श्री जीतमल लूणिया अपनी तीनों चित्रावलियां विनोबाजी को दिखा रहे है



[४३] विनोद प्रिय विनोबा—ढोल बजाते हुए



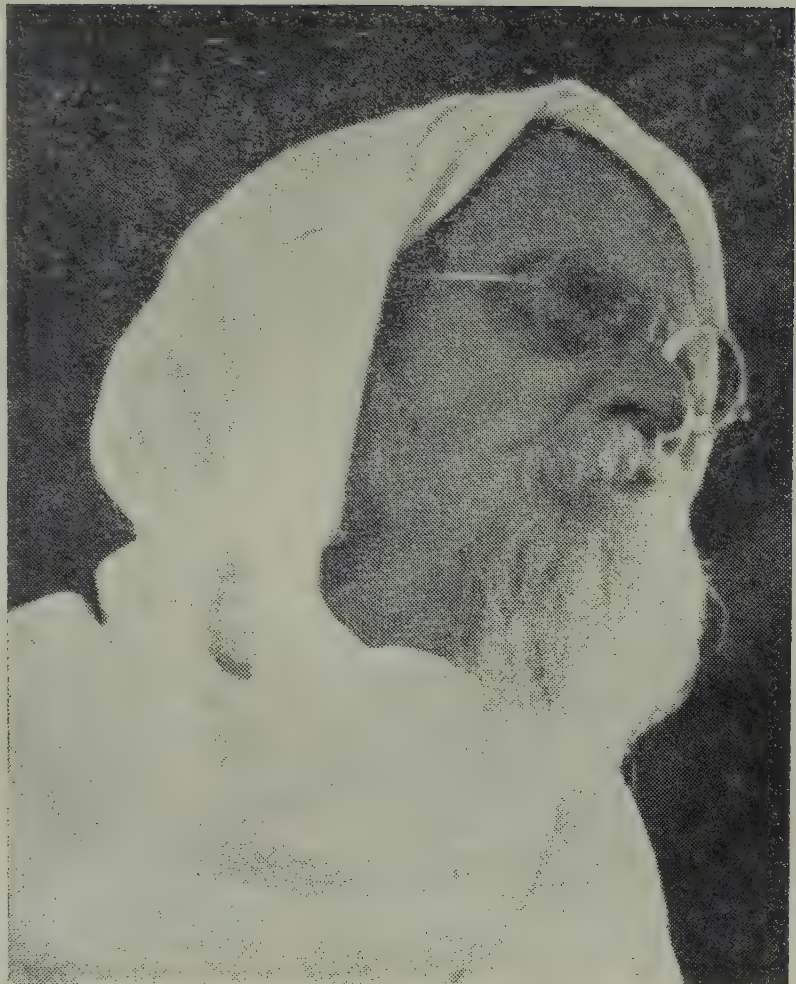
[४४] विनोबाजी चलते चलते नाश्ता कर रहे हैं



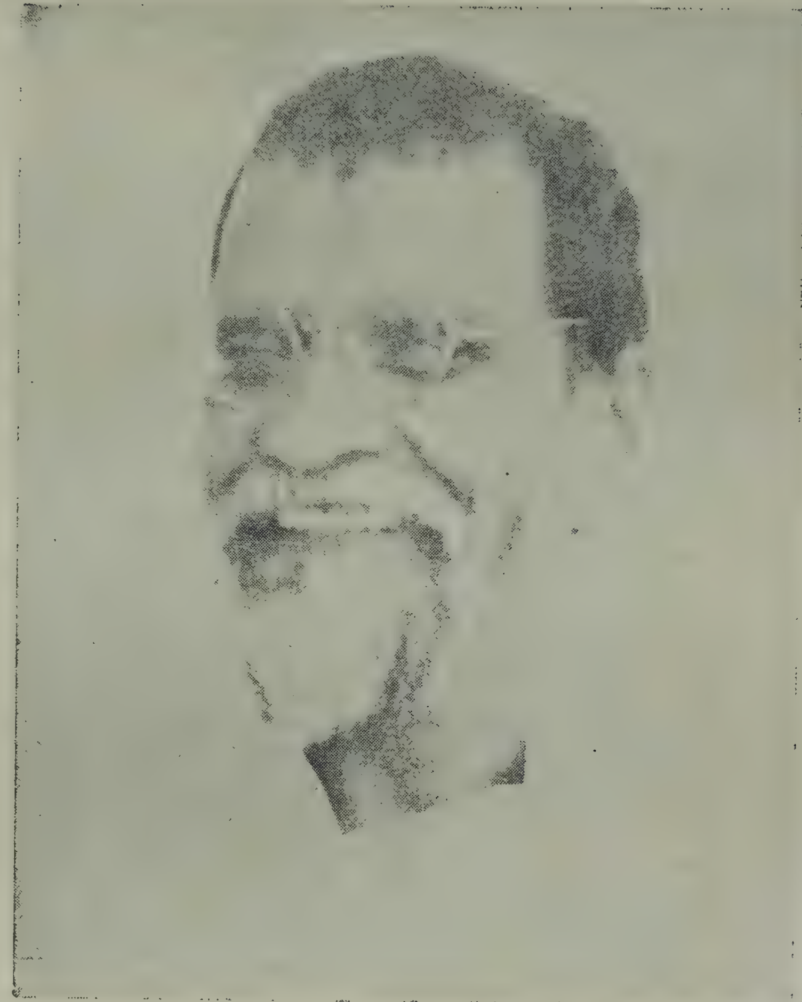
[४५] हरिजन भाइयों को मन्दिर में नहीं जाने देने से विनोबाजी भी बिना दर्श
किये मन्दिर से वापस लौट रहे हैं



[४६] विनोबाजी का गौमाता के प्रति प्रेम



[४७] गंभीर चिंतन



[४८] मुक्त हास्य



[४६] आपसे मेरी प्रार्थना है कि अब देने का ज़माना आया है। यह ईश्वरीय प्रेरणा है आप सब लोग दिल खोलकर दीजिये। भूदान, संपत्तिदान, बुद्धिदान, श्रमदान जो कुछ भी दे सकें दीजिये। देने में भ्रातभाव की तथा मैत्री की भावना प्रकट होती है। सबसे सरल भेंट जिसे ग़रीब से ग़रीब भी कर सकता है, अपने घर में सर्वोदय पात्र रखना है।

—विनोबा के प्रणाम

विनोबा कौन ?

मेरे हिन्दुस्तान लौटने पर सन् १९१६ में विनोबा ने कालेज छोड़ा था। वे संस्कृत के महान पंडित हैं। वे आश्रम (साबरमती आश्रम, अहमदाबाद) में शुरू से ही रहे हैं। आश्रम के सब से पहले सदस्यों में से वे एक हैं। अपने संस्कृत के अध्ययन को आगे बढ़ाने के लिए वे मुझ से एक वर्ष की छुट्टी लेकर चले गये थे। एक वर्ष के बाद ठीक उसी घड़ी, जब कि उन्होंने आश्रम छोड़ा था, चुपचाप आश्रम में फिर आ पहुंचे। मैं तो भूल ही गया था कि उन्हें उस दिन आश्रम में पहुंचना था। समय की पाबन्दी का वे बड़ा ख़याल रखते हैं। वे आश्रम में सब प्रकार की सेवा-प्रवृत्तियों–रसोई से लगाकर पाखाना सफाई तक में हिस्सा ले चुके हैं। उनकी स्मरण शक्ति आश्चर्यजनक है। वे स्वभाव से ही अध्ययनशील हैं, पर अपने समय का ज़्यादा-से-ज़्यादा हिस्सा वे कातने में ही लगाते हैं और उसमें ऐसे निष्णात हो गये है कि बहुत ही कम लोग उनकी तुलना में रखे जा सकते हैं। उनका विश्वास है कि व्यापक कताई को सारे कार्यक्रम का केन्द्र बनाने से ही गाँवों की ग़रीबी दूर हो सकती है। स्वभाव से ही शिक्षक होने के कारण उन्होंने श्रीमती आशादेवी को दस्तकारी द्वारा बुनियादी तालीम की योजना का विकास करने में बहुत योग दिया है। तकली से कातने में तो उन्होंने क्रान्ति ला दी है। हिन्दुस्तान में हाथ-कताई में उतनी सम्पूर्णता किसी ने प्राप्त नहीं की जितनी उन्होंने की है। उनके हृदयमें छूआछूत की गंधतक नहीं है। साम्प्रदायिक एकता में उनका उतना ही विश्वास है जितना मेरा।

उनके पास उनके शिष्यों और कार्यकर्ताओं का एक ऐसा दल है जो उनके इशारे पर हर तरह का बलिदान करने को तैयार है। एक युवक ने अपना जीवन कोढ़ियों की सेवा में लगा दिया है। उसे इस काम के लिए तैयार करने का श्रेय श्री विनोबा को ही है।

विनोबा कई वर्षों तक महिला-आश्रम के संचालक भी रहे हैं। दरिद्रनारायण की सेवा का प्रेम उन्हें वर्धा के पास के एक गाँव में खींच ले गया। वे वर्धा से पाँच मील दूर 'पवनार' नामक गाँव में जा बसे और वहाँ से उन्होंने अपने तैयार किये हुए शिष्यों के द्वारा गांव वालों से संपर्क स्थापित किया। वे इतिहास के निष्पक्ष विद्वान हैं। उनका विश्वास है कि गांव वालों को रचनात्मक कार्यक्रम के बगैर सच्ची आज़ादी नहीं मिल सकती और रचनात्मक कार्यक्रम का केन्द्र है खादी। उनका विश्वास है कि चरखा अहिंसा का उपयुक्त बाह्य चिह्न है। उनके जीवन का तो वह एक अंग ही बन गया है। उन्होंने सत्याग्रह की लड़ाइयों में सक्रिय भाग लिया था। वे राजनीति के मंच पर कभी लोगे के सामने आये ही नहीं। उनका यह विश्वास है कि सविनय-आज्ञा-भंग के अनुसंधान में राजनीतिक भाषणों की अपेक्षा शान्त रचनात्मक कार्य कहीं ज़्यादा प्रभावकारी होते हैं। उनका पूर्ण विश्वास है कि चरखे में हार्दिक श्रद्धा रखे बिना और रचनात्मक कार्य में सक्रिय भाग लिये बगैर अहिंसा-प्रतिकार सम्भव नहीं।

'हरिजन-सेवक' २५-११-४० —मो० क० गाँधी

विनोबाजी के संबंध में पं० नेहरूजी के उद्गार

मैं दुनिया के बहुत से बड़े लोगों से मिला हूं लेकिन आज के संसार में विनोबा जैसा महान् पुरुष एक भी नहीं है। वे भारतीय संस्कृति के विशेष अंग हैं। उन्होंने अपनी सेवा से करोड़ों लोगों के दिल व दिमाग पर जितना असर डाला है उसका अन्दाज करना कठिन है। उनकी ज़िन्दगी और व्यक्तित्व हम लोगों को जो राजनीति में उलझे पड़े हैं, गांधीजी की याद दिलाते हैं। हममें से किसी ने भी देश का वातावरण इतना प्रभावित नहीं किया, जितना कि विनोबाजी ने।

संत विनोबा

भारत भूमि सदा से ही ऐसे महापुरुषों की जननी रही है, जिन्होंने भारत को ही नहीं अपितु समस्त विश्व को अपनी ज्ञान-ज्योति से सन्मार्ग दिखलाया है। गांधीजी, विनोबाजी ऐसे ही महापुरुषों में से हैं। स्वप्न में भी यह कल्पना नहीं की जा सकती थी कि ब्रिटिश साम्राज्य जैसे शक्तिशाली राज्य से लोहा लेकर भारत इतनी जल्दी स्वाधीन हो सकेगा। पर गांधीजी ने असंभव को संभव करके दिखला दिया। उनका अन्तिम आदर्श तो भारत में रामराज्य स्थापित करने का था, पर दुर्भाग्य से, वे समय के पहले ही चल बसे। उनकी मृत्यु के बाद उनके काम को आगे बढ़ाने के लिए* कुछ दिनों बाद ही उनके सच्चे अनुयायी विनोबाजी अपने एकान्तवास से बाहर आये। उन्होंने थोड़े ही समय में भारत के नगरों और गांवों में एक नवीन चेतना, एक नवीन जागृति उत्पन्न करदी। सारा भारत आज उनकी ओर आशाभरी दृष्टि से देख रहा है। भारत ही क्यों, संसार के अन्य देशों को भी उनके द्वारा उठाये गये क्रांतिकारी क़दम में बड़ी संभावनायें दिखाई देती हैं।

आज विनोबा देश के कोने-कोने में अलख जगाते घूम रहे हैं। १९६३ के अन्त तक वे लगभग सेंतीस हजार मील की यात्रा कर चुके हैं और अभी चलते ही जा रहे हैं। भूमिहीनों के लिए भूमि की मांग तो एक निमित्त मात्र है, वास्तव में वे अपने इस क़दम के द्वारा अहिंसक क्रांति करने निकले हैं और उसी का घर-घर, गांव-गांव, नगर-नगर शंखनाद करते हुए मुट्ठीभर साथियों के साथ पैदल घूम रहे हैं। नाम की उन्हें चाह नहीं है, प्रचार की उन्हें चिन्ता नहीं है, आलोचना

---

* 'अपने दुर्बल पावों से लेकिन बापू के ही मार्ग पर चलने की मेरी कोशिश है।'—विनोबा।

की उन्हें परवाह नहीं है। चिन्ता है तो बस एक और वह यह कि लोगों में, परस्पर प्रेम और करुणा बढ़े। वे ऐसी सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था क़ायम करने निकले हैं, जिसकी जड़ में हिंसा की जगह अहिंसा हो, शोषण की जगह सहयोग हो और द्वेष के स्थान पर भ्रातृभाव हो। उनकी दुबली पतली देह है, घुटने तक धोती और शरीर पर केवल एक गमछा! पेट में अल्सर का रोग! पर अदभुत आत्मिक बल है। इन्हें देखकर ऐसा मालूम होता है मानो गांधीजीने ही दूसरा अवतार लिया है। गांधीजी को उन्होंने गुरु माना है पर स्वयं गांधीजी ने कई अवसरों पर कहा है कि कई बातों में विनोबा मुझसे कहीं ऊंचे हैं।

विनोबाजी के पूर्वज

विनोबाजी के पूर्वज महाराष्ट्रीय ब्राह्मण थे और रत्नागिरी ज़िले के रहने वाले थे। इसी परिवार के श्री नरसिंहराव भावे को वीरता के उपलक्ष में गागोदा नाम का गांव इनाम में मिला था।

विनोबा के दादा शंभुराव भावे इसी वंश के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से थे। वे बड़े विरक्त, साहसी और क्रांतिकारी थे। इनके पूर्वजों ने कोटेश्वर महादेव का मंदिर बनवाया था। इसी मंदिर में वे अपना बहुत सा समय भजन और पूजन में लगाते थे। उस ज़माने में जबकि हरिजनों से लोग दूर रहते थे, वे इस मंदिर के वार्षिकोत्सव के दिन हरिजनों को अपने मंदिर में बुलाते, उन्हें भगवान के दर्शन करा कर भोजन कराते थे। उनका कहना था कि भगवान की दृष्टि में ऊंचनीच का कोई भी भेद नहीं है, सब उसके बच्चे हैं, उसके लिए सब समान हैं, सब एक हैं और भोजन की सच्ची ज़रूरत तो इन्हीं ग़रीबों को है। जिन लोगों को खाने-पीने की कमी नहीं है, उनको भोजन कराने से क्या लाभ? उस ज़माने में उनका यह काम बड़ा साहस का काम था। वे जिस काम को सही समझते थे, उसे कर डालते थे। जाति के बंधनों की वे परवाह नहीं करते थे।

जन्म और बाल्यकाल

शंभूरावजी के तीन पुत्र हुए, जिनमें सबसे बड़े का नाम नरहरपंत था। ये बड़े बुद्धिमान और तेजस्वी थे। ये बड़ौदा में सरकारी दफ्तर में काम करते थे। इनकी पत्नी का नाम रुक्मणीदेवी था। इन्हीं की कोख से ११ सितम्बर सन् १८९५ को विनोबा का जन्म गागोदा गांव में हुआ। विनोबाजी का असली नाम विनायक नरहरि भावे था गांधीजी ने विनायक से विनोबा कर दिया। इनका बाल्यकाल गागोदा में ही व्यतीत हुआ और यहीं पर सन् १९०१ में छः वर्ष की आयु में यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। प्रारंभ में घर पर ही धार्मिक शिक्षा दी गई और मराठी का लिखना-पढ़ना सिखाया गया।

विद्यार्थी जीवन

९ वर्ष की अवस्था में वे अपने पिता के पास बड़ोदा में आ गये और तीसरी कक्षा में भरती हुए। शुरू से ही वे बड़े कुशाग्र बुद्धि के थे। छटी कक्षा में पहले नम्बर पर पास हुए। सन् १९१४ में उन्होंने मैट्रिक किया। इसके बाद कालेज में एक वर्ष तो पूरा किया, पर दूसरे वर्ष में इनका जी ऊब गया। उन्हें इस शिक्षा में कोई सार दिखाई नहीं दिया। अतः बिना कोई डिग्री लिये सन् १९१६ में उन्होंने कालेज छोड़ दिया।

एक दिन की बात है कि जब मां रोटी बना रही थी, वे चूल्हे के पास जा बैठे और हाथ के कागजों को मोड़-मोड़ कर जलाने लगे। माँ ने कहा—"विन्या, यह क्या कर रहा है ?" उन्होंने उत्तर दिया—"अपने मेट्रिक आदि के सार्टिफिकेट जला रहा हूँ। मैंने तय कर लिया है कि अब आगे नहीं पढूंगा और न कोई नौकरी ही करूंगा।"

मां ने फिर कहा—"तू आगे भले ही मत पढ़ना, पर इन सार्टिफिकटों को तो रहने दिया होता। मालूम नहीं किस समय काम आ जावें।" विनोबा ने तत्काल उत्तर दिया "जब मैंने तय कर लिया

है कि नौकरी नहीं करना है, तो इन्हें रखकर क्या होगा? यदि ये रहेंगे तो किसी-न-किसी दिन मुझे बन्धन में डाल सकते हैं। इसलिए भविष्य में आने वाले प्रलोभन का रस्सा काट देना ही ठीक है।"

विनोबाजी को दो काम बहुत पसंद थे। दिन रात नई-नई पुस्तकें पढ़ना और खूब पैदल घूमना। प्राकृतिक दृश्यों से उन्हें बड़ा प्रेम था। अकेले या अपने साथियों को लेकर वे घर से निकल पड़ते और पहाड़ों व जंगलों की सैर किया करते। रोज़ाना आठ दस मील घूमना तो उनके लिए मामूली बात थी। उनका कहना था कि १०-१२ मील शुद्ध और खुली हवा में घूम लेने से बुद्धि, मन और शरीर ताज़े हो जाते हैं।

बोलने और बहस करने में भी वे बड़े तेज़ थे। किसी विषय पर चर्चा शुरू कर देते तो घंटों तक बिना रुके बोलते ही रहते। फक्कड़ और मस्त ऐसे थे कि कन्धे पर कुर्ता डालकर बड़ौदा जैसे शहर में निस्संकोच घूमा करते।

ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा

स्वामी रामदासजी की दासबोध पुस्तक तथा इसी तरह की अनेक धार्मिक पुस्तकें पढ़ने से उनके जीवन पर बड़ा असर हुआ। उन्होंने १२ वर्ष की उमर में ही ब्रह्मचारी रहने का निश्चय कर लिया। इस निश्चय के बाद वे कठोर और संयमी जीवन बिताने लगे। वे चटाई पर नीचे सोने लगे और खाने में मिर्च-मसाले सब छोड़ दिये। एक बार माता का पत्र उनके पास आया कि एक लड़की तुम्हारे लिए पसन्द की जा रही है। उन्होंने तुरन्त उत्तर लिख भेजा कि यदि तुम्हें मेरी आवश्यकता है तो विवाह की चर्चा भी मत करना।

धर्मपरायण माता

विनोबाजी की माता बड़ी धर्मपरायण और साधु स्वभाव की थीं। प्रातःकाल उठतीं, ईश्वर-भजन करतीं और घर के कामकाज में लग जातीं। चाहे कितनी ही ठंड हो, भोजन बनाने के पहले वे अवश्य स्नान कर लेतीं। कितने ही मराठी सन्तों के भजन उन्हें कंठस्थ थे।

भोजन बनाते समय तथा अन्य काम करते समय वे इन भजनों को गुनगुनाया करतीं। इन भजनों में कभी-कभी वे इतनी तल्लीन हो जातीं कि दाल में दुबारा नमक डाल देतीं या नमक डालना ही भूल जातीं। वे गहने प्रायः नहीं पहनती थीं और कपड़े भी बहुत कम इस्तेमाल करती थीं। वे कहती थीं कि बाहरी ठाठबाट तो उन्नति में बाधक होते हैं। सुन्दरता अच्छे-अच्छे गुणों में है और बड़प्पन अच्छे-अच्छे भलाई के काम करने में।

वे बड़ी सेवाभावी थीं। घर में छोटा हो या बड़ा, अपना हो या पराया, सबकी समान भाव से सार-संभाल और सेवा करने में उन्हें आनन्द आता था। अतिथियों का तो वे भगवान की तरह सत्कार करती थीं। पास-पड़ौस में भी किसी के कष्ट होता तो वे उसके यहाँ जातीं और मदद करतीं। पड़ौस में कोई बीमार होता तो वे उसके यहाँ जाकर खाना बना आतीं। एक बार विनोबाजी ने विनोद में कहा, "माँ, तू बड़ी स्वार्थिन है। पहले अपने घर खाना बना लेती है, तब दूसरों के घर बनाने जाती है।" माँ ने उत्तर दिया, "विन्या, तू समझता नहीं है। किसी के घर तड़के खाना बनाने जाऊँ तो उसे असुविधा होगी और फिर भोजन के समय खाना भी ठंडा हो जायगा।" ऐसी उनकी धर्मबुद्धि थी। किसी की भलाई करके कभी भी उन्होंने बदले की इच्छा नहीं की। जो किया निःस्वार्थ भाव से किया।

बच्चों को वे भक्ति-भावना और सात्विक विचारों की कहानियां सुनाया करती थीं। विनोबा भी मां की इन बातों को और कहानियों को बड़े ध्यान से सुनते थे। माँ की आज्ञा का बराबर पालन करते थे। कोई काम ऐसा नहीं करते थे जिससे माँ को दुःख हो। बचपन में ही घर की पाठशाला में उन्हें जो शिक्षा मिली, वह आगे चलकर उनके जीवन में बड़े काम की सिद्ध हुई। मां की शिक्षा थी कि अधिक चीज़ों की इच्छा करने से सुख नहीं मिलता। सच्चा सुख संयम में है।

माँ की मृत्यु १४-१०-१९१८ में तथा पिता की ३०-१०-१९४७ में हुई।

आदर्श भाई

विनोबाजी के बाद बालकृष्ण, शिवाजी, दत्तात्रेय ये तीन भाई और शांता एक बहन हुई। दत्तात्रेय तथा शांता की तो जल्दी ही मृत्यु हो गई थी। बालकृष्ण और शिवाजी मौजूद हैं। बालकृष्ण अपनी पढ़ाई समाप्त करके सन् १९१९ में साबरमती आश्रम में आगये और देश-सेवा के काम में लग गये। गाँधीजी ने इनका नाम बालकोबा रखा। अब ये उरलीकाँचन (पूना) में गाँधीजी द्वारा स्थापित निसर्गोपचार आश्रम चला रहे हैं। शिवाजी अपनी शिक्षा समाप्त कर सन् १९२१ में घर छोड़कर साबरमती आश्रम में आगये थे। अब ये धूलिया में वहाँ के आश्रम तथा 'गांधी तत्वज्ञान मन्दिर' का संचालन कर रहे हैं। दोनों ही भाई विनोबाजी की तरह ब्रह्मचर्यपूर्वक संयमीजीवन व्यतीत कर रहे हैं।

जीवन में क्रांति

जिस समय विनोबा कालेज में पढ़ रहे थे, देश में स्वाधीनता की लहर चल रही थी। इनके घर का वातावरण भी राष्ट्रीय था। उस समय सब जगह और खासकर बंगाल में क्रांतिकारी दल का ज़ोर बढ़ रहा था। अतः विनोबाजी के मन में भी देश को आज़ाद कराने के लिए हलचल मच गई। उन्होंने कालेज की पढ़ाई छोड़ दी और बंगाल में क्रांतिकारी लोगों से मिलने चले गये। पर वहां उन्हें अच्छा नहीं लगा। इसलिए वहां से काशी चले आये। यहां उन्होंने संस्कृत और धार्मिक ग्रन्थों का पढ़ना शुरू कर दिया। फलतः उनका मन आध्यात्मिकता की ओर झुक गया।

गांधीजी से सम्पर्क और आश्रम-प्रवेश

हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी के उद्घाटन-समारोह के अवसर पर गांधीजी काशी में आये और वहां उनका बड़ा ही प्रभावशाली भाषण हुआ। विनोबाजी ने इस भाषण को पत्रों में पढ़ा और उससे वे बड़े ही प्रभावित हुए। उन्होंने गांधीजी को पत्र लिखा और कुछ बातें

पूछीं। गांधीजी ने उन्हें बातचीत करने के लिए अपने पास बुलाया। वे अहमदाबाद गये, गांधीजी से मिले और वहां का आश्रम-जीवन देखकर बहुत ही प्रभावित हुए। इसके बाद गांधीजी की अनुमति से वे आश्रम में रहने लग गये और उनके अनुयायी हो गये। गांधीजी ने उनके पिता को पत्र लिखा—

'तुम्हारा विनोबा मेरे पास है। इस छोटीसी उम्र में ही तुम्हारे पुत्र ने जो तेजस्विता और वैराग्य प्राप्त कर लिया है उसे प्राप्त करने में मुझे कितने ही वर्ष लग गये थे।'

एक वर्ष की छुट्टी और पठन-पाठन

कुछ दिनों तक आश्रम में रहने के बाद उनकी इच्छा हुई कि संस्कृत का और अधिक अभ्यास करें। अतः उन्होंने गांधीजी से एक वर्ष की छुट्टी ली। छः महीने तक तो ब्रह्मसूत्र, उपनिषद्, गीता, पातंजलि योगदर्शन आदि-आदि ग्रन्थों का अभ्यास किया और शेष छः महीने महाराष्ट्र में गीता पर प्रवचन दिये। इस एक वर्ष के समय में विनोबाजी का जीवन किस प्रकार साधनामय रहा तथा उन्होंने अपने एक एक क्षण का कैसा उपयोग किया, वह गांधीजी के नाम लिखे पत्र से प्रकट होता है। इस पत्र में उनकी कठोर साधना, वाणी का बल और ओजस्विता देखने योग्य है:—

परम पूज्य बापूजी,

एक साल पहले अस्वास्थ्य के कारण मैं आश्रम से बाहर गया था। यह सोचा था कि दो-तीन मास वाई (पूर्वजों का गांव) रहकर आश्रम लौट जाऊंगा पर काफ़ी समय बीत गया फिर भी मेरा कोई ठिकाना नहीं। इस कारण मैं आश्रम लौट आऊंगा या नहीं, अथवा जीवित भी हूँ या नहीं, यह शंका हुई होगी। पर मुझे कबूल करना चाहिए कि इस बारे में सारा दोष मेरा ही है। वैसे मामा फड़के को मैंने एक दो पत्र लिखे थे। उनमें लिखा था कि सत्याग्रह शुरू होने की बात आती

हो तो मुझे जरूर लिखिएगा। मैं सब कुछ छोड़कर तुरंत आ पहुंचूंगा। नहीं तो जिस काम के कारण मैं आश्रम के बाहर रह रहा हूँ वह पूरा होने पर ही आश्रम में प्रवेश करूंगा। आश्रम छोड़कर मैं चला गया हूँ, ऐसा भी शक किसी को हुआ हो तो उसमें भी दोष मेरा ही है, क्योंकि पत्र न लिखने की मेरी आदत है। पर इतना तो लिखना ही चाहता हूँ कि आश्रम ने मेरे हृदय में खास स्थान प्राप्त कर लिया है। इतना ही नहीं, अपितु मेरा जन्म ही आश्रम के लिये है, ऐसी मेरी श्रद्धा बन गई है। तो फिर प्रश्न उठता है कि मैं एक वर्ष बाहर क्यों रहा ?

जब मैं १२ वर्ष का था, तभी मैंने ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए देश सेवा करने का व्रत लिया था। उसके बाद मैं हाई स्कूल में दाखिल हुआ। उस समय मुझे गीता पढ़ने का शौक लग गया। पर मेरे पिताजी ने दूसरी भाषा के तौर पर फ्रेंच लेने की आज्ञा दी। तो भी गीता पर मेरा प्रेम कम नहीं हुआ था। और तभी से मैंने घर पर खुद-ब-खुद संस्कृत का अभ्यास शुरू कर दिया था। मेरा निश्चय था कि वेदांत और तत्वज्ञान का भी अभ्यास करूं। मैं आप की आज्ञा लेकर आश्रम में दाखिल हुआ, पर उसी समय वेदाँत का अभ्यास करने का अच्छा मौका हाथ लगा। वाई में नारायण शास्त्री मराठे नामक एक आजन्म ब्रह्मचारी विद्वान विद्यार्थियों को वेदान्त तथा दूसरे शास्त्र सिखाने का काम करते हैं। उनके पास उपनिषदों का अध्ययन करने का लोभ मुझे हुआ। इस लोभ के कारण वाई में मैं ज्यादा समय रह गया। इतने समय में मैंने क्या क्या किया, यह लिखता हूं।

१-उपनिषद २-गीता ३-ब्रह्मसूत्र ४-मनुस्मृति ५-पातंजल योगदर्शन-, इन ग्रन्थों का मैंने अभ्यास किया। इसके अलावा १-न्याय सूत्र २-वैशेषिकसूत्र ३-याज्ञवल्क्यस्मृति—इन ग्रन्थों को पढ़ गया, अब मुझे अधिक सीखने का मोह नहीं है। अपने आप ही जो पढना होगा, वह पढ़ लूंगा। दूसरा काम था स्वास्थ्य सुधार, जिसके लिये मैं वाई गया था।

उस बारे में स्वास्थ्य सुधार के निमित्त पहले तो मैंने १०-१२ मील घूमना शुरू किया। बाद में छः से आठ सेर तक अनाज पीसना शुरू किया। आज ३०० सूर्य नमस्कार और घूमना, यह मेरा व्यायाम है। इससे मेरा स्वास्थ्य ठीक हो गया।

आहार के विषय में तो पहले ६ महीने तक तो नमक खाया, बाद में उसे छोड़ दिया। मसाले वगैरा बिलकुल नहीं खाए और आजन्म नमक और मसाले न खाने का व्रत लिया। दूध शुरू किया। बहुत प्रयोग करने के बाद यह सिद्ध हुआ कि दूध बिना बराबर चल नहीं सकता, फिर भी अगर इसे छोड़ा जा सकता है तो छोड़ देने की मेरी इच्छा है। एक महीना केवल केले, दूध और नीबू पर बिताया। इससे ताकत कुछ कम हुई। आज मेरी खुराक नीचे लिखे अनुसार है—

दूध ।।। सेर (६० तोला), भाकरी २ (२० तोला ज्वार की), केले ४-५, नीबू १ (मिल जाय तो) अब आश्रम पहुंचने पर अपना भोजन आप की सलाह लेकर तय करने का विचार है। स्वाद के लिये अन्य कोई पदार्थ खाने की इच्छा ही नहीं होती। फिर भी ऊपर लिखा मेरा आहार बहुत अमीरी है, ऐसा महसूस होता है। रोज का खर्च लगभग नीचे लिखे अनुसार है।

केले और नींबू ८ पैसे, ज्वार २ पैसे, दूध ५ पैसे, कुल खर्च =)।।।

इसमें और क्या फेर फार करना चाहिए, वह आप से मुझे जानना है। सो आप मुझे पत्र द्वारा लिखिएगा।

अब तक मैंने ये कार्य किये हैं:—

१—गीताजी का वर्ग चलाया। इसमें बिना कुछ लिये ६ विद्यार्थियों को अर्थ सहित सारी गीता सिखाई।

२—ज्ञानेश्वरी ६ अध्याय। इस वर्ग में चार विद्यार्थी थे।

३—उपनिषद नौ। इस वर्ग में दो विद्यार्थी रहे।

४–हिंदी प्रचार–मैं स्वयं अच्छी हिंद नहीं जानता फिर भी विद्यार्थियों को हिंदी के समाचार पत्र पढ़ने पढ़ाने का क्रम रखा।

५–अंग्रेजी—दो विद्यार्थियों को सिखायी।

६–यात्रा लगभग ४०० मील पैदल। राजगढ़, सिंहगढ़, तोरणगढ़, आदि ऐतिहासिक किलों को देखा।

७–प्रवास करते समय गीता पर प्रवचन करने का क्रम भी रखा था। आज तक ऐसे कोई ५० प्रवचन किये। अब यहां से आश्रम आते हुए पहले पैदल बंबई जाऊंगा और वहां से रेल से आश्रम पहुँचूंगा। मैं अधिक से अधिक चैत्र शुक्ल १ को आश्रम पहुंच जाऊंग ा।

८–वाई में विद्यार्थी-मंडल नामक एक संस्था की स्थापना की। उसमें एक वाचनालय खोला और उसकी सहायता के लिये चक्की पीसने वालों का एक वर्ग शुरू किया। उसमें मैं और दूसरे १५ विद्यार्थी चक्की पीसते थे। जो मशीन की चक्की पर पिसवाने ले जाते, उनका काम हम एक पैसे में दो सेर के हिसाब से करते और ये पैसे वाचनालय को देते। अमीरों के लड़के भी इस वर्ग में शामिल हुए थे। वाई पुराने विचारवालों का स्थान होने से और वर्ग में हम सब हाई स्कूलों में पढ़ने वाले ब्राह्मणों के लड़के होने के कारण सब हमें मूर्ख ही समझते थे। इतने पर भी यह वर्ग कोई दो मास चला और वाचनालय में ४०० पुस्तकें इकट्ठी हो गईं।

९–सत्याग्रह आश्रम के तत्वों का प्रचार करने का मैंने काफ़ी प्रयत्न किया।

१०–बड़ौदा में १०-१५ मित्र हैं। इन सबको लोक सेवा करने की इच्छा है। इसलिए वहां तीन वर्ष पहले हमने मातृभाषा के प्रसार के लिये एक संस्था स्थापित की थी। इस संस्था के वार्षिकोत्सव में मैं गया था। (उत्सव यानी संस्था के सभासद इकट्ठे होकर क्या काम किया और आगे क्या करना है, इसकी चर्चा) उसमें मैंने वहाँ हिंदी प्रचार

करने का विचार रखा। मेरी श्रद्धा है कि यह संस्था यह काम जरूर करेगी। आप ने हिंदी प्रचार का जो यत्न शुरू किया है, उसमें बड़ौदा की यह संस्था काम करने को तैयार रहेगी। अंत में सत्याग्रह आश्रम निवासी के तौर पर मेरा आचरण कैसा रहा, यह लिखना आवश्यक है।

१–अस्वाद व्रत—इस विषय पर भोजन संबंधी प्रकरण में ऊपर लिखा जा चुका है।

२–अपरिग्रह—लकड़ी की थाली, कटोरी, आश्रम का एक लोटा। धोती, कंबल और पुस्तकें। इतना ही परिग्रह रखा है। बंडी, कोट, टोपी वगैरह न पहनने का व्रत लिया है। इस कारण शरीर पर धोती ही ओढ़ लेता हूँ। करघे पर हाथ से बुना कपड़ा ही इस्तेमाल करता हूँ।

३–विदेशी चीजों का मुझ से कोई वास्ता नहीं है।

४–सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य इन व्रतों का परिपालन अपनी जानकारी में मैंने ठीक ठीक किया है, ऐसा मेरा विश्वास है। अधिक क्या कहूँ? जब भी सपने आते हैं तभी मन में एक विचार आता है कि ईश्वर मुझसे कोई सेवा लेगा। मैं पूर्ण श्रद्धा से इतना कह सकता हूँ कि आश्रम के नियमों के अनुसार (एक को छोड़कर) मैं अपना आचरण रखता हूँ। यानी मैं आश्रम का ही हूँ। आश्रम ही मेरा साध्य है। जिस बात की कमी का मैंने उल्लेख किया है, वह है अपना भोजन स्वयं बनाना। मैंने इसका भी प्रयत्न किया, पर प्रवास में यह संभव नहीं हो सका।

सत्याग्रह का या दूसरा कोई सवाल पैदा हो तो मैं आपके यहां से सूचना मिलते ही तुरन्त ही पहुँच जाऊंगा।

इधर आश्रम में क्या फेर फार हुए हैं तथा मुझे अपने आहार में क्या परिवर्तन करना चाहिए, यह जानने की मेरी प्रबल इच्छा है। आप स्वयं मुझे पत्र लिखें ऐसा विनोबा का आप को पितृतुल्य समझने वाले आपके पुत्र का आग्रह है।

दिनांक १०-२-१८ विनोबा के प्रणाम,

पढ़कर अकस्मात बापू के मुंह से ये उदगार निकल पड़े— 'गोरख ने मछन्दर को हराया, भीम है भीम !' दूसरे दिन बापू ने विनोबा को इस प्रकार उत्तर लिखा—

तुम्हारे लिए कौनसा विशेषण काम में लाऊं यह मुझे नहीं सूझता। तुम्हारा चरित्र और तुम्हारा प्रेम अद्‌भुत है। तुम्हारी परीक्षा करने योग्य मैं अपने को नहीं पाता। तुम्हारे आग्रह को मंजूर करके तुम्हारे लिए पिता के स्थान को ग्रहण करता हूं।

मेरी मान्यता है कि सच्चा पिता अपने से विशेष चरित्रवान पुत्र पैदा करता है। सच्चा पुत्र वही है जो अपने पिता के काम को आगे बढ़ाता है। मुझे लगता है कि यह तुमने किया है। तुम्हारे आहार में किसी प्रकार का परिवर्तन करने का अभी तो मुझे कुछ नहीं लगता। दूध का त्याग अभी मत करना। विशेष तो जब आओगे तब।

भगवान तुम्हें लम्बी आयु दे और तुम भारत की महान सेवा के निमित्त बनो यही मेरी हार्दिक कामना है। —बापू के आशीर्वाद

बाद में बापू के उद्‌गार—'बहुत बड़ा मनुष्य है। इसने तो हद कर दी।'

विनोबा का यह पत्र और बापू का यह उत्तर इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा और सब को प्रेरणा देता रहेगा।

जिस दिन एक वर्ष की अवधि समाप्त हुई, ठीक उसी दिन वे आश्रम में लौट आये।

आश्रम-जीवन

आश्रम में विनोबाजी का जीवन बड़ा संयमी और कठोर था। प्रातःकाल से लेकर रात्रि को सोने के समय तक उनका सब काम बंधा था। वे आश्रमवालों के लिए खाना बनाते, आश्रम की सफ़ाई करते, नदी में से पानी लाकर पेड़ पौधों को सींचते और कताई-बुनाई का काम करते। यह सब काम वे उपासना के रूप में प्रसन्न चित्त से करते थे। कुछ समय के बाद पाखाना-सफाई का काम भी आश्रम में शुरू किया

गया। इसमें सबसे पहले विनोबाजी तथा उनके भाई बालकोबाजी ने हिस्सा लिया। यह काम उन्होंने महीनों तक बड़ी तन्मयता से किया।

कुछ समय तक गुजरात विद्यापीठ में शिक्षक की हैसियत से भी विनोबाजी ने काम किया और आश्रम के कार्यालय के व्यवस्थापक भी रहे।

वर्धा में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना

सेठ जमनालालजी बजाज की बहुत दिनों से इच्छा थी कि वर्धा में भी एक आश्रम स्थापित किया जाय। अतएव उनके अनुरोध से गांधीजी ने आश्रम स्थापित करने के लिए विनोबाजी को वर्धा भेज दिया। आश्रम का उद्देश्य मानव-समाज की आजीवन सेवा करना था। उन्होंने आश्रमवासियों के लिए नीचे लिखे अहिंसा, आदि ११ व्रत निश्चित किये।

अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य असंग्रह।
शरीरश्रम अस्वाद सर्वत्र भयवर्जन॥
सर्वधर्मी समानत्व स्वदेशी स्पर्श भावना।
ही एकादश सेवावी नम्रत्वे व्रत निश्चये॥

आश्रम में शिक्षा की दृष्टिसे धार्मिक सूत्रों का तथा शास्त्रों का अध्ययन और सन्त वचनों का अभ्यास कराया जाता था। शारीरिक श्रम पर बहुत जोर दिया जाता। उद्योगों का भी शिक्षण दिया जाता। कताई में तकली व चर्खा दोनों पर कताई का अभ्यास कराया जाता। बाएँ हाथ से कातने के साथ साथ दाहिने हाथ से भी कातने का अभ्यास विनोबाजी स्वयं करते तथा उनके साथ कुछ छात्र भी अभ्यास करते। बढ़ई गीरी के काम में एक बार यहाँ तक तय हुआ कि जो साधारण मज़दूरी और बढ़इयों को मिलती है उसी हिसाब से आश्रम वालों को भी मिलेगी। आज सर्व सेवा संघ के कोषाध्यक्ष श्री राधाकृष्ण बजाज उस समय बढ़ईगीरी का काम करते थे। कहा जाता है कि जितनी आय होती उतना ही खर्च होता। सिलाई धुनाई खेती आदि का भी काम होता। बौद्धिक वर्गों में सभी प्रकार के ज्ञान की जानकारी दी जाती।

आश्रम का जीवन अत्यंत प्रयोगावस्था में चल रहा था। कोई भी चीज़ बिना गणित के नहीं चलती थी। विनोबाजी की गणित बुद्धि ने आश्रम को नये ढाँचे में ही ढाल दिया। रोटी का कितना वजन हो चाँवल दाल सब्ज़ी प्रत्येक व्यक्ति को कितनी मिलनी चाहिए, संतुलित भोजन में क्या क्या रहना चाहिए इन सब पर विचार होता। दिन भर की मज़दूरी का हिसाब करके कुल जितने पैसे होते उतने का ही दूसरे दिन भोजन बनता और वह संतुलित भोजन रहे इसका ध्यान रहता।

कई वर्षों तक विनोबाजी ने महिलाश्रम का भी काम संभाला। फिर वर्धा के पास नालवाड़ी गाँव में आश्रम स्थापित किया। यहाँ उन्होंने कताई-बुनाई का अभ्यास किया। कुछ समय तक तो वे नित्यप्रति आठ-आठ घंटे कताई-बुनाई का काम किया करते थे। इसके बाद वे पास के पौनार नामक गांव में चले गये और वहां अपना आश्रम स्थापित किया। इस तरह वर्धा तथा उसके पास रहकर उन्होंने पूरे तीस वर्ष तक कठोर तपस्या की।

जेल यात्रा

सन् १९२३ में जब नागपुर झंडा-सत्याग्रह का आंदोलन शुरू हुआ तो विनोबाजी ने भी उसमें प्रमुख भाग लिया और जेल गये, पर कुछ महीनों बाद ही सरकार ने समझौता कर लिया और सब लोगों को छोड़ दिया। विनोबाजी भी छूट गये। तत्पश्चात् जब दक्षिण में व्हायकोम के मंदिरों में हरिजन-प्रवेश सत्याग्रह शुरू हुआ तो गांधीजी ने विनोबाजी को ही चुना। इनके नेतृत्व में कई महीनों तक सत्याग्रह चलता रहा। अन्त में सफलता मिली और आज दक्षिण का हरेक मंदिर हरिजनों के लिए खुला है। सन् १९३० में विनोबाजी ने नमक-सत्याग्रह में भाग लिया और गिरफ्तार किये गये। सन् १९३१ और १९३२ के आन्दोलन में भी जेल गये।

प्रथम सत्याग्रही

१९४० में जब व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू हुआ तब गांधीजी ने विनोबाजी को पहला सत्याग्रही चुना। इस सत्याग्रह में विनोबाजी को तीन महीने की सज़ा हुई, पर छूटने के बाद उन्होंने फिर सत्याग्रह किया। फिर जेल भेज दिये गये। बाद में छूटते ही फिर सत्याग्रह किया। इस तरह तीन बार जेल गये।

इसके बाद १९४२ में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन शुरू हुआ। पर विनोबाजी को सरकार ने ९ अगस्त को ही गिरफ्तार कर लिया। फिर तीन वर्ष बाद सन् १९४५ में सरकार ने उन्हें छोड़ा।

पौनार में कांचन-मुक्ति का प्रयोग

१९४५ में जेल से छूटने के बाद विनोबा पौनार के अपने परंधाम आश्रम में चले गये। इस बार दूसरे कामों के साथ-साथ उन्होंने भंगी का भी काम किया। पौनार से चार मील दूर सुरगांव में रोज़ सुबह जाते, वहां के पाखाने तथा नालियां साफ़ करते तथा गांव वालों को सफ़ाई की बातें बताकर आठ बजे वापस अपने आश्रम में आजाते। इस प्रकार जब तक गांधीजी मौजूद थे तब तक वे रचनात्मक कार्य में निरन्तर लगे रहे। गांधीजी की मृत्यु के बाद देश में विषम स्थिति पैदा होगई। इसलिए उन्हें आश्रम से बाहर आना पड़ा। एक वर्ष तक वे देश में घूमे और विस्थापितों में शांति स्थापित करने के लिए प्रयत्न करते रहे। इसी दौर में उन्हें अनुभव हुआ कि आज हमारी सारी समाज-व्यवस्था पर पैसे का प्रभुत्व छा गया है। रुपया बड़े-से-बड़ा अनर्थ करवा देता है, सत्य का मुँह बन्द कर देता है, इसलिए पैसे के जाल से मुक्त होने का उपाय करना चाहिए। इसके लिए उन्होंने अपने यहाँ प्रयोग शुरू किया। साथियों ने भी उन्हें साथ देना स्वीकार किया। विनोबाजी अपने हाथ से आठ आठ, दस-दस घंटे कुदाल चलाते, हल जोतते। उनका कहना था कि हम अपने परिश्रम से कमाई हुई चीज़ ही का उपयोग करेंगे और उसी से जीवन निर्वाह करेंगे।

सर्वोदय का विचार तथा सर्वोदय समाज की स्थापना

लगभग ४५ वर्ष पूर्व गांधीजी ने रस्किन की पुस्तक 'अन्टु दिस लास्ट' का रूपान्तर 'सर्वोदय' शीर्षक से किया था जिसका उद्देश्य सबका कल्याण, सबका (केवल अधिकांश का नहीं) उदय, होना बताया था।

सर्वोदय अर्थात् सबके कल्याण की इस भावना को गांधीजी ने अपने रचनात्मक आर्यक्रमों के द्वारा मूर्त्तरूप देने का प्रयत्न किया, और उनका कार्यक्रम सर्वोदय कार्यक्रम हो गया।

सर्वोदय की इस भावना को क्रियात्मक रूप देने के लिए रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं का एक सम्मेलन करने का विचार १९४२ से ही चल रहा था। परन्तु इसके लिए मौक़ा नहीं मिला। सन् १९४४ में बापू जब जेल से छूटे तो उन्होंने अपने सहयोगियों और रचनात्मक कार्य में लगे हुए कार्यकर्त्ताओं के सामने अपनी मनोव्यथा व्यक्त करते हुए कहा "खादी के ज़रिये जो पैसा ग़रीबों के पास पहुँचा उससे उनकी सहायता मात्र हुई लेकिन असली चीज़ स्वावलम्बन मैं उन्हें न दे सका" निधिमुक्ति और तंत्रमुक्त रूपी मार्ग का अनुसरण कर गांव-गांव में गांव की सुप्त शक्ति जगाने का काम रचनात्मक संघों द्वारा हो यह इच्छा प्रकट करके उन्होंने सभी रचनात्मक संघों को परस्पर जोड़ने की सलाह दी।

इसके लिए उन्होंने वर्धा में सब रचनात्मक संस्थाओं का सम्मेलन फरवरी १९४८ में करने का तय किया पर दुर्भाग्य से इसके पहले अर्थात् ३० जनवरी १९४८ को ही वे चल बसे।

उनकी मृत्यु के बाद १३ मार्च १९४८ में रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं का एक सम्मेलन सेवाग्राम में हुआ। इस सम्मेलन में सर्वोदय समाज की स्थापना का निश्चय हुआ। और सब संस्थाओं तथा संघों को सम्मिलित कर अखिल भारत सर्व सेवा संघ के रूप में कार्य करने पर विचार हुआ और उसका एक विधान भी तैयार किया गया। लोगों ने विनोबाजी से आग्रह किया कि गांधीजी के कार्य को वे अपने हाथ में

ले लें। विनोबाजी में ही सबको आशा की किरण दिखाई दे रही थी। वे ही सबको प्रकाशस्तम्भ प्रतीत हो रहे थे।

सर्वोदय सम्मेलन तथा अ. भा. सर्व सेवा संघ

सेवाग्राम की बैठक के बाद पहला सर्वोदय सम्मेलन मार्च १९४९ में राऊ (इंदौर) में हुआ यहाँ 'सर्व सेवा संघ' की बैठक हुई और उसका विधान स्वीकृत किया गया। इसी सम्मेलन में ३० जनवरी को सर्वोदय दिन, १२ फरवरी को सर्वोदय मेला तथा इस पक्ष को सर्वोदय पक्ष के नाम से मनाना तय हुआ। इस मेले के अवसर पर बापू को सूतांजली अर्पण करने का कार्यक्रम भी रखा गया। सूतांजली अर्थात् प्रत्येक मनुष्य अपने श्रम से कती हुई केवल एक गुंडी सूत अर्पण करे। आगे जाकर ग्रामोद्योग संघ, चरखा संघ, ग्राम सेवा संघ आदि अनेक रचनात्मक संस्थाएं इस संघ में मिल गईं। अब तो देश भर में फैले लोक सेवकों का संघ भी इसीके तत्वावधान में काम कर रहा है। संघ का उद्देश्य सत्य और अहिंसा की बुनियाद पर ऐसा वर्ग-विहीन समाज क़ायम करना है जिसमें किसी का शोषण न हो। दूसरा सम्मेलन अप्रेल १९५० में आंगुल (ओडीसा) में हुआ।

भूदान यज्ञ की प्रेरणा, आरम्भ और विकास

सन् १९५१ के अप्रेल मास में शिवरामपल्ली (हैदराबाद) में तीसरा सम्मेलन करने का निश्चय हुआ। इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए विनोबाजी ने पैदल जाने का निश्चय किया। वर्धा से शिवरामपल्ली कोई ३०० मील दूर है। उन्होंने कहा "पदयात्रा से देश का सच्चा दर्शन होता है। जनता के साथ संपर्क होता है और सर्वोदय का संदेश घर घर पहुंचाया जा सकता है।" विनोबाजी थोड़े से साथियों के साथ दस दस बारह मील रोज़ चलकर लोगों को रास्ते भर सर्वोदय का सन्देश सुनाते हुए तीसवें दिन सम्मेलन भूमि पर पहुंचे। उन्होंने कहा कि गांवों के हालत की जो कल्पना मेरे मन में थी उससे भी

बुरी हालत में आज गांव पड़े हुए हैं। इनके उठाने के लिए लाखों सेवकों की आवश्यकता है। सेवक ऐसे होना चाहिए जो "अन्तः शुद्धि बहिर्शुद्धि, श्रमः शांति समर्पणम् (पवित्र जीवन, घर और बाहर गांव आदि की सफाई, शारीरिक श्रम की प्रतिष्ठा, जीवन में त्याग और अहिंसा) आदि गुणों को अपने जीवन में धारण करें।

तैलंगाना में प्रवेश

सम्मेलन की समाप्ति पर कुछ लोगों ने विनोबाजी से आग्रह किया कि आप इतनी दूर आये हैं तो तैलंगाना ज़िले की हालत भी देखते जावें जहाँ साम्यवादियोंने हिंसक प्रवृतियों से त्राहि त्राहि मचा रखी है और इस कारण से हज़ारों लोग घर बार छोड़कर चले गये हैं। विनोबाजी ने इस बात को पसंद किया और उन्होंने १५-४-५१ को तैलंगाना की पद यात्रा प्रारम्भ कर दी। उनका पहला पड़ाव नरसिंही गाँव में हुआ जहाँ कि जेल में लगभग एक सौ कम्युनिस्ट भाई बन्द थे। उनसे वे बड़े प्रेम से मिले और काफ़ी देर तक चर्चा कर अपना दृष्टिकोण समझाया। यहां से बिदा होकर वे १८ अप्रेल को पोचमपल्ली गांव में पहुंचे। यह कम्युनिस्टों का एक अड्डा समझा जाता था। यहां और आसपास २४ हत्याएँ हो चुकी थीं। पुलिस को जानकारी देने वाला गोली का शिकार होगा, यह भय चारों ओर छाया हुआ था।

विनोबाजी गांव में घूमने निकले। यहां के हरिजन भाई बहुत दुखी थे। उनके पास भूमि नहीं थी और उन्हें दूसरों के यहां काम करने से जो मज़दूरी मिलती थी, उससे उनका पूरा पेट भी नहीं भर पाता था। उन्होंने विनोबाजी से कहा कि अगर हमें ज़मीन मिल जाय तो हम लोग अपने हाथ से उस पर खेती करेंगे और उससे हमारा निर्वाह हो जायगा। विनोबाजी ने पूछा कि कितनी ज़मीन से काम चल जायगा। उन्होंने बताया कि अस्सी एकड़ ज़मीन हमारे सबके लिए काफ़ी होगी।

दोपहर बाद जब गांव के लोग इक्ट्ठे हुए तो विनोबाजी ने अस्सी एकड़ ज़मीन की मांग उनके सामने रक्खी। माँग रखनी थी कि एक भाई रामचन्द्र रेडडी सभा में खड़े हुए और बड़ी नम्रता और श्रद्धा से कहा "मेरे पिताजी की इच्छा थी कि अपनी जामीन में से कुछ जामीन पुण्य कार्य में दी जाय। पिताज़ी तो अब नहीं रहे पर उनकी इच्छा पूरी करना पुत्र का कर्तव्य है इसलिए उनकी ओर से ५० एकड़ और मेरी ओर से ५० एकड़ कुल १०० एकड़ ज़ामीन आपकी मार्फत इन ग़रीब भाइयों को दे दी जाय।" इस घोषणा से सभा में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। विनोबाजी ने कहा कि भाई रामचन्द्र ने जैसा त्याग किया है यदि और लोग भी जिनके पास अधिक मात्रा में ज़मीनें तथा अन्य संपत्ति है उसमें से ग़रीब भाइयों को हिस्सा देदें तो कम्युनिस्टों का मसला अपने आप हल हो जाय।

भारत के अन्य प्रांतों में पदयात्रा

महज़ प्रेम के तकाज़े पर इतनी ज़मीन मिल जाना एक आश्चर्य की बात थी। विनोबाजी ने वह स्वीकार करली और यहीं से भूदान-यज्ञ की गंगा प्रभावित हो गई। भूमि लोगों को सताकर या क़ानून के ज़ोर पर भी ली जा सकती थी, लेकिन वह शांति का रास्ता नहीं था। इसलिए विनोबाजी ने प्रेम का रास्ता अंगीकार किया। उन्होंने निश्चय किया कि वह भारत के गांव-गांव में घूमेंगे और प्रेम से भूमिहीनों के लिए भूमि इकट्ठी करेंगे। तैलंगाना में लगभग तेरह हज़ार एकड़ भूमि मिली। तैलंगाना से पैदल चल कर विनोबा वर्धा आये और वहां कुछ दिन ठहर दिल्ली के लिए पैदल रवाना हो गये। रास्ते में भूमि मांगते हुए और लेते हुए दिल्ली आये। ११ दिन यहां रहे और फिर उत्तर प्रदेश की यात्रा पर निकल पड़े। शुरू में उन्होंने भूमि की ही मांग की थी। बाद में उसमें साधनदान, कूपदान, बुद्धिदान, जीवनदान, संपत्तिदान, ग्रामदान भी आ मिले। विनोबाजी की वाणी में किसी प्रकार का दबाव नहीं है यदि है तो केवल प्रेम। वे नम्रता से कहते हैं कि आपके पांच बेटे हैं

तो छठा दरिद्रनारायण (ग़रीब) को मानलो और उसका हिस्सा उसे देदो जिस प्रकार हवा, पानी, धूप पर किसी का अधिकार नहीं है, उसी प्रकार भूमि भी किसी एक व्यक्ति की सम्पत्ति नहीं है। वह ईश्वर की दी हुई चीज़ है। जो उस पर मेहनत करे, वही उसकी कमाई खाय।

लोग प्रेम से विनोबाजी की बातें सुनने और उन्हें ज़मीन देने लगे। जैसे-जैसे विनोबाजी आगे बढ़ते गये, लोगों का ध्यान उनके महान् कार्य की ओर आकर्षित होता गया। फिर तो भूदान-यज्ञ समितियां बनीं, और भूदान का कार्य चारों ओर फैलने लगा। सेवापुरी के सर्वोदय सम्मेलन में उसने एक आन्दोलन का रूप ग्रहण कर लिया, चांडिल के सम्मेलन में वह देश का स्वर बन गया और बोध गया में तो वह हज़ारों व्यक्तियों के लिए जीवन-मंत्र बन गया।

उत्तर प्रदेश में विनोबाजी एक वर्ष रहे और पाँच लाख से ऊपर एकड़ भूमि उन्हें प्राप्त हुई। उत्तर प्रदेश के भ्रमण के बाद वे कुछ समय काशी ठहरे। फिर बिहार की यात्रा पर निकल गये। बिहार में सत्ताईस महीने सतरह दिन प्रवास किया। बिहार के सबसे बड़े धनीमानी ज़मींदार दरभंगा के महराजाधिराज ने एक लाख अठारह हज़ार एकड़ ज़मीन का दान दिया। बिहार में तीन लाख दाताओं से २२ लाख एकड़ भूमि प्राप्त हुई। बिहार के बाद उत्कल, मद्रास, केरल, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, पंजाब, बंगाल, पूर्व पाकिस्तान तथा आसाम के गाँवों में पद यात्रा करते हुए आजकल (जनवरी सन् ६४) मध्यप्रदेश के गांवों में घूम रहे हैं। इस प्रकार सारे देश में १९६३ के अन्त तक लगभग ४२ लाख एकड़ भूमि प्राप्त हुई है और अब भी यदाकदा भूदान प्राप्त होता रहता है पर अब भूदान की कल्पना ग्रामदान में मिल गई है। और अब तक ग्रामदानों की संख्या लगभग ६००० तक पहुंच गई है और अब विशेष ज़ोर ग्रामदान, तालुकादान पर ही दिया जा रहा है।

उत्तर प्रदेश में उन्होंने एक नये दान का प्रारम्भ किया और वह था श्रमदान, यानी जिनके पास धरती नहीं है, वे अपने हाथ-पैर की

मेहनत से धरती को ठीक करने आदि के काम में मदद करें। पटना से सम्पत्तिदान शुरू हुआ। विनोबाजी ने लोगों से कहा कि लोग अपनी सम्पत्ति का कुछ भाग दें और उनके अनुसार वे स्वयं ही खर्च करें। चाँडिल में अलंकार-दान और कूपदान शुरू हुआ और बोध गया में जीवन-दान, यानी इस यज्ञ के लिए जीवन का समर्पण।

इस प्रकार भूदान-यज्ञ निरंतर व्यापक होता जा रहा है। उनकी इच्छा है कि जिनके पास ज़मीन नहीं है, उन परिवारों को कम-से-कम खुश्क ज़मीन पांच एकड़ तथा तर ज़मीन एक एकड़ अवश्य मिले विनोबाजी के इस क़दम से देश में एक नई हवा पैदा हो गई है। जिनके पास थोड़ी ज़मीन थी, उन्होंने भी बड़ी आत्मीयता के साथ उन्हें कुछ भाग दिया है। कहीं कहीं तो लोगों ने अपनी सारी की सारी ज़मीन उन्हें अर्पित करदी है। उन्हें लाख-लाख एकड़ के भी दान मिले हैं और मंगरोठ के लोगों ने तो गांव का गांव ही संत के चरणों में चढ़ा दिया था।

'जो दे उसका भी भला, जो न दे उसका भी भला', इस सिद्धान्त के अनुसार विनोबाजी सबकी मंगल कामना करते हुए अपने ध्येय की पूर्ति में लगे हैं। हम सबको चाहिए कि इस काम में मदद करें। यह काम देश के ४० करोड़ व्यक्तियों की भलाई का काम है।

डा० जे० सी० कुमारप्पा ने भूदान का ठीक ही मूल्यांकन किया है—

आर्थिक—साध्य : ग़रीबी का निवारण
साधन : ज़मीन का समुचित उपयोग और उत्पादन।

सामाजिक—साध्य : मालिकी का हक़ समाज को सौंपना।
साधन : जमीन का पुर्नवितरण।

राजनैतिक—साध्य : ज़मीन का शान्तिपूर्ण हस्तान्तरण
साधन : विचार प्रचार के ज़रिये लोगों की दृष्टि और उनके हृदय का परिवर्तन।

भूदान यज्ञ

अगर हम किसी को एक रोज़ भी खाना खिलाते हैं तो बहुत पुण्य मिलता है। एक रोज़ के अन्नदान का अगर इतना मूल्य है तो एक एकड़ ज़मीन का जिससे एक आदमी की सारी ज़िन्दगी बसर हो सकती है, कितना मूल्य होगा ? इसलिए दरिद्रनारायण के वास्ते सब लोगों से कुछ-न-कुछ मिलना ही चाहिए। इसी का नाम यज्ञ है। इसलिए हरएक शख्स से मैं कहता हूं कि भाई, मुझे कुछ-न-कुछ दो। —**विनोबा**

अधिकांश लोग आज भूख से व्यथित हैं, खाने के लिए उनके पास पर्याप्त अन्न नहीं, रहने के लिए घर नहीं, काम करने के लिये साधन नहीं, यह शोचनीय स्थिति आखिर कबतक रहेगी ? उसे क्यों रहने दिया जाय; और रहने कौन देगा ?

भूदान-यज्ञ सब कर सकते हैं

आज सब का पहला फर्ज़ है कि गांव-गांव में भूमिहीनों के लिए अधिकार-पूर्वक ज़मीन की माँग करें। जिनके पास ज़रूरत से ज़्यादा ज़मीनें हैं वे कर्तव्य से उसमें से अधिकांश हिस्सा बेज़मीनवालों को दें।

जिनके पास थोडी भी ज़मीन है, वे भी बे-ज़मीन वालों के प्रति अपनी सक्रिय सहानुभूति दिखलाने के लिए उसमें से कुछ ज़मीन उनके लिए अवश्य दें।

जिनके पास ज़मीन नहीं है पर धन दौलत है वे ज़मीन ख़रीद कर दें, कुंए बनवा दें, बैल जोड़ी, हल, बीज आदि साधनों का प्रबन्ध करदें।

जिन के पास ज़मीन और धन दोनों न हों, वे श्रम-दान दें, पड़त ज़मीन को दुरुस्त कर दें। भूदान के कार्यक्रमों में पैदल यात्रा आदि करके सहयोग दें। वकील लोग ग़रीब किसानों के सही मुक़दमों की मुफ़्त में पैरवी करें। लेखक भूदान पर लेख कविता आदि साहित्य लिखें तथा पढ़े लिखे प्रोफ़ेसर, मास्टर तथा दूसरे लोग गांवों में जाकर लोगों को व्याख्यानों द्वारा समझावें और सर्वोदय साहित्य का प्रचार करें। वैद्य डाक्टर हकीम बिना कुछ लिए ग़रीब रोगियों की सेवा करें तथा दवा दें।

विनोबाजी का अगला क़दम–भूमिहीन जागृत हों

गांव गांव में सभा करके ज़मीन की मांग करें

केवल ज़मीनवालों को समझाने से काम नहीं चलेगा, भूमिहीनों को भी उनका हक समझाना होगा और गांव-गांव में सभा करके मांग करनी होगी कि जैसे, हवा, पानी और सूरज की रोशनी परमेश्वर की पैदा की हुई है, उन पर सब का हक है, उसी तरह ज़मीन भी परमेश्वर की पैदा की हुई है, यह किसी ख़ास की मिल्कियत नहीं हो सकती। भूमि हमारी माता है और उसकी सेवा करने का हमारा हक़ है।

मां और बच्चे में कितना स्नेह-सम्बन्ध है, पर फिर भी भूख लगने पर बच्चा जब रोता है, तब मां का ध्यान उसकी तरफ़ जाता है और वह उसे दूध पिलाती है। उसी तरह भूमिहीनों को भी अपनी आवाज़ उठानी चाहिये। पर सब काम प्रेम से होना चाहिये।

विनोबाजी क्या चाहते हैं ?

(१) **भूदान-यज्ञ से साम्ययोग**–पहले क़दम के बतौर अपने परिवार के एक हिस्से की ज़मीन दें फिर पूरा का पूरा गांव अपनी सारी ज़मीन समर्पण कर एक ही कुटुम्ब बने।

(२) **क्रियात्मक उपासना**—नित्य हर एक अपने घर पर प्रार्थना करे और सप्ताह में कम से कम एक बार सब वर्ग के लोग स्त्री-पुरुष मिलकर सामुहिक प्रार्थना करें और घर घर में सर्वोदय पात्र रखें।

(३) **जीवन शोधन**—अपने आचार-विचार, साधन और व्यवहार शुद्ध रक्खें। शरीरश्रम का व्रत लें। दुःखी लोगों की सेवा करें।

(४) **विकेन्द्रित अर्थ व्यवस्था**—गांव में होने वाले कच्चे माल से गांव में ही पक्का माल बनावें। जहां तक सम्भव हो, अपनी ज़रूरत की चीज़ें गांव में ही पैदा करें। खादी उत्पत्ति को ग्रामोद्योग का राजा समझें। हाथचक्की, तेलघानी आदि का उपयोग करें।

भूमि दान दो–भूमि दान दो

प्रभु ने देकर जन्म सभी को, एक समान संवारा है।
पृथ्वी, पानी पवन सभी पर, अधिकार हमारा है।।
भेद-भाव मिट गया, बह रही विमल प्रेम की धारा है।
भूमि-दान दो, भूमि-दान दो, यही हमारा नारा है।।
सत्य, अहिंसा द्वारा होंगे, सारे काम हमारे।
दो भूमि दान तुम प्यारे, भारत के राज दुलारे।।

भूमिदान यज्ञ के नारे

१. ज़मीन किसकी	जो जोतेगा उसकी।
२. क़दम बढ़ेंगे कैसे	क्रांति से, पर शान्ति से।
३. यह होगा कैसे	समझाकर प्रेम से।
४. ज़मीन पर सब का हक़ है	ज़माने की मांग है।
५. हवा पानी सभी को	वैसे ज़मीन हर एक को।
६. महनत जिसकी	दौलत उसकी।
७. जागृत जनता दुःख न सहेगी	धन व धरती बँटकर रहेगी।
८. हमारे गांव में बे-ज़मीन	कोई न रहेगा।
९. गांव गांव में गूंजे नारा	सर्वोदय है लक्ष हमारा।
१०. घर घर से आवे आवाज़	ग्रामदान से ग्राम स्वराज्य।

आज हमारा हिन्दुस्तान सामाजिक असन्तोष और आर्थिक विषमता के जाल में फंस गया है। उसमें से सही सलामत बच निकलने के लिये ही यह भूदान-यज्ञ आन्दोलन है। अगर हमारे यहां समाज-रचना में परिवर्तन नहीं होता है तो हम नष्ट हो जावेंगे।

देश को हिंसात्मक क्रांति से बचाने के लिये अपनी आवश्यकता से अधिक ज़मीन भूमि-हीनों को देकर पुण्य के भागी बनिये।

पेट भर खाओ, पर पेटी भर मत रखो

भूखे को एक दिन खाना खिलाने से पुण्य होता है, पर रोज़रोज़ कौन खिला सकता है? इसलिये ग़रीबों को काम दो, ज़मीन दो, साधन दो।

विनोबाजी की दिनचर्या

प्राचीन भारत के ऋषि-महर्षि तथा धर्मपरायण लोग तथा आश्रमों में पढ़ने वाले विद्यार्थी ब्रह्ममुहुर्त (सुबह ४ बजे) में उठजाया करतेथे। यह समय ईश्वर-भजन, चिन्तन, मनन और पठन के लिए सर्वश्रेष्ठ होता है।

विनोबाजी ठीक तीन बजे रात को उठ जाते हैं और शौचादि नित्यकर्म से निवृत होकर स्वाध्याय के लिए तथा कुछ लिखने के लिए बैठ जाते हैं। जहां घड़ी में चार बजे कि वे आगे के मुक़ाम के लिए पैदल चल देते हैं। उनके साथी भी उस समय तक तैयार हो जाते हैं।

रास्ते में चलते-चलते ही प्रातःकाल की प्रार्थना होती है। प्रार्थना के बाद जिस किसी को विनोबाजी से बातचीत करनी होती है, वे रास्ते में चलते-चलते बात करते जाते हैं। इस वृद्धावस्था में भी विनोबाजी इतनी तेज़ी से चलते हैं कि कई नये साथी पीछे रह जाते हैं। प्राय: एक घंटे में उनकी लगभग तीन मील की चाल है। कभी-कभी तो वे अपना सामान भी जितना वे उठा सकते हैं, खुद उठाकर चलते हैं। उनका कहना कि मनुष्य को अपने सामर्थ्य भर जितना काम किया जा सकता है, खुद करना चाहिए।

रास्ते में जहां ६॥ बज जाते हैं, वहीं पर ज़ंगल में ही सब साथी बैठ जाते हैं और साथ लिया हुआ नाश्ता कर लेते हैं। विनोबाजी इस समय दूध, शहद, मूंगफली, पिंडखजूर ऐसी ही चीजें लेते हैं। आध घंटे बाद फिर यात्रा शुरू हो जाती है। रोज़ाना सात आठ मील की यात्रा रहती है। आगे का मुक़ाम दूर हो तो नौ दस मील भी चलते हैं।

पहुंचने के स्थान से मील आध मील पहले ही सैंकड़ों-हज़ारों की संख्या में स्त्री और पुरुष उनके स्वागत के लिए आ पहुंचते हैं। विनोबाजी अपने स्थान पर पहुंचते ही हाथ-पैर धोकर सभा स्थान पर पहुंच जाते हैं और लोगों को अपना संदेश सुनाते हैं। इसके बाद थोड़ी देर विश्राम कर आये हुए लोगों से बातचीत करते हैं।

इस तरह लगभग दस बज जाते हैं। इसके बाद स्नान करते हैं और आई हुई डाक तथा अखबार देखते हैं। बाद में दूध या दही या फल या आटे का लपटा ऐसी ही चीज़ें भोजन में लेते हैं और थोड़ा विश्राम करके आये हुए पत्रों का उत्तर लिखवाते हैं तथा लोगों से बातचीत करते हैं। इस तरह लगभग तीन बज जाते हैं।

तीन बजे गांव के सब लोग इकट्ठे हो जाते हैं और विनोबाजी का चर्खा-यज्ञ का कार्यक्रम शुरू हो जाता है। आध घंटे तक कातने का कार्यक्रम रहता है फिर प्रवचन शुरू होता है। सायंकाल के समय सामुहिक मौन प्रार्थना होती है। प्रवचन व प्रार्थना के बाद 'गीता प्रवचन' पुस्तक जो भाई लेते हैं उन पर हस्ताक्षर करते हैं। इन सब कार्यक्रमों के साथ-साथ विनोबाजी ने श्रमदान का भी कार्यक्रम रखा है। वे स्वयं, उनके साथी तथा और लोग जो चाहें, फावड़े-कुदाली लेकर गांव के पास की खराब ज़मीन को ठीक करते हैं। इस तरह सुबह से लेकर शाम तक विनोबाजी निरन्तर कार्य में लगे रहते हैं। सायंकाल की प्रार्थना के बाद कुछ स्वाध्याय करते हैं या आये हुए लोगों से बातचीत करते हैं। फिर रात के ८॥ बजे मौन लेकर ९ बजे सो जाते हैं।

विनोबा वाणी

जिसके चार बच्चे हैं, वह अपने पांच बच्चे हैं, ऐसा समझे। यह पांचवां बच्चा कौन यानी ग़रीब जनता। यह बच्चा दुनिया में पड़ा है। इसके लिये अपनी सम्पत्ति का, बुद्धि का, समय का कुछ हिस्सा दें तो सारा सवाल हल हो जाता है। घर में अगर कोई नया बच्चा पैदा हुआ तो उसकी हम शिकायत तो नहीं कर सकते हैं बल्कि अपने खर्चों को तथा अपने जीवन को इस तरह ढाल लेते हैं जिससे उसका भी पालन पोषण हो सके। इसी प्रकार ग़रीब जनता के लिए भी हमें अपनी संपत्ति का कुछ हिस्सा देते रहना चाहिए। इससे अपरिग्रह तथा त्यागमय जीवन की अच्छी शुरुआत होगी। आखिर यह सब संपत्ति समाज से ही तो हमें प्राप्त हुई है।

सम्पत्तिदान यज्ञ

२४ अक्टूबर १९५२ को विनोबाजी ने प्रार्थना प्रवचन में कहा—"भूमिदान यज्ञ का काम जैसे जैसे आगे बढ़ा, वैसे वैसे यह बात भी साफ़ होती गई कि संपत्ति का हिस्सा मांगे बगैर विचार की पूर्ति नहीं हो सकती है। मैं चाहता तो हूँ कम से कम छठा हिस्सा, फिर लोग सोच समझकर जो भी दें।"

"जैसे बारिश में दूर दूर से पानी आता है और जहां ढ़लाव हैं वहां दौड़ जाता है ताकि समुद्ररूपी गढ़ा भरे, पूर्ण हो, वैसे ही हर घर से और हर व्यक्ति से कुछ-न-कुछ सम्पत्तिदान देना आरम्भ हो और जो सबसे नीचे है, सबसे दुःखी हैं उनके लिए उसका उपयोग हो।"

"यह एक धर्म-विचार है। मनुष्य को आसक्ति से छुड़ाकर अपरिग्रही बनाना इसका उद्देश्य है। इसलिए जो बड़े-बड़े परिग्रही हैं उन्हींके पास दान मांगने को पहुंचना है, ऐसी बात नहीं है। आसक्ति तो एक लंगोटी की भी हो सकती है इसलिये हर व्यक्ति के पास पहुंचकर विचार समझाना है।"

गांधीजी के साथी श्री कृष्णदास जाजू ने समझाकर कहा "हर व्यक्ति चाहे उसकी आमदनी कितनी ही क्यों न हो, अपनी सामर्थ्य के अनुसार संपत्तिदान दे सकता है, देना चाहिये क्योंकि समाज से वह हमेशा कुछ-न-कुछ लेता है इसलिए यह उसका धर्म है कि समाज को बदले में कुछ दे।"

सम्पत्तिदान का स्वरूप

जहां तक संपत्ति प्राप्त करने का सवाल है, उसका ज़रिया शरीर श्रम होना चाहिए ताकि शोषण और विषमता की गुँजाइश न रहे, सम्पत्ति उपार्जन का साधन भी शुद्ध रहना चाहिए।

मनुष्य के पास शरीर का, विद्या का या धन सम्पत्ति का जो भी बल है, वह उसने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से समाज से ही प्राप्त किया

है, इसलिए उसका उपयोग समाज के हित के लिए ही होना चाहिए। सम्पत्ति-दान के इस विचार को अमल में लाने की दृष्टि से पहले क़दम के तौर पर सम्पत्ति-दान का स्वरूप यह रखा गया है कि दाता अपनी आमदनी का या किसी कारण वश यह सम्भव न हो, तो अपने गृहस्थी-व्यय का एक हिस्सा समाज के लिए अर्पण करता रहे। वह हिस्सा व्यक्ति की आमदनी के परिमाण पर अवलंबित रहे और उत्तरोत्तर बढ़ता जाय।

दरिद्रनारायण को अपने परिवार का एक सदस्य मानकर फिलहाल आमदनी का छठा हिस्सा और व्यय का हो, तो पांचवां हिस्सा एक सामान्य परिमाण माना जाय।

आमदनी से मतलब, इनकम टैक्स आदि अनिवार्य खर्च बाद करके तमाम ज़रियों से होनेवाली कुल आमदनी समझनी चाहिए। गृहस्थी-खर्च में खान-पान, निवास आदि के अलावा बालकों की शिक्षा, विवाह आदि प्रसंगों के खर्च भी शामिल समझने चाहिए।

सम्पत्ति-दान में आमदनी का छठा हिस्सा मांगा जाता है, परन्तु यह कोई टैक्स नहीं है। इसलिए दाता अपनी इच्छा के अनुसार कम-ज़्यादा हिस्सा भी दे सकता है, तथापि जिनकी आमदनी बिल्कुल निर्वाह जितनी ही है या उससे भी कम है, उन्हें भी सम्पत्ति-दान-यज्ञ में ज़रूर शामिल होना चाहिए, पर उनका हिस्सा प्रतीक के तौर पर नाम मात्र ही रह सकता है। अभी सम्पत्ति-दान में हिस्से की बात रखी गयी है, पर लक्ष्य तो यह है कि अपनी सारी सम्पत्ति समाज की है, ऐसा समझकर व्यक्ति समाज की ओर से उसके ट्रस्टी के तौर पर व्यवहार करने को तैयार हो। किसान अपना सम्पत्ति-दान अनाज के रूप में दे सकता है।

कार्यकर्ताओं को हिदायतें

(१) भूदान-आन्दोलन में काम करनेवाले हर कार्यकर्ता को सम्पत्ति-

दान में शरीक होना चाहिए तथा यदि उसके पास ज़मीन हो, तो दान भी करना चाहिए।

(२) जहाँ कहीं हम भूदान की मांग करते हैं, वहाँ सम्पत्ति-दान की मांग भी उतने ही आग्रह से करें।

(३) हमें यह ध्यान में रखना चाहिये कि जिस किसी ने भूदान में ज़मीन दी है, उसको भी सम्पत्तिदान-यज्ञ में शामिल होना चाहिए।

(४) हम अक्सर अमीर और मध्यम स्थिति के लोगों से सम्पत्ति-दान के लिए प्रयत्न करते हैं, पर हमें ग़रीबों से भी सम्पत्तिदान प्राप्त करने का अवश्य प्रयत्न करना चाहिए। सम्पत्ति की मिलकियत का मोह ग़रीबों में भी होता है। उनके दान की रकम थोड़ी-सी होगी, परन्तु उससे एक व्यापक वातावरण तैयार होगा और इसका असर सब पर पड़ेगा।

सम्पत्तिदान का उपयोग

विनोबाजी के सम्पत्ति दान के पीछे एक निश्चित योजना है। जीवन को ऊंचा उठाने का एक लक्ष्य असत् से सत् (सच्चाई) की ओर ले जाना। उसके उपयोग के लिए वे कहते हैं—

सम्पत्तिदान की रकम का उपयोग भूदान मूलक, ग्रामोद्योग प्रधान, अहिंसक क्रांति के उद्देश्य की पूर्ति के लिये किया जाय। उदाहरण के लिए कुछ बातें नीचे दी जाती हैं, जिसमें से किसी एक या अधिक में संपत्तिदान का उपयोग किया जा सकता है।

(१) इसका उपयोग भूमिहीनों को बीज, बैल, औजार आदि साधन देने में तथा ज़मीन को तैयार करने में हो।

(२) भूदान यज्ञ के सिलसिले में होने वाले खर्च के लिए।

(३) निस्पृह त्यागी लोक सेवकों के निर्वाह के लिए।

(४) सर्वोदय साहित्य के प्रचार में मदद। साहित्य के प्रचार के बारे में साहित्य मुफ़्त में बांटने की पद्धति न रहे, पर यह कम कीमत में

बेचा जा सकता है। विद्यार्थी या कार्यकर्ता आदि को अधिक रियायत दी जा सकती है। सार्वजनिक पुस्तकालयों को मुफ़्त में भी दिया जा सकता है।

सबसे बड़ी बात यह है कि दाता ही स्वयं खर्च करे, वही उस धन का ट्रस्टी हो। वह अपनी आमदनी का व्यवस्थित हिसाब रखे, उसका छठा हिस्सा या जो भी निश्चित करे उसका एक तिहाई अपनी इच्छा से अपनी रुचि के अनुसार सर्व जन कल्याण के कामों में खर्च करे। शेष दो तिहाई ऊपर लिखे कामों में व्यय करे।

किन किन कामों में कितनी कितनी रकम खर्च की है उसका विवरण वर्ष के अन्त में अपने ज़िले के सर्वोदय कार्यालय को या सर्व सेवा संघ राजघाट वाराणसी को भेज देना चाहिये। दाता चाहे तो इस रकम के उपयोग के बारे में सर्व सेवा संघ से सलाह ले सकता है या रकम संघ को ही उपयोग के लिए भेज सकता है। यह सब कुछ दाता की इच्छा पर निर्भर है।

यदि दाता चाहे कि उसके दान के हिस्से या आमदगी का अन्दाज़ गुप्त रहे तो वह हिसाब भेजते समय या रकम भेजते समय 'गुप्त रखी जाय' ऐसा लिख भेजें।

अनुरोध

दान और त्याग की परम्परा हमारे देश में हज़ारों वर्षों से चली आरही है। सभी धर्म इसका अनुमोदन करते हैं। अतएव सम्पत्तिदान यज्ञ जैसे पवित्र काम में सबको योग देना चाहिए चाहे वे ग़रीब हों या धनिक।

राज्यसत्ता धारी, सरकारी अधिकारी, व्यापारी उद्योगपति, तथा बुद्धि प्रधान पेशों में लगे हुए लोगों से विशेष आशा रखी जाती है। मंत्रीगण, धारासभाओं के सदस्य, राजनैतिक और सामाजिक नेता, आदि पर समाजहित की विशेष जिम्मेदारी है। इसलिए वे इसमें अवश्य योग दें, खुद इसमें शामिल होकर तथा दूसरों को भी प्रेरणा देकर।

नोट—संपत्तिदान के पत्र का नमूना सर्व सेवा संघ राजघाट काशी से मंगालें।

बुद्धिदान, समयदान

साधनदान की कल्पना ने ही बुद्धिदान और समयदान की सद्-भावना को जन्म दिया। जो धन दे सकते हैं वे भी तथा जो धन नहीं दे सकते हैं वे भी अपनी बुद्धि का उपयोग दरिद्रनारायण की सेवा में कर सकते हैं। आज तो वकील गुनाहों पर और डाक्टर रोगियों पर जीने वाले हो गये हैं। बाप दादा धन नहीं छोड़ गये पर पढ़ा लिखाकर विद्वान बना गये तो हम बुद्धि बेच बेच कर ही धन बटोरेंगे पर यह बात उचित नहीं है।

विनोबाजी कहते हैं—"हम देख रहे हैं कि लोग बुद्धि का उपयोग समाज हित को छोड़कर अपने स्वार्थ के लिए कर रहे हैं—चाहे वह स्वार्थ व्यक्ति का हो, जाति का हो, समूह का हो तो उससे दूसरों को हानि पहुंचती ही है। एटम बम भी ऐसे ही कुछ बुद्धि के उपयोग से बना है। पर यह बुद्धि का दुरुपयोग है। सदुपयोग तो यह है कि लोगों का भला कैसे हो, ऐसे उपाय हम सोचें, सब को नेक सलाह दें, समय निकाल कर अपढ़ लोगों को पढ़ावें। वकील लोग ग़रीब लोगों के झगड़े आपस में बैठकर न्याय बुद्धि से निपटा दें, अदालत में जाना पड़े तो मुफ़्त में पैरवी करदें या कम से कम फ़ीस लें। डाक्टर वैद्य लोगों को निरोग रहने के उपाय बतावें। ऐसा साहित्य लिखें और प्रचार करें जिससे लोगों में रोग ही पैदा न हों तथा ग़रीबों का इलाज मुफ्त में करें या नाम मात्र के दाम लेकर उनकी सेवा करें। ये सब आसान और करने लायक सहज काम ह।

समयदान की भी यही बात है। हम अपने चौबीसों घंटे अपने ही स्वार्थ के लिये लगाते हैं। यह उचित उपयोग नहीं है। हमें चाहिए कुछ समय परमार्थ और सेवा के लिए भी लगावें। घंटा, दो घंटा, चार घंटा जितना भी अधिक से अधिक समय निकाल सकें, निकाल कर

लोगों की सेवा में, उनके दुख दर्द दूर करने में लगावें। अपने अड़ोस पडोस, मोहल्ले में गांव में लोगों से संपर्क करें और जहां जैसी जरूरत हो मदद करें।

साधन दान, कूप दान, आभूषण दान

प्रयत्न तो यही होना चाहिए कि लोग संपत्तिदान मुख्य रूप से दें ताकि दान और सेवा का सिलसिला बराबर चलता रहे पर साधन-दान की भी शुरू शुरू में अति आवश्यकता होती है। क्योंकि जिन भूमिहीन ग़रीब भाइयों को ज़मीन दी जाती है उनको खेती करने के लिए बीज, खाद, बैल, कुंए आदि साधनों की जरूरत तत्काल पड़ती है। इसके लिए लोगों से एक मुश्त रकम भी मांगना चाहिए ताकि उससे खाद बीज बैल आदि खरीद कर ग़रीबों को दी जा सके।

इस सिलसिले में श्रीमती जानकीदेवी बजाज ने बहनों के सामने आभूषणदान यानी अपने कुछ ज़ेवर देने की प्रेरणा की। उनके प्रयत्न से बहुत सी बहनों ने अपनी इच्छा और समझ के अनुसार अपने ज़ेवर दिये जिसका उपयोग भूमिहीनों को ज़मीन के लिए कुँए बनवाने में हुआ। इसके बाद कूपदान का भी सिलसिला चला। पं० नेहरू से लेकर सड़क के भिखारी तक ने कूपदान के लिए दान दिया जिससे सैंकड़ों कुंए बनवाये गये। अभी भी समय समय पर आवश्यकतानुसार लोगों से ये दान माँगे जाते हैं।

श्रमदान, श्रमप्रतिष्ठा

सार्वजनिक काम में सीधे श्रम देने का नाम है—श्रमदान! श्रम का अर्थ है परिश्रम करना और थकना। आदर्श यह है कि मन से अपना काम करें हम, थक कर ही विश्राम करें हम। यदि सब मिलजुल कर काम करलें तो फिर सच्चा स्वराज्य हो जाय।

गांधीजी ने कहा था—"यदि सब लोग अपनी रोटी के लिए खुद महनत करें तो ऊंच नीच का भेद ही दूर हो जाय।" पर आज तो लोग खुद कहां महनत करते हैं। वे तो दूसरों को रुपयों का लालच दिखाकर उनसे महनत लेकर खुद मोटे बनना चाहते हैं।

जो शख्स पसीने से रोटी कमाता है वह धार्मिक पुरुष, कर्मयोगी पुरुष, हो जाता है। उसके जीवन में पाप आसानी से प्रवेश नहीं हो सकता। दिन भर काम कर लिया तो रात को गहरी नींद आती है। न दिन में पाप कर्म करने के लिए समय मिलता है, न रात को कुछ सूझता है क्योंकि थका मांदा शरीर आराम चाहता है। जिस जीवन में पाप चिंतन की गुंजाइश ही न हो वह धार्मिक जीवन होना ही चाहिए हाँ, जो श्रम करना टालता है, निठल्ला बैठा रहता है, उसका जीवन पापमय हो जाय तो कोई आश्चर्य नहीं क्योंकि उसके पास समय फालतू पड़ा है। जहाँ समय फालतू पड़ा है वहाँ इधर उधर की बातें सूझती हैं, वहाँ शैतान का काम शुरू हो जाता है।

श्रम करने वाला पुरुष शरीर से भी खूब तन्दुरुस्त रहता है। उसे भूख खूब खुलकर लगती है। जेल में जो लोग आटा पीसते हैं उन्हें तो भूख ऐसी लगती है कि आटे तक को फांक जाते हैं और हजम कर लेते हैं। श्रम करने से खाना अच्छी तरह हजम होकर शुद्ध रक्त बनता है जिससे बदन में हमेशा स्फूर्ति बनी रहती है। कोई बीमारी पास नहीं आती। कहा है "तन्दुरुस्ती हज़ार न्यामत," "पहला और सबसे बड़ा सुख निरोगी काया" यह सुख श्रम करने से ही प्राप्त हो सकता है।

आदमी चाहे कैसी ही श्रेणी में हो, व्यापारी हो, लखपती हो, प्रोफ़ेसर हो, डाक्टर, इन्जीनियर, मैनेजर, विद्यार्थी या साधु सन्यासी हो उसे कुछ न कुछ श्रम करना ही चाहिए। गृहस्थी लोगों को घरके कामों में जैसे घरकी सफ़ाई, झाड़ू लगाना, बरतन मांज लेना, कपड़े धोलेना, रसोई बनाना आदि कामों में थोड़ी बहुत मदद करते रहना चाहिए।

ऐसा नहीं समझना चाहिए कि ये सब काम केवल स्त्रियों के लिए ही हैं। शास्त्रों में कहा है—"यत्रः नार्यस्तु पूज्यन्ते, तत्रः रमन्ते देवताः" अर्थात् जिस घर में स्त्रियों का आदर होता है, उनको बराबरी का समझा जाता है, उस घर में देवताओं का वास होता है। समय के अनुसार कोई कम करे या ज़्यादा पर स्त्री पुरुष दोनों को मिलजुल कर तथा बच्चों को भी साथ लेकर ये सब काम थोड़ा या बहुत रोज़ाना करना चाहिये।

समय निकाल कर थोड़ी देर अपने कपड़ों के लिए चरखे पर सूत भी कात लेना चाहिए। किसी श्रम को तथा काम को नीचा नहीं समझना चाहिए। काम अधिक होने पर यदि नौकर भी रखा जाय तो उसको सहायक ही समझना चाहिए। नौकर रहते हुए भी ऊपर लिखे थोड़े बहुत काम खुद को अवश्य ही करते रहना चाहिए।

हमारे यहां कुछ ऐसा दूषित विचार फैल गया है कि जो कोई ज्ञानी हैं, (साधु, संन्यासी तथा ऊंचे पढ़े लिखे लोग) वे हाथ से कोई काम करें, श्रम करें तो बुरी बात समझी जाती है। ज्ञानी खा तो सकते हैं, पर काम नहीं कर सकते। अगर कोई सवेरे उठकर पीसता है तो वह ज्ञानी नहीं मज़दूर कहलायगा। ज्ञानी को योग (कर्म) का काम नहीं करना चाहिए। बूढ़ों को भी कोई काम नहीं करना चाहिए। बच्चों को भी घर का काम या सेवा का काम, अपना खुद का काम नहीं करना चाहिए। अमीर घराने के बच्चे इसीलिए बीमार और निकम्मे हो जाते हैं क्योंकि उनके सब काम नौकर करते हैं। इसी में बडप्पन समझा जाता है। इस तरह बूढ़े, बच्चे, ज्ञानी, व्यापारी, वकील, अध्यापक, विद्यार्थी किसी को काम नहीं करना चाहिए, तो ऐसा समाज आगे कैसे बढ़ेगा। मजबूरी से जो काम करना पडता है, वह सच्चा श्रम नहीं है। उसमें आनंद नहीं है। श्रम करना श्रेष्ठ है, इस भावना से काम करने वाला श्रम निष्ट पुरुष है। जो श्रम करता है उसका समाज में आदर होना चाहिए।

हमारे यहां महतर (भंगी) के काम को सबसे नीचा काम समझा जाता है। पर यह बड़ा दूषित विचार है। महतर तो बड़ा उपकारी है। यदि आज वह यह सेवा का काम छोड़दे तो सारा शहर गंदा हो जाय, बीमारियां फैल जायं और लोगों का जीना दुर्भर हो जाय। महतर का अर्थ तो है "महतर" ऊंची श्रेणी वाला। उसकी तो समाज में इज्जत होनी चाहिए। एक ऐसा दूषित विचार चला आरहा है कि मल मूत्र सफ़ाई के काम को हमने नीच काम समझ लिया है। जिस तरह मुँह से कफ़ निकलता है, नाक से सेडा निकलता है, बदन से पसीना निकलता है, इसी तरह भोजन की पाचन क्रिया होकर सारसार पदार्थ शरीर ग्रहण कर लेता है और फ़ालतू बचा हुआ पदार्थ मल रूप में निकल जाता है उसमें ऐसी घृणा की क्या बात है। घर के लोग अपने बच्चे की टट्टी साफ़ करते हैं या नहीं, टट्टी से भरे हुए कपड़े धोते हैं या नहीं, बीमार आदमी अपने कपड़े, बिस्तर, बिछौने मल-मूत्र से भर दे तो उसे साफ़ करते हैं या नहीं। हाथ धोये, साफ़ हुए। डाक्टर लोग चीरा फाड़ी का काम करते हैं। उसमें कैसे कैसे पदार्थ निकलते हैं पर उससे वे घृणा तो नहीं करते। इस तरह यह सब हमारा विचार दोष है।

गाय बैल के मल-मूत्र को तो हमने पवित्र मान लिया है। यहां तक कि उससे चूल्हे को और आंगन को लीपते हैं। उसके कंडे बनाकर चूल्हे में जलाते हैं। गौमूत्र का भी कई तरह से उपयोग करते हैं। घोड़े की लीद और बकरी की मैंगनी का भी कई कामों में उपयोग होता है। कई जानवरों की बीटें दवाई के काम में आती हैं। इन सबसे ता हमें घृणा नहीं होती। इस तरह गहराई से, शुद्ध बुद्धि से निष्पक्षपात से विचार करेंगे तो मनुष्य के मल मूत्र की सफ़ाई करने में न तो घृणा की बात है और न यह नीच काम ही हैं। चूंकि महतर भाई पढ़े लिखे नहीं हैं और न इन्हें सफ़ाई शास्त्र की शिक्षा दी गई है इसलिए पुरानी प्रणाली से ही, अस्वच्छता से ही यह काम कर रहे हैं। पर अब सरकार का तथा पढ़े लिखे विचारवान् लोगों का ध्यान भी इस ओर गया है और

तरह तरह की शोध करके ऐसे उपाय निकाले जा रहे हैं जिससे यह काम बहुत सफ़ाई से होजाय, मल मूत्र का उपयोग भी हो जाय। हमारे पाखाने और उसमें रखे बरतन एकदम स्वच्छ रहें। कहीं भी गंदगी का नाम न रहे। इसके लिए गांधी स्मारक निधि की भंगी मुक्ति समिति की ओर से व्यारा (जिला सूरत) में सफ़ाई विद्यालय खोला गया है। वहां इस कार्य की शिक्षा दी जाती है। तरह तरह के वहां शोध हो रहे हैं। वहां सभी जाति के (ब्राह्मण, बनिये भी) लगभग पचास छात्र शिक्षा पा रहे हैं। सफ़ाई दर्शन नामक मासिक पत्र भी वहाँ से निकलता है।

आजकल भी कभी-कभी जब महतर लोग हड़ताल कर देते हैं तो अच्छे-अच्छे पढ़े लिखे लोग तथा बड़े कहलाने वाले लोग सब मिलजुल कर सफ़ाई का काम करने लगते हैं। यहां तक कि लोगों ने घरों की टट्टियों के हंडे उठाकर मैला गाड़ी में डाले हैं। अतएव यह तो एक परिपाटी की बात है। किसी काम को समाज के अधिकांश लोग करने लग जाते हैं तो सब एकसे होजाते हैं। कौन किस को बुरा कहे। ऐसे कामों में साहस की जरूरत होती है। जिस काम को हम सही समझें, चाहे कोई दूसरा उसके बारे में कुछ भी सोचे, हमें हिम्मत रख कर उस काम को करते रहना चाहिए।

गांधीजी के आश्रम में कोई भंगी नहीं रहता था। स्त्री पुरुष सब मिल कर मलमूत्र की सफ़ाई, आश्रम की सफ़ाई आदि सब काम कर लेते थे। वहां बड़े-बड़े विद्वान पुरुष, वकील, प्रोफ़ेसर, योगी, ब्राह्मण, हिन्दु, मुसलमान, जैन, ईसाई सभी श्रेणी के पुरुष रहते थे। स्वयं गांधीजी, उनकी पत्नी बा, विनोबाजी, काका कालेलकर आदि सभी इसमें भाग लेते थे। म० गांधीजी ने इतने ऊंचे विद्वान और बेरिस्टर होते हुए भी अपने जीवन में श्रम की प्रतिष्ठा को साक्षात्कार करके दिखाया है। पाखानों की सफ़ाई, बुनाई, खेती, मोची का काम, गो सेवा, महारोगी (कोढ़ जैसी बीमारी) की सेवा, छापाखाने का काम इस तरह उन्होंने

अपार श्रम किये। इसके सिवा शिक्षा का काम भी उन्होंने किया। राज्य से लड़ाई और सत्याग्रह जैसे क्षात्र धर्म भी उन्होंने अद्भुत रूप से कर दिखाये। पूज्य विनोबाजी भी निरंतर ३० वर्षों से तरह-तरह के श्रम के काम करते आरहे हैं। आश्रम में उन्होंने प्रतिदिन ६४० तारों की गुंडियां यानी १६-१६ लड़ियां कातीं। कातते समय वे पढ़ाते भी रहे। दाहिना हाथ थक जाने पर वे बायें हाथ से कातते। सुरगांव में उन्होंने मलमूत्र सफ़ाई का काम किया और परंधाम आश्रम में खेती का तथा कुँए खोदने का काम करते थे।

महाभारत का उदाहरण—धर्मराज ने राजसूय यज्ञ किया था। भगवान् कृष्ण भी वहां गये थे। वे कहने लगे, मुझे भी कुछ श्रम का काम दो। धर्मराज ने कहा—आपको क्या काम दें? आप तो हमारे पूजनीय हैं, आदरणीय हैं। आपके जैसे ऊंचे पदवालों के योग्य तो ऐसा कोई काम नहीं दीखता है। भगवान ने कहा—हम आदरणीय हैं तो क्या नालायक हैं? हम भी काम कर सकते हैं। तो धर्मराज ने कहा—आप ही अपना काम चुन लीजिये। तो भगवान ने अपने लिये झूंठी पत्तलें उठाने और आँगन लीपने का काम चुना।

आप भी कुछ काम चुन लीजिए। कुछ घरके, कुछ समाज के, कुछ देश के। परिश्रम के कामों में कुछ समय अवश्य लगाइये।

सूतांजली और सूतदान

श्रमदान के रूप में विनोबाजी ने लोगों के सामने एक बहुत ही आसान काम रखा है। म० गांधीजी के उपकारों को सारा देश मानता है। उन्होंने अपना सर्वस्व त्याग कर, स्वयं कष्ट सहकर देश की जो सेवा की है, उसके प्रति हमारा भी कुछ कर्तव्य है। उनका स्वर्गवास ३० जनवरी को हुआ था। इस तारीख से १२ फरवरी तक सारे देश में सर्वोदय पक्ष मनाने का आयोजन रखा गया है। म० गांधीजी को हाथ से कता हुआ सूत बड़ा प्रिय था। चरखे को (सूत कातने को)

उन्होंने अपने जीवन में बड़ा महत्व दिया था। नियमित रूप से वे रोजाना सूत कातते थे और लोगों को इसका उपदेश देते थे। अतएव उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजली यही हो सकती है कि हम इस पक्ष में अपने हाथ से कते सूत की कम से कम एक गुंडी (६६० तार) श्रमदान रूप में उनको अर्पण करें। ये गुंडियां खादी भंडारों में, या जिस प्रांत में जो स्थान निश्चित हों, वहाँ दी जा सकती हैं।

कई वर्षों से यह कार्यक्रम चल रहा है। एक एक गुंडी करके यह सूतांजली लगभग आठ दस लाख हो जाती है। पर देश की विशाल जन-संख्या के सामने यह बहुत कम है। इसका कुछ हिस्सा तो सर्व सेवा संघ को दिया जाता है जिससे कि आँदोलन खर्च चल सके। कुछ हिस्सा स्थानीय संस्थाओं को दिया जाता है।

सन् १९५९ तक भूदान आंदोलन व सर्व सेवा संघ कार्यक्रम के लिए गांधी स्मारक निधि से सहायता मिलती थी। पर यह आश्चर्य की बात है कि विनोबाजी ने आती हुई लक्ष्मी को लौटा दी। १ जनवरी सन् ५७ से उन्होंने वहाँ से सहायता लेना बंद कर दिया और सर्व सेवा संघ को यह राय दी कि अपना खर्चा सूतांजली और संपत्तिदान में से होने वाली आय से ही चलावें। आगे चलकर ३० जनवरी सन् १९५९ से इसका भी सहारा छोड़ दिया गया और अब तो केवल सर्वोदय पात्र, सूतदान और श्रमदान के रूप में ही काम को चलाते रहने की राय दी है। अर्थात् आम जनता के सहारे से ही यह काम चलाया जाय। ऐसे हैं विनोबा और ऐसे हैं उनके आंदोलन के अद्भुत संकल्प।

जीवन दान

१९ अप्रेल १९५४ सर्वोदय सम्मेलन बोधगया

सम्मेलन की अध्यक्षा श्रीमती आशादेवी आर्यनायकम ने श्री जयप्रकाश नारायण से बोलने के लिये निवेदन किया।

वे बोलने खड़े हुए, बोलते बोलते उनकी वाणी में ओज बढ़ गया—"भूदान यज्ञ आन्दोलन ने यह सिद्ध कर दिया है कि अहिंसात्मक प्रक्रिया संभव है, कमी सिर्फ काम करने वालों की है, यह प्रत्यक्ष क्रान्ति का काम है, अब एक बरस नहीं—जीवनदान का प्रश्न है, मेरा सौभाग्य है कि जीवनदानियों की सूची में मैं पहला नाम अपना लिखा रहा हूँ।"

अगले दिन विनोबाजी ने भी जयप्रकाश नारायण को पत्र लिखा—कल जो आपने आह्वान किया तो उसके जवाब में 'भूदान यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसात्मक क्रांति के लिये मेरा जीवन समर्पण।"

इस तरह जीवनदान का श्री गणेश हुआ, हज़ारों लोगों ने अपने अपने नाम दिये पर उनकी सही भावना का आत्मसात थोड़ों को ही हुआ। जीवनदान का ग़लत अर्थ समझकर लोग आ गये उनको काम भी सौंपा गया पर कुल मिलाकर जीवनदानियों का कोई प्रेरणास्पद परिचय देश को नहीं मिल सका।

विनोबा ने परिस्थिति समझकर जीवनदान की भावना का रूपान्तर लोकसेवक के रूप में किया, लोक सेवक चाहे अपने ही क्षेत्र में रहें, श्रम निष्ठ जीवन बितावें और अपना चिन्तन सर्वस्व समाज की सेवा में लगावें।

आज देश में कई हज़ार लोक सेवक हैं जो निष्ठापूर्वक विनोबाजी के आन्दोलन में प्राणपण से लगे हैं और अब २८ जून ५९ के बाद से ऐसे ही लोकसेवकों का सर्व सेवा संघ बन रहा है, वर्तमान सर्व सेवा संघ का रूप विघटित होकर इन्हीं लोकसेवकों के सहकार का गांधीजी की कल्पना के लोकसेवक संघ जैसा होने जा रहा है। ज़िले के लोक सेवकों का ज़िला प्रतिनिधि सर्व सेवा संघ का सदस्य होगा।

सर्व सेवा संघ का संगठन तथा लोक सेवक संघ

जो व्यक्ति लोक-सेवक का निष्ठापत्र (जिसका नमूना सर्व सेवा

संघ राजघाट काशी से मंगालें) दो लोकसेवकों के अनुमोदन सहित भर कर देंगे, वह लोक सेवक होगा। इन लोकसेवकों द्वारा हर ज़िले में एक प्रतिनिधि चुना जायगा जो सर्व-सेवा-संघ का सदस्य होगा।

हर सदस्य के लिए नीचे लिखी शर्तों का पालन करना होगाः—

(१) जिन्हें संघ के उद्देश्य मान्य हों—संघ का उद्देश्य—सत्य और अहिंसा की बुनियाद पर ऐसा समाज क़ायम करना, जिसमें किसी का शोषण न हो और इस दृष्टि से भारत के नागरिकों को ग्राम जीवन की ओर मोड़ना, भारत की ग्राम जनता की, खासकर देहात की ग़रीब जनता की सेवा करना, सहायता देना, जीवन शिक्षा देना, जिससे उनकी ग़रीबी, अनारोग्य, अज्ञान आदि दूर हों और उन्हें आत्म शक्ति का भान हो।

दृष्टि यह रहे—मनुष्य की अच्छाई में विश्वास और परस्पर संपर्क से हृदय परिवर्तन की प्रक्रिया में आस्था, यह संघ के संयोजन, कार्य और उसके विचार का आधार होगा।

(२) जो आदतन खादी धारी हों, अर्थात् खुद या घर के काते सूत की या प्रामाणित खादी पहनते हों।

(३) नियमित कताई करते हों।

(४) किसी राजनैतिक पक्ष के सदस्य न हों।

अध्यक्ष प्रबन्ध समिति—ये सदस्य संघ के अध्यक्ष का निर्वाचन करेंगे। अध्यक्ष प्रबन्ध समिति की नियुक्ति करेंगे तथा संघ के लिये सदस्यों की नामज़दगी करेंगे।

निर्णय—नीति का निर्णय संघ की साधारण सभा करेगी। कार्य का निर्णय प्रबंध समिति करेगी। सारे निर्णय सर्व सम्मति से लिये जावेंगे।

विशेष बात—कोई भी लोक सेवक संघ की साधारण बैठक में सदस्य की भांति भाग ले सकेगा और मत दे सकेगा।

ग्रामदान

२४ मई, १९५२ को उत्तर-प्रदेश ने विनोबाजी के भूदान आन्दोलन का उत्तर मंगरौठ के पहले ग्रामदान के रूप में दिया तब से १९६३ के अंत तक ६००० से ऊपर ग्रामदान हो चुके हैं। राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद अभीष्ठ है ग्राम-स्वराज्य यानी विकेन्द्रित और स्वावलम्बी समाज जिसमें आर्थिक विषमता और शोषण नहीं रहेंगे तथा जिसमें केन्द्रित शासन का दबाव भी नहीं होगा। ग्रामदान इस ग्राम-स्वराज्य की कुंजी है।

ग्रामदान से अभिप्राय उस गाँव से है जिसमें उस गाँव के रहने वाले और वहाँ अपनी निज की ज़मीन रखने वाले व्यक्तियों में से कम-से-कम ८० प्रतिशत ने अपनी ज़मीन गाँव-समाज को दे दी हो। इस प्रकार ग्राम-समाज को दी गई ज़मीन गाँव की कुल ज़मीन की कम-से-कम ५० प्रतिशत होनी चाहिए और इस दान में गांव में रहने वाले कुल परिवारों में से कम-से-कम ८० प्रतिशत, ग्रामदान के गाँव समाज में सम्मिलित होने चाहिए।

ग्रामदान अनेक प्रांतों में हुए। येलवाल (मैसूर) परिषद में इसे सभी राजनैतिक पक्षों का समर्थन प्राप्त हुआ। प्रधान मंत्री श्री नेहरू ने कहा, "ग्रामदान स्थायी चीज़ हो गई है। अरसीकेरे की रचनात्मक परिषद में देश की सभी रचनात्मक संस्थाओं ने ग्रामदान आन्दोलन में भरसक योग देने का विनोबाजी को आश्वासन दिया। प्रान्त-प्रान्त में ग्रामदान एक्ट बने।

ग्रामदान की कल्पना का मूर्त्त स्वरूप कुछ गांवों में थोड़ा-थोड़ा दिखाई पड़ता है, आशा किरण की भाँति, पर व्यापक रूप में उसका दर्शन अभी नहीं हुआ है। इसका एक कारण यह है कि विनोबाजी तथा उनके साथियों का ज़्यादा ज़ोर ग्रामदान प्राप्ति पर है क्योंकि जब

तक बहुत बड़ी संख्या में ग्रामदान नहीं होते तब तक आगे के ग्राम-निर्माण का यानी ग्राम-स्वराज्य के विकास का वातावरण नहीं बन सकता।

सर्व सेवा संघ ने नमूने के तौर पर कुछ क्षेत्रों में ही ग्राम निर्माण का काम हाथ में लिया है। कोरापुट में पूरी शक्ति लगाकर काम किया गया, जहाँ लगभग १५०० आदिवासियों के गाँव ग्रामदान में प्राप्त हुए हैं। ग्राम-निर्माण का सही काम तो गाँव वालों के अभिक्रम से ही सम्भव है, बाहर की मदद उनको आश्रित बनाती है तथा बाहर का वैतनिक कार्यकर्ता बजाय सेवक के व्यवस्थापक जैसा हो जाता है। अभिक्रम जागृत करने का काम, मूल्य परिवर्तन का काम आज के सारे प्रवाह से उल्टी दिशा में जानेवाला काम है। प्रचलित आर्थिक और सामाजिक रचना उसकी विरोधी है। पर फिर भी ये टिके हैं, एक आलोकस्तम्भ की तरह। एक एक गाँव के अलावा कुछ ग्रामदान के सघन क्षेत्र प्रकट हुए हैं जहाँ पूरे का पूरा तालुका अर्थात् तहसील के गाँव ग्रामदान में प्राप्त हुए हैं। भारत के कुल ३०० जिलों में से १३० ज़िले ऐसे हैं जिन में कम से कम एक ग्रामदान हुआ ही है।

ग्रामदान का अर्थ है ग्राम का परिवारीकरण। एक परिवार में जिस तरह सारी मिलकियत परिवार की होती है, सब में स्नेह और भाईचारा होता है, सुख-दुख में साथ होता है, उसी तरह ग्रामदान में कल्पना की जाती है—सारे गांव के परिवारों का एक परिवार, यानी ग्रामदान।

ग्रामदान के बाद कोई भी अकेला नहीं रहता। सब मिलकर साथ साथ सुख दुख भोगेंगे—ऐसी भावना रहती है, एकता की भावना बनती है और सबकी ताक़त बढ़ती है। थोड़े में ग्रामदान के अर्थ होते हैं—ज़मीन, धन, मेहतन, बुद्धि और प्रेम जो आज अपने परिवार के लाभ और सुख के लिए इस्तेमाल होता है, उसके इस्तेमाल समाज के सब लोगों के लिए हो। घर में सब विद्वान और ज्ञानी नहीं होते। जो विद्वान होता है,

वह दूसरों को प्रेम से समझाता है। जो ज्ञानी है वह ज्ञान देता है। इस तरह एक ही घर में कई ताकतें हैं और हरेक में कोई न कोई खूबी व ताकत होती है। हरेक की यह सब ताकतें व खूबियाँ परिवार और कुटुम्ब तक ही सीमित हैं। हम इतना ही कहते हैं कि घर की तरह सारे गाँव ही एक परिवार बनें।

देश के सब लोग सुखी हों। गाँव के सारे ग्रामीण सुखी हों, आपस में प्रेम बढ़े। सारे गांव को एक परिवार मानते हों—यही ग्रामराज है।

देहातों में ग़रीबी-अमीरी के गढ़े और टीले, लड़ाई-झगड़े, स्वामित्व के कारण ही हो रहे हैं। उत्पादन के साधनों पर अनुत्पादकों की मालिकी है। उनका कब्ज़ा है। मेहनत करनेवाले को खाने भर को भी नहीं मिलता है और व्यवस्था करनेवाले को मजे मारने के लिए, मौज करने के लिए, विलासिता के लिए रुपया ही रुपया मिलता है। इसके बजाय गाँव का स्वामित्व होना चाहिए और एक परिवार की भाँति अपने श्रम का समुचित पारिश्रमिक मिले यही ग्रामदान का संकेत है।

विनोबाजी कहते हैं—"ज़मीन और सम्पत्ति, शक्ति और बुद्धि का मालिक परमेश्वर है, उनकी वृद्धि का कारण समाज है। हम सब तो उसके सेवक हैं। हर एक को उसके पेट के लिये जितना ज़रूरी है उतना मिलना चाहिए।——परिवार में जितना हो उतना बांटकर खा लेते हैं और सब मिलकर उत्पादन बढ़ाते हैं क्योंकि परिवार जिन्दा समाज है। कुटुम्ब में प्रेम है और प्रेम ही मनुष्य का प्राण है। जो नियम परिवार का है, वही गांव का और देश का होना चाहिए।

सभी ग्रामदानी गांवों के लिए एक ही तरह की योजना, एक ही तरह का नमूना नहीं हो सकता। स्थान-स्थान की परिस्थिति पर भी ध्यान देना आवश्यक है।

— :o: —

शांति सेना

शांति-सेना की आवश्यकता

आज सारी दुनिया की मूल समस्या शान्ति स्थापना की है। शायद ही किसी ज़माने में आज जैसी शांति की भूख दुनिया को रही हो ! जो देश कल तक हिंसा के विचार में डूबे हुए थे, वे आज हिंसा से दूर रहना चाहते हैं। यद्यपि आज भी वे नाना प्रकार के विनाशकारी एटम बम हाइड्रोजन बम बनाते जारहे हैं जिससे मनुष्य जाति ही सर्वथा नष्ट हो सकती है, फिर भी उससे मुक्ति कैसे होगी, यह सोच रहे हैं।

आज राष्ट्रों का अडबों खडबों रुपया विनाशकारी शस्त्रों और विशाल सेनाऐं रखने में खर्च हो रहा है। यदि यह खर्च कम हो जाय तो यह सारा रुपिया लोगों की भलाई और सुख शांति में लगाया जा सकता है। आज सब कोई यह समझ रहे हैं कि हिंसा से सबका नुक़सान होने वाला है। कहीं अगर विश्व युद्ध की आग लग जाय तो कोई भी उसका नियन्त्रण नहीं कर सकेगा सर्वत्र प्रलय जैसा विनाश हो जायगा। इसलिये समस्याओं का हल युद्ध से या हिंसा से होगा, ऐसी आज आशा नहीं है। अगर शस्त्र से मसले हल नहीं होते तो कोई दूसरा मार्ग ही निकलना चाहिए जो मसले हल कर सके। उसके लिए अहिंसा का मार्ग ही सर्वश्रेष्ठ है और इसी विचार को आगे बढ़ाने के लिए शांति सेना की योजना है।

शांति सेना के सम्बन्ध में गांधीजी के विचार

हिंसक सेना सिर्फ़ उपद्रवों के समय ही कार्य प्रवृत रहती है लेकिन शांति सेना उपद्रवों के समय तथा शाँति के समय भी कार्य प्रवृत रहती हैं। शांति काल में शांति-सेना रचनात्मक कार्यों में लगी रहती है जिससे दंगों का होना असम्भव होजाता है। शांति सैनिक लड़ने झगड़ने वाली

जातियों के लोगों से मिलते जुलते रहते हैं, उनमें शाँति के विचारों का प्रचार करते हैं और ऐसे प्रयत्न करते हैं जिससे हर व्यक्ति पुरुष और स्त्री, प्रौढ़ और बच्चे आपस में एक दूसरे के संपर्क में शान्ति से रहें। ऐसे शांति सैनिक को किसी भी खतरे का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए और जनता के क्रोध को शांत करने के लिए आवश्यक मात्रा में उन्हें अपनी जान जोखिम में डाल देनी चाहिए।

जिस प्रकार किसी को हिंसा की तालीम पाने के लिए हत्या करने की कला सीखनी पड़ती है, उसी प्रकार अहिंसा की तालीम पाने के लिए आत्म-समर्पण की कला सीखनी पड़ेगी। उनको अनुशासन, क़वायद, कोरस में गाना आदि का भी अभ्यास करना चाहिए।

शांति-सेना का सदस्य पुरुष हो या स्त्री, उसका अहिंसा में तथा ईश्वर में जीवित विश्वास होना चाहिए। इसके बिना उसमें क्रोध भय और बदले की भावना न रखते हुए मरने का साहस नहीं होगा। ऐसा साहस तो श्रद्धा से ही आता है कि सबके हृदयों में ईश्वर का निवास है और ईश्वर की उपस्थिति में किसी भी भय की ज़रूरत नहीं। ईश्वर की सर्वव्यापकता के ज्ञान का यह भी अर्थ है कि जिन्हें विरोधी या गुण्डे कहा जासकता हो, उनके प्राणों का भी हम ख़याल रखें।

शांति के सैनिक को दुनिया के सभी ख़ास ख़ास धर्मों के प्रति समान श्रद्धा व आदर रखना चाहिए। उसको विभिन्न धर्मों के सामान्य सिद्धांतों का ज्ञान भी प्राप्त करना चाहिए।

काम पड़ने पर शांति सैनिक बिना किसी दूसरे का इंतज़ार किये अकेला भी काम शुरू कर सकता है। बाद में वह अपने आस पास के लोगों में से कुछ साथी चुन ले और स्थानिक सेना बनाले।

शांति का यह दूत व्यक्तिगत सेवा द्वारा अपनी बस्ती या किसी चुने हुए क्षेत्र के लोगों के साथ ऐसे संबंध स्थापित करे जिससे जब उसे भद्दी स्थितियों में काम करना पड़े, तो उपद्रवियों के लिए वह

बिलकुल ऐसा अजनबी न हो, जिस पर वे शक करें या जो उन्हें नागवार मालूम पड़े। उसका चरित्र ऐसा ऊंचा होना चाहिये जिस पर कोई उंगली न उठा सके और वह अपनी निष्पक्षता के लिए मशहूर हो।

आम तौर पर दंगों से पहले तूफ़ान आने की चेतावनी मिल जाया करती है। अगर ऐसा आसार दिखाई दे तो शांति सेना आग भड़क उठने तक का इंतजार न कर तभी से परिस्थिति को संभालने का काम शुरू कर देगी, जबसे उसकी संभावना दिखाई दे।

इस सेना के सदस्यों की एक खास पोशाक होनी चाहिये। जिससे कालान्तर में उन्हें बिना किसी कठिनाई को पहचाना जा सके। अथवा एक अमुक चिन्ह (बैंज) भी लगाया जा सकता है।

शांति-सेना का किसी भी राजनैतिक दल से कोई संबंध नहीं होना चाहिए तथा इस संगठन में कोई भी बात गोपनीय नहीं होगी। सत्य अहिंसा की विचारधारा का गंभीर अध्ययन करने की दृष्टि से 'अध्ययन मंडल' का प्रवंध होना भी लाभदायक होगा।

अहिंसक सैनिकों की सफलता के लिए यह ज़रूरी है कि वे जिस स्थान में कार्य करें वहां की जनता से उनका घनिष्ठ संबंध हो। अपने क्षेत्र में वे हरिजन सेवा, शराब बंदी, ग्रामोद्योग प्रचार, रोगियों की सेवा, विद्यार्थी संगठन आदि रचनात्मक कार्य बराबर करते रहें। अवसर पड़ने पर वे सभी तरह के संघर्षों को अहिंसात्मक ढंग से सुलझाने की कोशिश करें। पीडितों की सेवा की दृष्टि से प्राथमिक चिकित्सा नर्सिंग इत्यादि की शिक्षा प्राप्त कर लेना आवश्यक है।

शांति सेना में शिक्षा के बजाय व्यक्तित्व का अधिक महत्व रहना स्वाभाविक है। जितना कार्य एक योग्य और त्यागी अहिंसक कार्यकर्त्ता कर सकता है, उतना सैकड़ों साधारण व्यक्ति भी नहीं कर सकते, यह स्पष्ट है। शांति सेना में उम्र की कोई क़ैद नहीं है। छोटे बच्चों को छोड़कर बड़े बूढ़े सब इसमें आ सकते हैं।

शान्ति-सैनिक कैसा हो ?

शान्ति-सेना में ऐसे सेवक होंगे, जो मानेंगे कि हमको अखिल मानव-समाज की सेवा करनी है। हम सब मिलकर भारत का दुःख निवारण करेंगे। उनमें जाति, धर्म, पंथ, पक्ष आदि भेद नहीं रहेगा। सबके साथ समान व्यवहार, ऊँच-नीच का भेद नहीं, पानी के समान नम्र, मृदु, स्वच्छ, निर्मल और शीतल, ऐसी भावना होनी चाहिये शान्ति-सेना में।

शान्ति-सैनिक का लोगों को भय नहीं मालूम होगा। यह उसका प्रथम लक्षण है। भिन्न-भिन्न पार्टीवालों को भी उसका भय नहीं मालूम होना चाहिये। फिर भी किसी को भय मालूम हो, तो उनको यह देखना चाहिए कि हमारी वृत्ति पक्षों से अलिप्त है। हम निरपेक्ष सेवा करनेवाले हैं, किसी एक पार्टी में पड़ने वाले नहीं हैं, केवल सर्वोदय के लिये प्रयत्नशील हैं। अवसर आने पर उसके लिये बलिदान भी देनेवाले हैं।

उनके लिए तालीम की व्यवस्था करनी है। भारतीय विचार, समन्वय का विचार उनको मालूम होना चाहिये। तरह-तरह की सेवा किस प्रकार से करनी चाहिये, इसकी तालीम उनको मिलनी चाहिये। हर ५००० की बस्ती के लिये एक सेवक होगा। इस तरह वह निरन्तर सेवा करता रहेगा। वह दुःखितों का दुःख निवारण करेगा, कोई बीमार है, तो उसकी सेवा करेगा। साहित्य का प्रचार भी करेगा। उनके दुःख दर्द समझकर उनके निवारण का प्रयत्न करेगा। इस तरह हरएक मनुष्य के हृदय में वह धंसा रहेगा और उनके घर का एक आदमी बन जायगा। विशेष मौके पर कहीं गड़बड़ी होती है, तो अपना बलिदान भी देगा। शान्ति-सेना का सैनिक नित्य जन-सेवा करेगा और नैमित्तिक के तौर पर शान्ति-कार्य करेगा।

ऐसे निष्काम, निःस्वार्थ, निष्पक्ष, निरपेक्ष सेवकों की सेना खड़ी होनी चाहिये। ऐसी सेना खड़ी होगी तो उसके लिए अपने आप मदद भी मिल जायगी जैसे बूंद-बूंद बारिश गिरतीहै वैसेही घर-घरसे सम्पत्तिदान बरसेगा।

शांतिसेना सदस्य की निष्ठाएें, तथा सदस्यता का फार्म

शान्ति के लिये अपना जीवन समर्पण करनेवाले के लिए निष्ठाएँ आवश्यक हैं। ऐसी निष्ठावाले सेवकों की शान्ति-सेना बनेगी।

१. सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह और शरीर-श्रम में मेरी दृढ़ निष्ठा है। तदनुसार ज़ीवन बिताने की मैं कोशिश करूंगा।

२. लोक-नीति की स्थापना से ही दुनिया में सच्ची स्वतन्त्रता हो सकेगी, ऐसा मेरा विश्वास है। इसलिये मैं किसी प्रकार की दलीय राजनीति (पार्टी-पॉलिटिक्स) में या सत्ता की राजनीति (पावर-पॉलिटिक्स) में भाग नहीं लूंगा, भिन्न-भिन्न राजनैतिक पक्षों के व्यक्तियों का समान आदर बुद्धि से सहयोग लेने की मेरी वृत्ति और प्रयत्न रहेगा।

३. बिना किसी कामना के समर्पण-बुद्धि से मैं लोक-सेवा करता रहूँगा।

४. जाति, वर्ग या पन्थ के किसी प्रकार के संकुचित भेदों को मैं जीवन में स्थान नहीं दूंगा।

५. मैं अपना पूरा समय और चिंतन सर्वोदय के प्रत्यक्ष साधन स्वरूप भूदान-यज्ञमूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्तिके काममें लगाऊंगा।

६. शान्ति-सेना के काम के लिए जब जहाँ जाने का आदेश होगा मैं उस पर अमल करने तथा आवश्यकता पड़ने पर उसमें अपने प्राण समर्पण करने को भी तैयार रहूँगा। हस्ताक्षर

पूरा नाम और पता ____________________

स्थान ____________ जिला ____________ तारीख ____________

इस समय देशभर में ४५०० से ऊपर शांति सैनिक हैं। आप भी शान्ति सेना में भरती होना चाहें तो ऊपर छपा हुआ फार्म भर कर इस पते पर भेज दें। इस सँबंध में और कुछ जानकारी लेना चाहें तो पत्र देकर पूछलें।

पता—श्री संचालकजी—शान्ति सेना कार्यालय,

पोस्ट सेवाग्राम (वर्धा)

जनसेवा, शांति स्थापना तथा लोक सम्मति का प्रतीक

सर्वोदय पात्र

(विनोबाजी के भाषणों से संकलित)

गांधीजी के जाने के बाद मैं इस तलाश में था कि अहिंसा की प्रतिष्ठा भारत के सामाजिक जीवन में किस तरह की जाय। स्वराज्य प्राप्ति के बाद ही जो हिंसात्मक घटनाऐं देश में हुईं उनसे अहिंसा की आशा और भी क्षीण हुई। परमेश्वर की योजना से मुझे अहिंसा के सामाजिक प्रचार के लिए एक अधिष्ठान मिल गया और भूदान यज्ञ का प्रारम्भ हुआ जिसमें अहिंसा के लिए आदर्श मूर्ति, ध्यान मूर्ति, पृथ्वी, है। उसको हम अधिष्ठान मानते हैं।

लोक सेवकों के लिए चिंतन

अहिंसा के कार्यक्रम के लिए अधिष्ठान तो मिला लेकिन दूसरी बात लोकसेवकों की थी। इन दिनों मेरा चिंतन और शक्ति लोकसेवकों को जमाने में लगी है। सारे देश के लिए एक हज़ार कुटुम्ब अर्थात् पाँच हजार मनुष्यों के लिए एक सेवक के हिसाब से ७५ हज़ार विचारवान और आचारवान लोक-सेवक मिलने चाहिये। उनकी एक 'शान्ति-सेना' बनेगी। यही 'सेवा-सेना' का भी काम करेगी। शान्ति और अहिंसा के विचारों का प्रचार करेगी। कहीं अशाँति होने पर उसे दूर करने का पूरा प्रयत्न करेगी यहां तक कि काम पड़ने पर अपने आपको बलिदान कर देने की तैयारी भी रखेगी। हरेक सैनिक अपने क्षेत्र के हर घर के साथ संबंध रखेगा, उनकी कठिनाइयों और कष्टों की बातों को समझेगा और उनको दूर करने का प्रयत्न करेगा।

सामूहिक इच्छा-शक्ति का निर्माण

हिन्दुस्तान की जनता ५ लाख गांवों में बसती है। इन ५ लाख गांवों में यह संदेश भेजना एक बड़ा काम है! उसके लिए सामूहिक इच्छा-शक्ति चाहिए। सामूहिक इच्छा याने भलेपन, सब भाई एक परिवार, सबके सुख

में अपना सुख, सबके दुख में अपना दुख, ऐसी भावना का व्यापक होना। इसी के लिए भूदान और ग्रामदान का काम शुरु किया गया है। ग्रामदान कब होगा जब सारे गाँव की इच्छा होगी। ग्रामदान और ग्रामस्वराज्य के विचार को व्यापक बनाने तथा सर्वोदय समाज की स्थापना के लिए जनता की सम्मति और विश्वास प्राप्त करना आवश्यक है। इसी लिए सर्वोदय पात्र का विचार सामने रखा गया है।

पात्र में रोज़ाना छोटे बच्चे की मुट्ठी से एक मुट्ठी अनाज, जो हम खाते हैं वही उस में डाला जाय। हिन्दुस्तान में सभी यह काम करने लगें, तो इससे एक सामूहिक इच्छाशक्ति का निर्माण होगा। हर घर में सर्वोदय पात्र रखा जायगा तो विश्वशान्ति होगी।

सर्वोदय पात्र का कार्यक्रम लोक सम्मति का प्रतीक है और उसमें से लोक सेवकों के निर्वाह तथा दूसरे सेवा और सहायता के कामों का आर्थिक आधार भी प्राप्त होता है। इस तरह वह दोनों आवश्यकताओं की पूर्ति है। एक प्रकार से शांति सेना और सर्वोदय पात्र का काम ग्रामस्वराज्य की समस्त प्रवृतियों की बुनियाद है। कर्मयोग की शुरुआत नींव से ही करनी होती है। अतः इन दोनों कार्यक्रमों को ग्रामस्वराज्य की नींव का पत्थर कह सकते हैं।

बाल-शिक्षण

एक मुट्ठी अनाज हर घर से मिले और वह भी छोटे बच्चे की मुट्ठी से। यह मेरा एक दर्शन है। छोटा बच्चा मैंने क्यों कहा ? इसलिए कि रोज़ भोजन के पहले माँ बच्चे से पूछेगी, "अरे सर्वोदय के मटके में अनाज डाला ?" बच्चा अगर भूला होगा, तो वह कहेगी, "जा पहले डालकर आ!" इससे बड़ी भारी धर्म-संस्थापना होगी, ऐसी मेरी भावना है। इससे सर्वोदय को अन्न मिलेगा, सर्वोदय को सम्मति मिलेगी। यह तो होगा, परन्तु इससे बड़ी बात यह होगी कि बच्चों को शिक्षण मिलेगा और उनमें विश्व-मानव की उपासना की प्रवृत्ति निर्माण होगी।

सर्वोदय पात्र भिक्षा नहीं, दीक्षा है

हमारे यहां एक धार्मिक रुढ़ि है कि खाने से पहले दूसरे के लिए उसमें से कुछ अंश निकालकर रखा जाय। भगवान ने कम या अधिक, जो संपत्ति हमें दी है उसका एक अंश समाज को समर्पण करके बचे हुए का भोग भोगने का अधिकार मनुष्य को है अन्यथा भोग भोगने का अधिकार दरिद्र को भी नहीं।

"तेन त्यक्तेन भुंजीथाः"

यह उपनिषद् की आज्ञा सब के लिये है। जो भोग करे वह समर्पण करके करे। इससे बहुत बड़ी आध्यात्मिक शक्ति पैदा होती है। श्रम हो, संपत्ति हो, बुद्धि हो, कुछ न कुछ हर एक को निःस्वार्थ भाव से प्रतिदिन देना ही चाहिए।

इस तरह यद्यपि इस विचार का आधार पुराना है, फिर भी इसकी पद्धति नई है। बुनियाद नई है, उद्देश्य नया है। सर्वोदय पात्र रखने का उद्देश्य यह नहीं है कि इसमें मुट्ठी भर अनाज डाल दिया जाय। उद्देश्य है इसको शांति और सेवा भावना का आदर्श पात्र समझा जाय।

इसलिये सिर्फ मुट्ठी अनाज नहीं डालिये, आप स्वयं शांति-सैनिक बनिये। सर्वोदय-पात्र सर्वोदय विचार को सम्मति देता है, इसलिये जो अपने घर में सर्वोदय पात्र रखता है, उसे सर्वोदय का पात्र (योग्य) बनना चाहिये। सर्वोदय उसके मस्तिष्क में प्रवेश करता है। वह अशांति के कामों से अपने को बचाता है। एक प्रकार से जीवनशुद्धि की प्रक्रिया शुरु होती है। यह संस्कारों के लिए सर्वोत्तम साधन है। इसलिये यह भिक्षा न होकर, दीक्षा है।

स्त्री-शक्ति के लिए भी अवसर

शान्ति-स्थापना की जिम्मेदारी पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को अधिक उठानी चाहिये। कारण, उनके पास वह शक्ति है। प्रकृति ने स्त्रियों को कारुण्य का कार्य सौंपा है। स्त्रियां अपने में विद्यमान संस्कारिता, धर्म-

शीलता, भक्ति, मर्यादा, करुणा, अहिंसा आदि गुणों को समाज में व्याप्त करें। इसलिये यह सारा काम स्त्रियों को करना चाहिये। मैं उनसे कहता हूं कि घर-घर जाइये और सर्वोदय-पात्र का प्रचार कीजिये।

सर्वोदय पात्र क्या है ?

घर घर में सर्वोदय-पात्र रखने का अर्थ यह है कि हरएक घर को सर्वोदय के योग्य बनना है। सब कोई यह भावना रखे कि हमारे हाथों सबकी सेवा हो। जब बालक खाने की इच्छा करेगा, तो मां उससे पूछेगी तूने दूसरोंको खिलानेकी फिकर रखी है ? सर्वोदय पात्र में अनाज डाला है ?

हमें पहले समाज की चिंता करके अर्थात् भगवान को समर्पण करके ही खाने का अधिकार है धर्मशास्त्र की भी यह आज्ञा है। क्योंकि हमें जो भी शक्ति, बुद्धि और सम्पत्ति प्राप्त है वह सब समाजरूपी परमेश्वर की ही देन है। यह एक बुनियादी विचार है, जो बालक को ठेठ उसके बचपन से ही सिखाने योग्य है। सर्वोदय-पात्र की योजना शांति-सेना, सेवा-सेना तथा सर्वोदय के काम को आगे बढ़ाने के लिए की गई है।

सर्वोदय पात्र के काम में हमारी पूरी ताक़त लगनी चाहिये। यह बुनियादी चीज़ है। इससे हमारे कार्यकर्त्ता शारीरिक और मानसिक दोनों अर्थ में परिपुष्ट होंगे क्योंकि वे किसी एक शख्स का नहीं खायेंगे, जनता का खायेंगे।

अपने घर में सर्वोदय-पात्र रखते समय संकल्प

मैं अपने घर में स्वेच्छा से सर्वोदय पात्र रख रही हूँ रख रहा हूँ। सर्वोदयपात्र रखने में मेरे परिवार की सहमति है। मुझे इस बात से परम संतोष है कि परिवार के छोटे बडे सभी व्यक्ति प्रतिदिन समाज को कुछ अर्पण करने के बाद अन्न ग्रहण करेंगे। अहिंसक समाज रचना में मेरी सहमति है। मेरे घर में हिंसा के साधनों का प्रयोग कदापि नहीं होगा।

सर्वोदयपात्र—उसकी व्यवस्था और विनियोग

— घर में जो अनाज खाते हैं, उसीमें से छोटे-से-छोटे बालक या बालिका द्वारा एक मुट्ठी अनाज प्रतिदिन पात्र में डाला जाय। आटा नहीं डाला जाय। एक ही प्रकार का अन्न सर्वोदय पात्र में डालें।

— जिनके यहाँ रसोई न बनती हो और अनाज न रहता हो, वे सर्वोदय पात्र में प्रतिदिन नियम से एक या अधिक नया पैसा डाल सकते हैं।

— मुट्ठीभर अनाज डालनेका नियम नियमित रूपसे पाला जाय पात्र पर क्रमांक लिखा रहे, उसपर सर्वोदय विचारका कोई छोटासा वाक्य हो।

— अनाज स्वच्छ और सुरक्षित रहे, इसकी सावधानी बरती जाय।

— पात्र घरवालों की आंखों के सामने प्रमुख स्थान पर रहे।

— घर में इकट्ठा किये हुए अनाज को नियत स्थान पर पहुंचाने की व्यवस्था हरएक घरवाले खुद ही करें।

— प्रति सप्ताह छुट्टी के दिन उसे इकट्ठा किया जाय।

— मुहल्ला, गांव या गांव-समूह में प्रति २५ सर्वोदय-पात्र का एक-एक व्यक्ति (सर्वोदय-मित्र) जिम्मा ले। इस प्रकार जिम्मा लेनेवाला 'सर्वोदय मित्र' पात्र का अनाज इकट्ठा करते समय घरवालों की कठिनाई तथा उनकी तकलीफों की जानकारी प्राप्त करे और उनको दूर करने का उपाय भी सोचे।

— सारा अनाज किसी सार्वजनिक स्थान पर इकट्ठा किया जाय।

— गांव के पंच लोगों को बुलाकर उसका भाव तय किया जाय यह भाव बाजार-भाव से कम-बेशी हो सकता है। अनाज को बेचकर उसके पैसे रचनात्मक संस्था या जिला-निवेदक के पास जमा कर दिये जायें।

— शांति व सेवा-सैनिक व सर्वोदय—कार्यके लिये इस पैसे का उपयोगहो

— स्थानिक कार्यकर्त्ता मिलने तक सर्वोदय के काममें जिला-निवेदक पैसा खर्च करे। कार्यकर्त्ता मिल जाने पर दोनोंके लिये उसका उपयोग हो।

नोट–घरके दूसरे बालकभी पात्रमें अन्न डालें तो उसकी मनाई नहीं है।

जय-जगत

विनोबाजी जब किसी से मिलते हैं, किसीसे विदा मांगते हैं तथा किसी को पत्र लिखते हैं तो उनका एक ही नारा रहता है 'जयजगत'।

विनोबाजी कहते हैं जब सब के हृदय में 'जयजगत' के भाव अर्थात् सब लोगों की भलाई में अपनी भलाई ऐसे भाव भर जायेंगे, तबही संसार में शांति रहेगी इसलिये जब हम परस्पर मिलें तो 'जय जगत' कहें।

आज विज्ञान का युग है। विज्ञान ने दुनिया को बहुत पास ला दिया है। इस युग में यदि हिंसा को प्रोत्साहन मिला तो मानव जाति का विनाश निश्चित है। इसलिये या तो आप 'वसुधैव कुटुम्बकम्' सारा संसार हमारा कुटुम्ब है यह समझ कर आपस में प्रेम को शक्ति पैदा करें या फिर समस्त मानव जाति के विनाश को स्वीकार करें।

सुभाष बाबू की आज़ाद हिन्द फ़ौज के ज़माने में जयहिन्द का नारा निकला था। विनोबाजी जब अपने आश्रम पवनार में थे उनसे आज़ाद हिन्द फ़ौज के कुछ लोग मिलने आये। उन्होंने 'जय हिन्द' कहा। विनोबा ने उत्तर में कह दिया 'जय हिन्द' 'जय दुनिया', 'जय हरि'। उन्हें अकेले 'जय हिन्द' कहने में संकोच हुआ।

कर्नाटक में जब वे पद यात्रा कर रहे थे उन्होंने सबसे पहले 'जयजगत' शब्द का उच्चारण किया। ऐसा मालूम होता है कि उस समय 'संयुक्त कर्नाटक' का जो आंदोलन उठा था उसी को देख कर संत के हृदय से यह अमृतवाणी के रूप में निकला। उन्होंने कहा भी था संयुक्त हृदय के बिना संसार में कुछ भी संयुक्त नहीं होसकता।

निश्चय ही उनका इशारा संयुक्त कर्नाटक, संयुक्त महाराष्ट्र, संयुक्त गुजरात आदि आन्दोलनों की ओर था। उन्होंने संयुक्त कर्नाटक वालों से कहा भी था कि संयुक्त कर्नाटक के साथ साथ संयुक्त भारत और संयुक्त विश्व भी होना चाहिये, नहीं तो अकेला संयुक्त कर्नाटक बहुत छोटी और निकम्मी चीज़ हो जायगी।

सामूहिक मौन प्रार्थना

(विनोबाजी के विचार)

स्नान से शरीर की शुद्धि होती है और प्रभु-प्रार्थना से मन की शुद्धि होती है। सार्वजनिक सभाओं में मौन प्रार्थना बड़ी कारगर होती है। हमें परमेश्वर के गुणों का चिंतन करने की आदत होनी चाहिये। परमेश्वर के अनन्त नाम हैं, पर हम किसी खास नाम का आग्रह न रखें और मौन में सब लोग अपनी अपनी रुचि के अनुसार प्रभु का स्मरण करें और उसके गुणों का चिंतन करें। इस तरह के ध्यान से ईश्वर स्मरण का पूरा और सच्चा आनन्द मिलता है। उन गुणों का हमारे हृदय को स्पर्श भी होता है। जैसे नदियां समुद्र में डूब जाती हैं वैसे ही मौन में सब उपासनाएं एकत्र हो जाती हैं। छोटे बच्चों में भी यदि हम इसकी आदत डालें तो उन्हें भीतर से काफ़ी बल मिलेगा।

घर पर, यात्रा में, सुबह दोपहर शाम जबभी समय मिले, जितना भी समय मिले यह मौन प्रार्थना की जा सकती है। प्रार्थना से मन साफ़ होता है, मन में बल आता है और मन को शान्ति मिलती है।

सार्वजनिक सभाओं में विनोबाजी की मौन प्रार्थना

ओम् शान्तिः। शान्तिः। शान्तिः।

सब लोग पालथी मारकर बैठे। छाती सीधी रहे, कमर न झुके, कोई बोले नहीं, एक दम चुप्प, ध्यान इधर उधर न जाय, ईश्वर में चित्त लीन हो। अब पांच मिनट का मौन रहेगा। सभी लोग सत्य, अहिंसा प्रेम करुणा आदि गुणों का अपने मनमें चिंतन करें कि ये गुण हमारे दैनिक जीवन में आवें। हम भगवान के प्यारे भक्त बनें।

सवेरे उठते ही विनोबाजी का पहला काम है, भगवान का नाम लेना। कभी वे वेद के मंत्र बोलने लगते हैं, तो कभी संतों के भजन गुनगुनाते हैं, तो कभी गीता पढ़ते हैं। वे कहते हैं सब काम रामही मुझसे करा रहा है।

अंतर रामहि बाहर रामहि, जहँ देखो तहँ रामहिरामहि

भूदान आन्दोलन : एक सिंहावलोकन

१—३—४९	सर्वोदय समाज का प्रथम सम्मेलन राऊ (इन्दौर) में।
१—४—५०	दूसरा सर्वोदय सम्मेलन अंगुल (उड़ीसा) में।
८—४—५१	तीसरा सम्मेलन शिवरामपल्ली (मद्रास) में।
१८-४—५१	तेलंगाना प्रदेश के पोचमपल्ली में श्री रामचन्द्र रेड्डी से १०० एकड़ का प्रथम भूमिदान प्राप्त (भू-क्रान्ति दिवस)
१८-४—५१	से जून तक तेलंगाना में १२ हज़ार एकड़ भूमि प्राप्त।
१—११-५१	मथुरा के प्रांतीय सम्मेलन में उत्तर प्रदेश के कार्यकर्त्ताओं द्वारा ५ लाख एकड़ भूमि प्राप्ति का संकल्प।
१३-४—५२	सेवापुरी (उत्तर प्रदेश) में चौथा सम्मेलन, २५ लाख एकड़ भूमिदान प्राप्त करने का सर्व सेवा संघ का सँकल्प।
२३-५—५२	'मंगरोठ' (उत्तर प्रदेश) का पहला ग्रामदान।
२३-१०-५२	पटना में संपत्तिदान आन्दोलन का प्रारम्भ।
मार्च ५३	चाँडील (बिहार) में पाँचवाँ सर्वोदय सम्मेलन, जिसमें शासन मुक्त, शोषण विहीन समाज-रचना की घोषणा।
अप्रेल ५४	बोधगया में छठा सम्मेलन, जीवनदान की घोषणा।
७—३—५५	जगन्नाथपुरी (उत्कल) में सातवाँ सर्वोदय सम्मेलन।
१४-५—५६	काँचिपुरम् में आठवाँ सम्मेलन—ग्रामोदय की कल्पना।
२१-११-५६	पलनी में तंत्रमुक्ति और निधिमुक्ति का निर्णय, भूमि समितियों का विसर्जन, लोक-सेवक बनाने का कार्यक्रम।
२५-१—५७	मदुराई (तामिलनाड) में 'तालुका-दान' 'फिरका-दान' प्राप्त
९—५—५७	कालड़ी (केरल) में नवाँ सर्वोदय सम्मेलन।
११-७—५७	गाँव-गाँव 'सेवा-सेना', शांति सेना स्थापना की कल्पना।
२०-९—५७	एलवाल (मैसूर) में सब पक्षों की ग्रामदान परिषद्।
३०-५—५८	पंढरपुर (महाराष्ट्र) में दसवाँ सर्वोदय सम्मेलन।
२५-६—५८	आँबेजोगाई (दक्षिण) शहर में सर्वोदय पात्र का श्रीगणेश।

८—८–५८ सेवा संघ द्वारा सर्वजन-आधार का क्राँतिकारी निर्णय।
२८—२–५६ अजमेर में ११वां सर्वोदय सम्मेलन।
२६—३–६० सेवाग्राम (वर्धा) में १२वां सर्वोदय सम्मेलन।
१३—४–६१ सर्वोदयपुरम चेब्रोलु (आंध्र) में १३वां सम्मेलन।
१७–११–६२ बेडछी (सूरत) में १४वां सर्वोदय सम्मेलन।
२७–१२–६३ रायपुर (मध्यप्रदेश) में १५वां सर्वोदय सम्मेलन।

विनोबाजी की पद यात्रा

८–३–५१ वर्धा से शिवरामपल्ली
१५–४–५१ तेलंगाना में प्रवेश
१२–६–५१ वर्धा से दिल्ली
२४-११-५१ उत्तर प्रदेश में यात्रा
१३–६–५२ बिहार में प्रवेश
१—१–५५ बंगाल में प्रवेश
२६–१–५५ उड़ीसा में प्रवेश
१–१०–५५ आँध्र में प्रवेश
१४–५–५६ तमिलनाड़ में प्रवेश
१८–४–५७ केरल में प्रवेश
२४–८–५७ कर्नाटक में प्रवेश
२३–३–५८ महाराष्ट्र में प्रवेश
२२–६–५८ गुजरात में प्रवेश
१५–१–५६ राजस्थान में प्रवेश
१–४–५६ पंजाब में प्रवेश
२२–५–५६ काशमीर में प्रवेश
११-११-५६ अज्ञात संचार
२४–७–६० इन्दौर में प्रवेश
५–११–६० असम यात्रा प्रारंभ
४–१२–६० उत्तर प्रदेश में यात्रा
२५-१२-६० बिहार में प्रवेश
१०-२-६१ बंगाल व आसाम मेंप्रवेश
५–६–६२ पूर्वी पाकिस्तान में प्रवेश
२२-६-६२ पुनः बंगाल में प्रवेश
१०-८-६३ उत्कल प्रांत में प्रवेश
११-१२-६३ मध्यप्रदेश में प्रवेश

इस तरह पद यात्रा करते हुए विनोबाजी को तेरह वर्ष से ऊपर हो गये हैं। इन १३ वर्षों में लगभग ४० हजार मील की यात्रा की।

आन्दोलन सम्बन्धी आंकड़े मार्च १६६३ तक

कुल भूमि प्राप्त	४१ लाख से ऊपर
दाताओं की संख्य	५ लाखसे ऊपर
ग्रामदान	५६८१
लोकसेवक	८३२०
शांति सैनिक	४५१४
सर्वोदय पात्र	लगभग १ लाख

भूदान-यज्ञ की प्रेरक घटनायें

(१) भगवान कृष्ण का दान

विनोबाजी का पड़ाव चौदहपुर गांव में था। दिन भर अत्यन्त व्यस्त रह कर रात को विनोबाजी सो गये। उनके साथी भी सो गये। रात के क़रीब ११ बजे होंगे, बैलों के गले में बंधे हुए घूंघरों की ज़ोरों से आवाज़ आने लगी। उस आवाज़ से एक साथी जागे और बाहर आकर देखा तो मालूम हुआ कि एक बैलगाड़ी खड़ी है जिसमें हांकने वाले के अलावा एक बूढ़ा आदमी और बैठा हुआ है।

विनोबाजी के साथी ने पूछा "आप का क्या नाम है और इतनी रात को कैसे आये हैं ?"

गाड़ी में बैठे हुए भाई ने कहा, "मेरा नाम रामचरण है, मैं आँखों से अन्धा हूँ। बहुत दूर से आ रहा हूँ। मैंने सुना था कि संत विनोबाजी ज़मीन का दान लेते हैं और ग़रीबों को बांटते हैं। इसलिये ऐसे संत को ज़मीन भेंट करने की मेरी भी इच्छा हुई क्योंकि ऐसे मौके जीवन में बार बार नहीं आते। अब संत सोये हुए हैं उन्हें उठाना ठीक नहीं और मुझे वापस सुबह अपने स्थान पर पहुंचना है। मेरे पास १२ बीघा ज़मीन है वह मैं सब देने आया हूँ।" उसी समय रात को ही भूमि-दान पत्र भरा गया और उस पर अपना अंगूठा लगा दिया।

अगले दिन विनोबाजी ने जब अपने प्रवचन में इस घटना का उल्लेख किया तो उनकी वाणी रुक गई और आँखों से आंसू बह निकले। बड़ी कठिनाई से मुंह खुला तो बोले "वह व्यक्ति और कोई नहीं था, रामचरण के रूप में कृष्ण भगवान ही थे जो गुप्त दान देकर चले गये।"

हमारे भारतीय संस्कृति में दान की बड़ी महिमा है, पवित्रता है। लेकिन ऐसे अद्भुत दान की पावनता शायद कहीं ढूंढे भी नहीं मिले।

(२) अब दो हो गये

दिल्ली की बात है। विनोबाजी राजघाट पर कुटिया में ठहरे हुए थे। एक दिन रात को एक वयोवृद्ध सज्जन रज़ाई ओढ़े आये और बोले मेरे पास पैंसठ एकड़ भूमि है। दस एकड़ निकम्मी है, बाकी अच्छी। विनोबाजी ने पूछा "तुम्हारे कितने लड़के हैं?" उत्तर मिला "एक" तो अब दूसरा मुझे समझो—"अब दो हो गये, दूसरे को उसका हक देदो" विनोबाजी ने कहा। वृद्ध सज्जन बोले "सारी ज़मीन आपके समर्पण है, जितनी चाहें, लेलें" "अच्छा साढ़े सत्ताईस एकड़ दे जाओ" विनोबा ने कहा। वह खुशी खुशी देकर चले गये।

(३) कुंए का दान

गाजियाबाद की बात है। विनोबाजी वहां की एक पाठशाला में ठहरे हुए थे। दोपहर के समय एक स्थानीय सज्जन सपरिवार उनसे मिलने आये। वे वहाँ के बड़े व्यापारी थे। सौ-सौ रुपये के कुछ नोट विनोबाजी के सामने बढ़ाते हुए बोले, "ये आपकी भेंट है।"

विनोबाजी ने उनके चेहरे की तरफ़ देखा, फिर बोले, "मैं रुपये नहीं लेता। रुपयों का तो मुझे उच्छेद करना है। आप जमीन दीजिए।"

वे बोले, "ज़मीन तो हमारे पास नहीं है।"

"तो खरीद कर देदें, उतना न हो तो कुंआ बनवा दें, बैल खरीद दें।"

"अच्छी बात है आप जहाँ कहेंगे, एक पक्का कुंआ बनवा दूंगा।" कृतज्ञ-भाव से उस भाई ने कहा और दानपत्र भर कर विनोबाजी को प्रणाम करके चले गये।

(४) वृद्धा की भेंट

ठंड का मौसम था। नैनीताल जिले के एक गांव में विनोबाजी का पड़ाव था। विनोबाजी के मन्त्री दामोदरदासजी नियमानुसार सुबह तीन बजे उठे और केम्प से बाहर निकले तो क्या देखते हैं कि एक बूढ़ी माता सामने चबूतरे पर बैठी हुई है।

उन्होंने पूछा "माताजी, आप कहां से आये हो।"

बेटा, यहां से छै मील दूर कालाडूंगी गांव से आई हूँ।"

"इतनी दूर से और ऐसी सरदी में इतने सवेरे कैसे आये।"

वो बोली, "आ तो कल रात को ही गई थी लेकिन रात ज़्यादा होगई थी, आप सब सो गये थे इसलिये नहीं जगाया।"

वे बोले "आप सारी रात ऐसी ठंड में बैठी रहीं, अब मैं आपकी क्या सेवा करूं सो बतावें।" बूढ़ी मां बोली "मेरे पास थोड़ी ज़मीन है, उसे मैं संतजी की सेवा में भेंट करने आई हूँ। कागज लाओ सो मैं उस पर अगूंठा करदूं। फिर मुझे वापस जल्दी ही घर पहुंचना है।"

विनोबाजी ने दूसरे दिन प्रार्थना-सभा में कहा कि इस यज्ञ में कितनी ही शबरियों ने बेर भेंट किये हैं, यह अहिंसात्मक क्रान्ति का साक्षात्कार है। बूढ़ी मां रात भर ठंड में बैठी रहीं, किसी से कुछ लेने के लिये नहीं परन्तु अपनी प्यारी सम्पत्ति का दान देने के लिये।

(५) शुभ संकल्प और सत्कार्य का प्रभाव

एक गांव में विनोबाजी ठहरे हुए थे। उनका सारा दिन वहां व्यतीत हुआ और अन्य स्थानों की तरह वहाँ शाम को प्रार्थना और उसके बाद प्रवचन भी हुआ। वहां से दिन भर में केवल चार एकड़ भूमि मिली। प्रवचन समाप्त करके विनोबाजी अपने स्थान पर गये और उपनिषद् का अध्ययन करने लगे। मुश्किल से दस मिनट हुए होंगे कि एक भाई आये जो प्रार्थना में शामिल भी नहीं हुए थे और न उन्होंने प्रवचन ही सुना था। वह आठ मील दूरी से आये थे और आकर विनोबाजी के पास बैठ गये। वे बोले ज़मीन देने आया हूँ और अपनी छः एकड़ भूमि दे गये। थोड़ी देर के बाद ही दूसरे भाई आये। वे और भी दूर से चलकर आये थे। उन्होंने ५२ एकड़ भूमि दी।

शुभ संकल्प और सत्कार्य का प्रभाव किस प्रकार अदृश्य और व्यापक रूप में पड़ता है, उक्त घटना उसका एक उदाहरण है।

(६) दान किस लिये ?

देहरादून की बात है। दूर गांव से एक किसान विनोबाजी के पास आया और ज़मीन देने की इच्छा प्रकट की। विनोबाजी के पूछने पर मालूम हुआ कि वह बहुत ही मामूली हैसियत का है और जैसे-तैसे अपनी गुज़र करता है। उसने चार बीघा ज़मीन का दान-पत्र भर कर दिया। विनोबाजी ने पूछा कि भाई इतनी ज़मीन क्यों दे रहे हो ? वह बोला, "आज चारों तरफ़ लोगों को लेने ही लेने की पड़ी है। अदालत में रिश्वत, थाने में रिश्वत, बाजार में ठगी, जहाँ देखो वहीं धोखा देने की बात हो रही है। आज आप ही एक ऐसे मिले हैं जो ग़रीबों को देने की बात कहते हैं और लेने से देना ज़्यादा ज़रूरी बताते हैं।

उसकी बातें सुन कर विनोबाजी ने उस श्रद्धावान किसान के उस अल्प, पर महान दान को स्वीकार कर लिया।

(७) आड़े समय का दान

रामपुर की बात है। एक मामूली-सा आदमी विनोबाजी के पास आया। "आप क्या करते हैं ?" विनोबाजी ने पूछा।

उसने उत्तर दिया—"मैं दुकान करता हूं। मेरे पास थोड़ी सी ज़मीन है उसमें से कुछ हिस्सा आपको देना चाहता हूँ।"

आगे पूछने पर मालूम हुआ कि थोड़े दिन पहले ही उसका मकान जल गया था और अभी उसको अपनी पाँच लड़कियों की शादी भी करनी है। अन्त में वह बोला, "लेकिन मुझसे भी बुरी हालत में बहुत से लोग रहते हैं उनके लिये मैं अपनी ज़मीन में से १९ बीघा देने के लिये आया हूँ।"

हममें से अधिकांश व्यक्ति अपना ही लाभ और अपना ही स्वार्थ देखते हैं, विशेष कर जब स्वयं हमारी आवश्यकताएं हमारे साधनों से अधिक होती हैं तो हमारी निगाह अपने स्वार्थ की सीमित परिधि से बाहर कदापि नहीं जाती, लेकिन ऐसे आड़े समय में किये हुए त्याग और दिये हुए दान की बराबरी कौन कर सकता है !

(८) समस्त भूमि का दान

गाज़ियाबाद की घटना है। एक बहिन विनोबाजी के पैर छूकर बैठ गई और बोली "मेरे पास ग्यारह एकड़ ज़मीन है, वह आप ले लीज़िए।"

विनोबाजी ने पूछा, "तुम्हारे पति क्या करते हैं ?"

"वकील हैं। उनकी कमाई से हमारी गुज़र अच्छी तरह से हो जाती है।"

सारी-की-सारी ज़मीन का दान ! विनोबाजी ने गम्भीर होकर उस बहिन की ओर देखा। बहन बोली "जब वकालत की कमाई से ही हमारा गुज़ार हो जाता है तो अधिक संग्रह करने से क्या लाभ है ? लोभ और परिग्रह (संग्रह) का तो अंत ही नहीं है। शास्त्रों में दान की बड़ी महिमा लिखी है। आप जैसे संतों के दर्शन बड़े पुण्य से होते हैं। अतः यह मेरी तुच्छ भेंट स्वीकार करें।" अन्त में विनोबाजी ने उनका दान-पत्र स्वीकार कर लिया।

सैंकड़ों हज़ारों एकड़ भूमि में से कुछ एकड़ का दान दे देना आसान है लेकिन अपनी समस्त भूमि की ममता छोड़ देना आसान नहीं है। विनोबाजी को अपनी यात्रा में ऐसे एक दो नहीं, सैंकड़ों दान मिले हैं।

(९) श्रम-दान

खतौली में विनोबाजी का पड़ाव वहां के कालेज में था। सायंकालीन प्रार्थना के पहले कालेज के कुछ छात्र और अध्यापक विनोबाजी के पास आए। उन्होंने कहा, "हमारे पास भूमि नहीं है; पर आप जो महान कार्य कर रहे हैं, उसमें हम आपकी सेवा करना चाहते हैं। बताइये कैसे करें ?

विनोबाजी ने कहा 'आपके पास ज़मीन नहीं है तो मेरे विचारों को फैलाने में मदद कीजिए।' कह कर विनोबाजी थोड़े रुके जैसे उन्हें कोई नई बात सूझ गई हो, फिर बोले आप श्रमदान भी कर सकते हैं। आप लोग अपने शरीर से महनत करके ज़मीन ठीक करने, जोतने बोने में, गांव की सफ़ाई करने में तथा अनेक रचनात्मक कार्यों में मदद कर सकते हैं। इस पर छात्रों और अध्यापकों ने तीन घंटे श्रमदान करने का वचन दिया।

(१०) गांव का गांव समर्पित

हमीरपुर ज़िले के मंगरोठ नामक गांव में एक ऐसी घटना हुई, जिससे आगे अन्य घटनाएं फीकी पड़ जाती हैं। सन् ४२ के आन्दोलन में भी इस गांव ने बड़ा हिस्सा लिया था। इस गांव में १०४ कुटुम्बों की बस्ती है जिसमें ५० कुटुम्ब तो जमीन वाले थे और ५४ कुटुम्ब बिना ज़मीन वाले। सब लोग विनोबाजी का भाषण सुनने इक्ट्ठे हुए। विनोबाजी ने छोटा सा भाषण दिया और 'सबै भूमि गोपाल की' यह संदेश लोगों को सुनाया। इस भाषण का ऐसा प्रभाव पड़ा कि जो ५० कुटुम्ब ज़मीन वाले थे, उन्होंने अपनी सब ज़मीन विनोबाजी को समर्पण कर दी और प्रार्थना की कि सब जमीन सब में बांट दें। इस प्रकार इस गांव के १०४ कुटुम्ब सब ज़मीन वाले हो गये। सामुहिक दान का यह प्रथम और अपूर्व दृष्टान्त था। इस तरह इस गांव के सब लोग एक कुटुम्बवत् हो गये।

(११) नौ वर्ष के बालक का अपूर्व भूमिदान

पंडित जवाहरलाल नेहरू के ६३ वें जन्मदिन के अवसर पर एक नौ वर्ष के बालक ने अपने पिता से कहा "आज के शुभ दिन पर कोई बड़े पुण्य का काम अपने को करना चाहिये।"

पिता भी धर्मात्मा था, बोला, "बेटा तुम कहो जैसा करें।"

बालक बोला "अपने गांव में विनोबा जैसे संत आये हैं, चलिये, उनको भूमिदान देवें" पिता भी इस विचार से सहमत हो गये और नेहरूजी की ६३ वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष में ६३ एकड़ भूमि विनोबाजी को समर्पण करदी।

(१२) दो बीघा ज़मीन, दो लाख के बराबर

बरहज जाते हुए विनोबाजी अपने सहयात्री श्री हरीशभाई के गांव पांच मिनट के लिये रुके। हरीश की माताजी गांव की अन्य स्त्रियों के साथ मंगल गीत गाती हुई आगे आई और विनोबाजी को प्रणाम किया। विनोबाजी के दर्शन कर वे इतनी आनन्दित हुई कि कुछ बोलना चाहती

थीं पर बोल नहीं पा रही थीं। अन्त में वे बोली "हमारे पास बारह बीघा कुल ज़मीन है। घर में पांच आदमी हैं। आप छठे हुए, आप के हिस्से की दो बीघा ज़मीन स्वीकार करें।"

शाम को विनोबाजी ने प्रार्थना-प्रवचन में कहा "माताजी का दो बीघे का दान दो लाख के समान है। माताजी का मेरे लिये यह आशीर्वाद है।"

(१३) तपस्वी भारत की आत्मा ग़रीबों में झलक रही है

विनोबाजी के सामान की गाड़ी के साथ एक हरिजन भाई रास्ता दिखाने के लिए साथ में चल रहे थे। उनके हृदय में भी दान देने की भावना जागृत हुई। वह विनोबाजी से बोला "हम घर में बारह आदमी हैं, पांच बीघा ज़मीन है। जमीन की आमदनी के अलावा मेहनत मज़दूरी करके पेट भर लेते हैं। अब उस में से एक बीघा ज़मीन भेंट करता हूँ" विनोबाजी ने बहुत समझाया पर वह नहीं माना। अन्त में उसके संतोष के लिये कुछ डेसीमल जमीन विनोबाजी ने स्वीकार की।

ये त्याग के प्रत्यक्ष उदाहरण प्राचीन तपस्वी भारत की याद दिलाते हैं

(१४) भूदान यज्ञ की अद्भुत प्रेरणा

११ सितंबर सन् १९५२ को काशी विद्यापीठ में श्री विनोबाजी ने यह संकल्प किया कि जब तक भूमिदान-यज्ञ का प्रश्न हल नहीं होगा मैं अपने आश्रम में नहीं जाऊंगा। विलक्षण संयोग की बात है कि इसी तारीख को हिमाचल प्रदेश के रोहड़ू ग्राम में महन्त ऊधोदासजी के हृदय में अपने आप ही ऐसी प्रेरणा हुई कि मुझे भी अपने जीवन में कोई शुभ कार्य, दान धर्म का करना चाहिए और इस ज़माने में भूदान ही ऐसा श्रेष्ठ कार्य है जिससे ग़रीब भाई महनत करके जनम भर के लिये रोटी कमा सकते हैं, इस विचार से उन्होंने अपनी एक लाख की सारी सम्पत्ति और ५००० बीघा ज़मीन विनोबाजी को अर्पित कर देने की घोषणा की। इससे पहले महन्तजी ने विनोबाजी के दर्शन भी नहीं किए थे। केवल उनके भाषण लेख आदि पढे थे।

पूज्य विनोबाजी द्वारा निर्धारित उपासना के कुछ पद

सायंकाल की उपासना

यं ब्रह्मावरुणेन्द्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैर्
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः

अर्जुन ने कहा—

१ स्थितप्रज्ञ समाधिस्थ कहते कृष्ण हैं किसे
स्थितधी बोलता कैसे, बैठता और डोलता ?

श्री भगवान् ने कहा—

२ मनोगत सभी काम तज दे जब पार्थ जो,
आप में आप हो तुष्ट, सो स्थितप्रज्ञ है तभी।
३ दुःख में जो अनुद्विग्न, सुख में नित्य निःस्पृह,
वीत-राग-भय-क्रोध, मुनि है स्थितधी वही।
४ जो शुभाशुभ को पाके, न तो तुष्ट न रुष्ट है,
सर्वत्र अनभिस्नेही, प्रज्ञा है उसकी स्थिरा।
५ कूर्म ज्यों निज अंगों को, इन्द्रियों को समेट ले—
सर्वशः विषयों से जो, प्रज्ञा है उसकी स्थिरा।
६ भोग तो छूट जाते हैं, निराहारी मनुष्य के,
रस किन्तु नहीं जाता, जाता है आत्म लाभ से।
७ यत्नयुक्त सुधी को भी, इन्द्रियाँ ये प्रमत्त जो,
मन को हर लेती हैं, अपने बल से हठात्।
८ इन्हें संयम से रोके, मुझी में रत, युक्त हो,
इन्द्रियां जिसने जीतीं, प्रज्ञा है उसकी स्थिरा।
९ भोग-चिन्तन होने से, होता उत्पन्न संग है,
संग से काम होता है, काम से क्रोध भारत।

१० क्रोध से मोह होता है, मोह से स्मृतिविभ्रम,
उससे बुद्धि का नाश, बुद्धिनाश विनाश है।
११ राग-द्वेष-परित्यागी करे इन्द्रिय-कार्य जो,
स्वाधीन वृत्ति से पार्थ, पाता आत्म-प्रसाद सो।
१२ प्रसाद-युत होने से छूटते सब दुःख हैं,
होती प्रसन्नचेता की बुद्धि सुस्थिर शीघ्र ही।
१३ मन जो दौड़ता पीछे इन्द्रियों के विहार में,
खींचता जनकी प्रज्ञा, जल में नाव वायु ज्यों।
१४ अतएव महाबाहो, इन्द्रियों को समेट ले—
सर्वथा विषयों से जो, प्रज्ञा है उसकी स्थिरा।
१५ नदी-नदों से भरता हुआ भी, समुद्र है ज्यों, स्थिर सुप्रतिष्ठ,
त्यों काम सारे जिसमें समावें, पाता वही शाँति, न काम-कामी।
१६ सर्व-काम परित्यागी विचरे नर निःस्पृह,
अहंता-ममता-मुक्त, पाता परम शान्ति सो।
१७ ब्राह्मीस्थिति यही पार्थ, इसे पाके न मोह है,
टिकती अन्त में भी है, ब्रह्मनिर्वाण-दायिनी।

२

ओ३म् तत्सत् श्री नारायण तू, पुरुषोत्तम गुरु तू।
सिद्ध-बुद्ध तू स्कन्द विनायक सविता पावक तू॥
ब्रह्म मज्द तू, यह्व शक्ति तू, ईशु-पिता प्रभु तू।
रुद्र विष्णु तू, राम कृष्ण तू, रहीम ताओ तू॥
वासुदेव गो-विश्वरूप तू, चिदानन्द हरि तू।
अद्वितीय तू, अकाल निर्भय आत्म-लिंगशिव तू॥

३

राजा राम राम राम, सीता राम राम राम॥
राजा राम राम राम, सीता राम राम राम॥ धुन

प्रातःकाल की उपासना के कुछ पद

१

ओ३म् पूर्ण है वह पूर्ण है यह,
पूर्ण से निष्पन्न होता पूर्ण है।
पूर्ण में से पूर्ण को यदि लें निकाल,
शेष तब भी पूर्ण रहता सदा।
ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

– हरिः ओ३म् ईश का आवास यह सारा जगत्,
जीवन यहां जो कुछ उसीसे व्याप्त है।
अतएव करके त्याग उसके नाम से,
तू भोगता जा वह तुझे जो प्राप्त है।
धन की, किसी के भी न रख तू वासना॥

– मुख आवरित है सत्य का उस पात्र से,
जो हेममय है, विश्व-पोषक हे प्रभो।
मुझ सत्यधर्मा के लिए वह आवरण,
तू दूर कर, जिससे कि तेरे दर्शन कर सकूं।

– तू विश्वपोषक है तथा तू ही निरीक्षक एक है,
तूं कर रहा नियमन तथा तू ही प्रवर्तन कर रहा॥
पालन सभी का हो रहा तुझसे प्रजा की भाँति है।
निज पोषणादिक रश्मियां तू खोलकर मुझको दिखा,
फिर से दिखा एकत्र त्यों ही जोड़ करके तू उन्हें।
अब देखता हूँ रूप तेरा तेजयुत कल्याणतम,
वह जो परात्पर पुरुष है, मैं हूँ वही।

– यह प्राण तुझ चेतन अमृतमय तत्व में,
हो जाय लीन, शरीर भस्मीभूत हो।

– ले नाम ईश्वर का अरे संकल्पमय
तू स्मरण कर, उसका किया तू स्मरण कर।

संन्यस्त करके सर्वथा संकल्प निज
हे जीव मेरे, स्मरण करता रह उसे।
— हे मार्गदर्शक दीप्तिमन्त प्रभो, तुझे
हैं ज्ञात सारे तत्व जो जग में ग्रथित।
ले जा परम आनन्दमय की ओर तू
ऋजु मार्ग से हमको कुटिल अघ से बचा।
फिर फिर विनय नत नम्र वचनों से तुझे ॥*
नारायण नारायण जय गोविन्द हरे।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे ॥ धुन

२

आत्मा की उन्नति के लिए ११ व्रत

अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य असंग्रह।
शरीरश्रम अस्वाद सर्वत्र भयवर्जन ॥
सर्व धर्म समानत्व स्वदेशी स्पर्शभावना।
विनम्र व्रत निष्ठा से, एकादश सेव्य हैं ॥

सब प्राणीमात्र (मनुष्य, पशु, पक्षी, वृक्ष आदिक) पर प्रेम करना, सच्चाई का पालन करना, चोरी न करना, सब इन्द्रियों को अपने काबू में रखना, ज़रूरत से ज़्यादा किसी भी वस्तु का संग्रह न करना, नित्य उत्पादक शरीरश्रम करना, स्वाद के लिए भोजन में मिर्च मसालों का उपयोग न करना, किसी भी प्रकार के डर को अपने पास फटकने न देना, सब धर्मों को समान मानना और आदर करना, अपने नज़दीक के लोग अपनी सेवा के अधिक अधिकारी हैं, ऐसा मानकर उनको मज़दूरी मिले इस खयाल से उनके द्वारा निर्मित वस्तुओं का ही उपयोग करना (चाहे वे मंहगी ही क्यों न हो) छूआछूत न मानना ये ग्यारह व्रत हैं जिनकी साधना निरहंकार होकर हरएक साधक को करनी चाहिये।

*इसके बाद 'ओम् पूर्ण है वह पूर्ण है यह,' तथा 'ओम् तत्सत श्री नारायण तू' यह पद बोलना चाहिये। इसके बाद नारायण की धुन गावें।

भूमिदान-यज्ञ

आज इक फ़कीर की जो भूमि की पुकार है,
पुकार है यह दीन की, यह देश की पुकार है,
पुकार दीन–हीन की न अब भुलायेंगे।
भूमि–दान यज्ञ हम सफल बनायेंगे॥
बापू की थी जो कल्पना वह सत्य की, स्वराज्य की,
यह सन्त जोड़ने चला, लड़ी यह राम-राज्य की,
सन्त के क़दम पै हम क़दम बढ़ायेंगे। भूमिदान····
आज है चतुर दिशा में गूंज साम्यवाद की,
क़त्ल से, क़ानून से, खूनी क्रान्ति-नाद की,
किन्तु हम तो करुणा का ही पन्थ बनायेंगे। भूमिदान····
प्रेम से हो भूमिदान, प्रेम से ही क्रान्ति हो,
विश्व के कलह मिटें, फिर सदा की शान्ति हो,
हम मनुज को शान्ति की सुधा पिलायेंगे। भूमिदान····
भूमिदान मांगना न भीख का प्रकार है,
जिसके भूमि है नहीं उसे भी स्वाधिकार है,
भूमि देके अपना फ़र्ज़ हम निभायेंगे। भूमिदान····
सबके पास हो धरा, सभी के पास धाम हो,
सब को अन्न वस्त्र हो, सभी के पास काम हो,
हम सदा सभी का ही उदय मनायेंगे। भूमिदान····
भूमिदान देंगे, दूसरों से भी दिलायेंगे,
खुद जियेंगे और दूसरों को भी जिलायेंगे।
भूमिदान दे, धरा पै स्वर्ग लायेंगे। भूमिदान····
द्वार द्वार नग्न पद, जो दीन हेतु फिर रहा,
यह राम है या कृष्ण है, या विश्वबन्धु आ रहा,
इस 'विनोबा सन्त' पै सब कुछ लुटायेंगे। भूमिदान····

—रघुराजसिंह

ईश्वर का यह राज है

नहीं यह तेरा नहीं यह मेरा, ईश्वर का यह राज है ॥
ईश्वर का जल, ईश्वर का थल, ईश्वर का ही अनाज है ।।नहीं यह।।
बिन श्रम खावे, चोर कहावे, गीता की यह आवाज़ है ।।नहीं यह।।
जोते जिस की ज़मीन होवे, न्याय का यह फ़रमान है ।।नहीं यह।।
रोज़ी, रोटी, कपड़ा, शिक्षण, सब का सम अधिकार है ।।नहीं यह।।
नहीं यह तेरा, नहीं यह मेरा, ईश्वर का यह राज है ।।नहीं यह।।

कैसा है यह सुखमय सपना (बालकों का गीत)

कैसा है यह सुखमय सपना, मानो सारा जग है अपना ॥
हम भारत के बालक प्यारे, दुनिया की आंखों के तारे ।। कैसा है ।।
रंग और जाति का भेद न जानें, नीच और ऊंच का भेद न माने ।।
मानवता के प्यार की माला, सब को जपाकर स्वयं भी जपना ।।
सत्य, अहिंसा अपना कर्म हो, प्राणीमात्र की सेवा धर्म हो ।।
सब के सुख में सुख मानें हम, सब के दुख में सीखें तड़पना ।। कैसा है ।।
प्रेम से जग भरपूर करें हम, द्वेष की दुविधा दूर करें हम ।।
भाई भाई बनके रहें हम, माने बुरा आपस का झगड़ा ।। कैसा है ।।

दान करो तो होगा बेड़ा पार

जो खेड़े वो खाए भैया, संत विनोबा ने है बतैया,
जो जोतेगा वह जीतेगा, और की होगी हार ।।दान करो।।
यदि भूमि रहित किसान रहेगा, धरती पर तूफ़ान रहेगा,
दीप अमन का बुझ जायेगा, फैलेगा अन्धकार ।।दान करो।।
लाठी जिसकी भैंस उसी की, ऐसी कहावत अब न चलेगी,
दिन चोरी जोरी के गुजरे, कहता न्याय पुकार ।।दान करो।।
है सब परमेश्वर की बस्ती, मेहनत जिसकी उसकी हस्ती,
श्रम उपासक बनता जाता, है अब कुल संसार ।।दान करो।।
भूमि का बंटवारा होगा, मुशकिल आसां सारा होगा,
देश में फिर कोई न रहेगा, भूखा और बेकार ।।दान करो।।

सन्त विनोबाजी की दिव्य वाणी

ईश्वर और हम दोनों एक ही चैतन्य के रूप हैं। हम अंश मात्र हैं, ईश्वर उस चैतन्य का पूर्ण रूप है। तो भी चैतन्य तो एक ही है। अतः जो उसकी शक्ति है, वही हमारी है। इसलिए ईश्वर से शक्ति मांगने व प्राप्त करने में पराधीनता नहीं है।

* * *

परीक्षा पास होने के लिए ईश्वर से सहायता मांगना कौनसी आस्तिकता है? यह तो कमअक़ली है, पुरुषार्थ-हीनता है। खेत में फ़सल नहीं आई–करो ईश्वर से प्रार्थना, माँगो ईश्वर से मदद। मानो इन सब प्रश्नों को हल करने की शक्ति हमें ईश्वर ने दी ही नहीं। ये ईश्वर की सहायता के विषय नहीं हैं। सकाम भावना से बाह्य कार्यों में ईश्वर की मदद माँगना हमें शोभा नहीं देता।

* * *

चाकू से पैंसिल छीलना चाकू इस्तेमाल करना है। अंगुली पर चला कर हाथ ही छील लेना चाकू के आधीन हो जाना है। इन्द्रियों का उपयोग भगवान की सेवा में करना चाकू से पेंसिल छीलने जैसा है, परन्तु उनके वश में होकर बुद्धिनाश कर लेना चाकू से अंगुली काट लेना है।

* * *

माँ अपने बच्चे को प्रेम से सजाती है, गहने-कपड़े पहनाती है, अतः वह उसको सुन्दर दिखाई देता है। इसी तरह आत्मभावना से दिल को सजाओ, चमकाओ, मण्डित करो, आच्छादित करो और फिर देखो। आत्मीयता के कारण वह सुन्दर और प्रिय दिखाई देगा।

* * *

"जो आज तक नहीं हुआ, वह आगे भी नहीं होने का" यह बूढ़ा तर्क है। मालूम नहीं, इन बूढ़ों को यह क्यों नहीं समझ पड़ता कि जो आज तक नहीं हुई, ऐसी बहुतसी बातें आगे होने वाली हैं।

* * *

त्याग से पाप का मूल धन चूकता है, दान से उसका ब्याज। त्याग का स्वभाव दयालु है, दान का ममतामय। धर्म दोनों ही पूर्ण हैं। त्याग का निवास धर्म के शिखर पर है, दान उसकी तलहटी में।

* * *

त्याग की प्रतीति त्याग को मार डालती है। त्याग करके हम किसी पर ग्रहसान नहीं करते।

* * *

गीता ज़बानी जमाखर्च का शास्त्र नहीं है, किन्तु ग्राचरण का शास्त्र है। गीता के प्रचार का ग्रर्थ है, निष्काम-कर्म का प्रचार। गीता के प्रचार का ग्रर्थ है, त्याग का प्रचार। गीता के प्रचार के मानी है, शक्ति का प्रचार यह प्रचार पहले ग्रपनी ग्रात्मा में होना चाहिए। जिस दिन उससे ग्रात्मा परिपूर्ण होकर बहने लगेगी उस दिन वह दुनिया में फैले बिना न रहेगी।

* * *

बम या युद्ध टालने का वास्तविक इलाज तो यही है कि हम ग्रपनी ग्रावश्यकता की चीज़ें ग्रपने ग्रासपास तैयार कराएं ग्रौर उनके उचित दाम लें।

* * *

शरीरश्रम को दुःख क्यों मान लिया है, यह मेरी समझ में नहीं ग्राता ग्रानन्द ग्रौर सुख का जो साधन है उसी को कष्ट माना जाता है।

* * *

एक ग्रादमी ने मुझसे कहा—गांधीजी ने पीसना, कातना, जूते बनाना वगैरा काम खुद करके परिश्रम की प्रतिष्ठा बढ़ा दी। मैंने कहा—"मैं ऐसा नहीं मानता। परिश्रम की प्रतिष्ठा किसी महात्मा ने नहीं बढ़ाई। परिश्रम की निज की प्रतिष्ठा इतनी है कि उसने महात्मा को प्रतिष्ठा दी।" ग्राज भारत में गोपाल कृष्ण (भगवान कृष्ण) की जो इतनी प्रतिष्ठा है वह उनके गोपालन ने उन्हें दी है। उद्योग हमारा गुरुदेव है।

* * *

समाज का महत्व सबसे अधिक है। उससे कम 'घर' का है और घर से कम महत्व अपना 'स्वयं' का है। वेद, गीता, उपनिषद, कुरान व बाईबल पढ़ने का महत्व तभी है जब इनके द्वारा हम में मानवता के गुणों का विकास हो।

* * *

दीनों की सेवा अगर उनकी दीनता क़ायम रखकर की जाती है तो यह ऊँचे दर्जे की सेवा नहीं कही जा सकती। जिस सेवा से उनकी दीनता मिटती है, वही सेवा सच्ची है।

* * *

अगर हम मन्दिरों में अपने हरिजन भाइयों को प्रवेश देते हैं तो उन पर कोई उपकार नहीं करते, बल्कि भगवान के भक्तों को भगवान से दूर रखने के पाप से छुटकारा पा जाते हैं।

* * *

निन्दा करने से किसी को भी फ़ायदा नहीं होता। जो निन्दा करता है, उसका मुँह खराब होता है और जिसकी निन्दा की जाती है, उसकी कोई उन्नति नहीं होती।

* * *

शरीर की शक्ति क़ायम रखने के लिए हमें रोज़ खाना पड़ता है। आत्मा की शक्ति बढ़ाने और उसे क़ायम रखने के लिये तो चौबीस घंटे प्रार्थना की ज़रूरत है। जो वैसी प्रार्थना करते हैं, वे महान हैं। उतनी योग्यता जिनमें नहीं है वे दिनका कुछ समय तो प्रार्थना के लिये निकालें।

* * *

वादविवाद में पड़ना हमारा काम नहीं। हम तो सेवा करते-करते ही ख़तम हो जायं। दूसरों के दोष बताने का मोह हमें छोड़ देना चाहिये मां अपने बच्चे के दोष थोड़े ही बताती है, वह तो उसके ऊपर प्रेम की ही वर्षा करती है। उसके बाद फिर कहीं दोष बताती है। असर ऐसी ही प्रेममयी सेवा का होता है।

* * *

लोगों की सेवा ही भगवान की भक्ति है

हमारा हिन्दुस्तान भक्ति मार्ग से ही आज तक बचा हुआ है। लेकिन भक्ति का अर्थ क्या है, यह हमें अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए हिन्दुस्तान में लगभग ४० करोड़ भाई बहन हैं। भगवान के इतने रूप हमारे सामने खड़े हैं, यह जानकर उनकी सेवा में हमें लग जाना चाहिए। अपने स्वार्थ को हम न सोचें, यही सब से उत्तम भक्ति मार्ग है। भक्त का लक्षण ही यह है कि वह अपने आपका शून्य समझता है और अपने आसपास जो भी है, उस को पूर्ण समझते हुए उसे परमेश्वर का रूप समझता है। जो भी हमारे आसपास हैं, वे सब भगवान की मूर्तियाँ अर्थात् उसी के रूप हैं और हम उनके सेवक हैं। यही सेवा भाव है और यही भक्ति है।

यह पृथ्वी ही स्वर्ग बन जायगी

अगर कोई आसपास के लोगों की सेवा करके यह समझे कि मैंने बड़ा भारी काम किया है, इस तरह का अहंकार यदि उसके मन में आजाता है तो समझना चाहिए कि यह सच्ची भक्ति नहीं है। जो अपने को शून्य बनाकर दीन दुखियों की सेवा में लगा रहेगा उस का इस लोक में भी कल्याण है और परलोक में भी कल्याण है। हमारे देश में जितने नर-नारी हैं, यदि उनमें सच्ची भक्ति भावना जागृत हो जाय तो यहाँ कोई दुखी नहीं रहेगा और यह लोक ही स्वर्ग बन जायगा। मरने के बाद स्वर्ग नरक होता है, लेकिन उसका नमूना इस जीवन में भी देखने को मिल सकता है।

अपने शहर या गाँव में हम एक दूसरे के साथ झगड़ा करें, धोखा दें, तकलीफ दें, परस्पर एक दूसरे के सुख दुख में काम न आवें, चारों ओर गंदगी रखें तो यह समझना चाहिये कि हम नरक में रह रहे हैं। ऐसे लोगों को परलोक में क्या स्थान मिलेगा?

गोकुल में कृष्ण भगवान रहते थे, तो क्या करते थे? गवालों को इकट्ठा करके सब के साथ खाते पीते थे। उन्होंने सब को प्रेम सिखाया

और गोकुल में ही बैकुंठ आ गया। उन्होंने द्वारिका नगरी बसाई लेकिन द्वारिका का राज्य अपने बड़े भाई बलराम को दे दिया, खुद राजा नहीं बने। अर्जुन उनके भक्त थे, लेकिन उन्होंने अर्जुन की भी भक्ति की और उनके सारथी बने। उन्होंने अपने जीवन से हमको भक्ति मार्ग सिखाया कि इस तरह से भक्ति करनी चाहिए।

जीवन में प्रेम और त्याग

प्रेम और त्याग ये दो बातें जहां अपने जीवन में आगईं, वहीं धर्म आगया और यही सच्चा भक्ति मार्ग है। हमारे जीवन के प्रत्येक काम में करुणा (दया) का भाव ओतप्रोत होना चाहिए। फिर आपसे किसी का बुरा होगा ही नहीं। आप हमेशा सबकी भलाई का विचार ही अपने मन में रखिये। अपनी हानि करके भी दूसरों की भलाई कीजिए तो आपके लिए यहां भी स्वर्ग है और परलोक में भी स्वर्ग है।

विनोबाजी द्वारा स्थापित आश्रम

१, सेवाग्राम आश्रम, पोस्ट सेवाग्राम (वर्धा)।

२. समन्वय आश्रम बोधगया (गया)—इसमें सब धर्मों की संस्कृति और अच्छाइयों का अध्ययन करने का आदर्श रखा गया है।

३. ब्रह्मविद्या मंदिर, परमधाम पोस्ट पवनार (वर्धा)—खासकर बहनों के लिये ब्रह्मविद्या का ज्ञान हाँसिल करने का आश्रम है—पुरुष भी रह सकते हैं पर संचालन बहनों के हाथ में है।

४. प्रस्थान आश्रम, पठानकोट (पंजाब)

५. विसर्जन आश्रम, नवलखा, इंदौर

६. मैत्री आश्रम उज्जलपुर पोस्ट लीलाबारी (आसाम)

७. विश्वनीड़म गांधीनगर बंगलोर नं० १७—संसार के सब धर्मों के लोगों के लिए साधना, मनन और चिंतन का स्थान।

८. श्रम भारती पोस्ट खादीग्राम वाया जमुई (मुंगेर) (बिहार)

९. साधना केन्द्र राजघाट काशी— कार्यकर्ताओं के लिए आश्रम।

अच्छे साहित्य से बढ़कर कोई मिठाई नहीं

साहित्य से मुझे हमेशा बहुत उत्साह होता है। साहित्य-देवता के लिए मेरे मन में बड़ी श्रद्धा है। एक पुरानी बात याद आ रही है। जब मैं कोंकण के देहात में था, तब पिताजी कुछ काम के लिए बड़ौदा रहते थे। दिवाली के दिनों में अवसर घर पर आया करते थे। एक बार माँ ने कहा : आज तेरे पिताजी आने वाले हैं, देख, तेरे लिए मेवा-मिठाई लायेंगे। पिताजी आये। फ़ौरन मैं उनके पास पहुँचा और उन्होंने अपना मेवा मेरे हाथ में थमा दिया। मेवे को हम कुछ गोल-गोल लड्डू ही समझते थे। लेकिन यह मेवे का पैकेट गोल न होकर चपटा-सा था। मुझे लगा कि कोई खास तरह की मिठाई होगी। खोलकर देखा, तो दो किताबें थीं। उन्हें लेकर माँ के पास पहुंचा और उसके सामने पुस्तकें रख दी। माँ बोलीं "तेरे पिताजी ने तुझे आज जो मिठाई दी है, उससे बढ़कर कोई मिठाई हो ही नहीं सकती।" वे किताबें रामायण और भागवत की कहानियों की थीं, यह मुझे याद है। आज तक वे किताबें मैंने कई बार पढ़ीं। माँ का यह वाक्य मैं कभी नहीं भूला कि "इससे बढकर कोई मिठाई हो ही नहीं सकती।" इस वाक्य ने मुझे इतना पकड़ रखा है कि आज भी कोई मिठाई मुझे इतनी मीठी मालूम नहीं होती, जितनी कोई अच्छे विचार की पुस्तक।

कलियुग में दान और नाम की महिमा

कुछ लोग कहते हैं कि इस कलियुग में आपको कौन दान देगा? लेकिन द्वापर और त्रेतायुग में भी रावण और कंस हुए और इस कलियुग में भी गांधीजी, रामकृष्ण परमहंस जैसे महापुरुष हो गये। इसलिए युग की बात करना ग़लत है। हर युग में सद्भावना होती है। युग बनाने वाले तो मनुष्य ही होते हैं। शास्त्रों ने कहा है **"कलौ दानं च नाम च"** कलियुग में दान दो और परमेश्वर का नाम लो तो परमेश्वर की प्राप्ति हो जाती है। यह कितना आसान है। पुराने युगों में भारी तपस्याएँ करनी पड़ती थीं। लेकिन इस युग में तो दान और नाम स्मरण ये ही दो बातें करनी होती हैं। इसी वचन पर हमने लोगों से भूमि दान मांगना शुरू किया और हमें लाखों एकड़ ज़मीन मिली।

चोर की सच्ची व्याख्या

उपनिषदों में एक राजा कहता है कि "मेरे राज्य में कोई चोर न हो" साथ ही यह भी कहता है कि 'मेरे राज्य में कोई कंजूस न हो।' क्योंकि जहां कंजूस होते हैं वहां चोरों का होना लाज़मी है। कंजूस चोरों को पैदा करता है। कंजूस को चोरों का बाप कहना चाहिए। चोर उसके औरस पुत्र हैं। हम ओरस पुत्रों को जेल भेजते हैं और पिता को खुला छोड़ देते हैं। आज दुनिया परिग्रह को (जिसने आवश्यकता से अधिक धन एकत्र कर रखा है) चोरी नहीं मानती। आज तो परिग्रह का राज्य चल रहा है। जिस किसी ने बहुत संग्रह करके दूसरों की सुख सुविधा को छीन लिया है जिससे कि लोगों में चोरी की प्रेरणा बढ़ रही है उसको आज का समाज चोर नहीं मानता परन्तु यह ग़लत धारणा है। इसे मिटाना होगा।

* * *

धर्म अनेक हैं लेकिन सब धर्मों का मूलतत्व एक ही है और उसीसे मुक्ति मिल सकती है अर्थात् असत्य में से सत्य में जाना, विकार में से निर्विकार की तरफ जाना।

* * *

प्राचीन काल में विद्यार्थी प्रातःकाल में अपने गुरू के पास विद्याध्ययन करते थे। वे बड़े तड़के उठते और चिंतन मनन करते। सुबह जागने से बुद्धि जागृत रहती है, स्मरण शक्ति बढ़ती है।

* * *

सत्साहित्य और सद् ग्रन्थ इस लोक के चिन्तामणि हैं। उनके अध्ययन से सब चिन्ताएं मिट जाती हैं। मन में सद् भाव जागृत होकर परम शान्ति प्राप्त होती है। जितना ही हम अध्ययन करते हैं उतना ही हमको अपने अज्ञान का आभास होता जाता है। स्वाध्याय भी एक प्रकार का बड़ा तप है।

धर्म और अर्थ का समान सेवन

धर्म और अर्थ का सेवन सब को एक साथ मिलकर समान भाव से करना चाहिए। यह नहीं हो सकता कि चंद लोगों को धर्म की तालीम मिले और चंद लोगों को न मिले। सबको धर्म की तालीम मिलनी ही चाहिए। धर्म रत्न की प्राप्ति हर एक को होनी ही चाहिए। धर्म सेवन अर्थात् गुण विकास का मौक़ा हर एक को मिलना चाहिए। अर्थ का समान भाव से सेवन करने का मतलब है कि हर एक की जीवन की मुख्य मुख्य और अनिवार्य आवश्यकताएं समान रूप से पूरी होनी चाहिए। इसके बाद यह तालीम हो कि अर्थ तुच्छ वस्तु है। मुख्य वस्तु तो है 'हर एक को आत्मा का दर्शन हो' 'मोक्ष प्राप्त हो' इसके लिए कोशिश करना चाहिए।

विज्ञान और आत्मज्ञान

विज्ञान और आत्म-ज्ञान इन दोनों का समन्वय होने से ही हम सुखी हो सकते हैं। विज्ञान हमारे लिए सब तरह की सहूलियतें पैदा करता है लेकिन आत्मज्ञान के अंकुश के बिना विज्ञान का उपयोग भी ग़लत हो सकता है। इसीलिए हम इस बात पर ज़ोर देते हैं कि विज्ञान के साथ साथ अहिंसा आनी चाहिए। अहिंसा आत्मा का गुण है। विज्ञान और अहिंसा के योग से हम इस धरती पर स्वर्ग ला सकते हैं। परन्तु विज्ञान के साथ हिंसा को चलाओगे तो यही विज्ञान मानव जाति के नाश का तथा मानव सभ्यता के नाश का कारण बन जायगा।

'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते' ज्ञान के समान पवित्र वस्तु कोई नहीं है। उसके सामने कोई अमङ्गल विचार टिक नहीं सकता अगर मनुष्य के हृदय में ज्ञान पहुंच जाय तो उसका सारा हृदय पवित्र हो जाता है।

मुद्रक—प्रसन्नसिंह लूणिया, जॉब प्रिंटिङ्ग प्रेस, ब्रह्मपुरी, अजमेर।
संचालक—जीतमल लूणिया—५०००-४०,०००

देय तिथि	देय तिथि
24-9.80	

नोट—पुस्तक निश्चित तिथि पर न लौटाने पर 5 पैसे प्रतिदिन दण्ड देना होगा ।

एक रुपया